दाई हज़रात के लिए नायाब तोहफ़ा

आमाल-ए-दावत

मुरत्तिब

नुसरत अली

नसीर बुक डिपो (रजि.)
हज़रत निज़ामुद्दीन नई दिल्ली-१३

आमाल-ए-दावत

दावत व तब्लीग़ के काम के मुताल्लिक़ उसूल व आदाब
हज़रात अकाबरीन बंगला वाली मस्जिद हज़रत निज़ामुद्दीन देहली की
हिदायात की रौशनी में
बयानात ☆ हिदायात ☆ मल्फ़ूज़ात
दाअ़ई हज़रात के लिए नायाब तोहफ़ा

मुरत्तिब
नुसरत अली
नज़र सानी
मौलाना अबू बक्र नदवी ज़ैदपुरी
इदारा दावत व हिकमत मदनपुरा, मुंबई

नाशिर

हमज़ा बुक डिपो

नाम किताब : आमाल-ए-दावत
मुरत्तिब : नसुरत अली
मुतरज्जिम : अबुल फ़ैज़
कंपोज़िंग : फ़ैज़ कंप्यूटर
नाशिर : नसीर बुक डिपो
हज़रत निज़ामुद्दीन, नई दिल्ली-13

बयानात ☆ हिदायात ☆ मल्फ़ूज़ात

﴾हज़रात अकाबरीन बंगला वाली मस्जिद हज़रत निज़ामुद्दीन, देहली﴿

☆ हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास (कांधलवी) रह॰
☆ हज़रत मौलाना मुहम्मद युसूफ़ (कांधलवी) रह॰
☆ हज़रत मौलाना ईनामुल हसन (हज़रत जी) रह॰
☆ हज़रत मौलाना सईद अहमद ख़ां (मुहाजिर मक्की) रह॰
☆ हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह (बलियावी) रह॰
☆ हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर (पालनपुरी) रह॰
☆ हज़रत मौलाना ज़ुबैर उल हसन (कांधलवी) रह॰
☆ हज़रत मौलाना अहमद लाट साहिब दामत व बरकातहम
☆ हज़रत मौलाना मुहम्मद याक़ूब साहिब दामत व बरकातहम
☆ हज़रत मौलाना मुहम्मद साअ़द साहिब दामत व बरकातहम

बयानात ☆ इर्शादात ☆ हिदायात ☆ इफ़ादात ☆ मल्फ़ूज़ात

☆ हज़रत शेखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह॰
☆ हज़रत मौलाना मुहम्मद सुलैमान (झिंझानवी) रह॰
☆ मौलाना सैयद अबुल हसन अली (नदवी) रह॰
☆ हज़रत मौलाना मुहम्मद मंज़ूर (नोमानी) रह॰
☆ हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहिब दामत व बरकातहम
☆ सईइ अहमद भोपाली दामत व बरकातहम
☆ डाक्टर नादिर अली ख़ां दामत व बरकातहम

इस किताब को दो हिस्सों में तक़सीम किया गया है

पहला हिस्साः आमाले दावतः दावत व तब्लीग़ के काम मुताल्लिक़ हिदायात और उसूल व आदाब

दूसरा हिस्साः आमाले दावतः मस्तूरात के काम के मुताल्लिक़ हिदायात और उसूल व आदाब

फ़हरिस्त मज़ामीन

उन्वात सफ़हा

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर रहीम

अर्ज़े मुरत्तिब

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलिमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यदुल अंबिया वल मुरसलीन, व अला इलाहि व अस्हाबिही अज्माईन, व मन तबाअ़हुत बिएहसानि इला यौमुद्दीन

अल्लाह तआला ने दीन देकर हम पर अहसान किया है

अल्लाह तआला ने अपने बंदों में से जिससे चाहता है अपने दीन के अहया का काम लेता है अल्लाह तआला का जब किसी इंसान पर फ़ज़ल होता है और उसको क़बूल फ़रमाता है तो उसको नेक कामों को की मुहब्बत और दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है। इन नेक कामों की मुहब्बत और दीन की ख़िदमत की मुख़्तलिफ़ सूरतों में एक बड़ा महबूब और आली काम अल्लाह क महबूब तरीन बंदों अंबिया अलिहिस्सलाम और सहाबाकराम की सीरतों और तज़्किरों की तब्लीग़ व इशाअत है इसी सिलसिले में आजिज़ ने 2 माह की तशकील व तरतीब में बंगला वाली मस्जिद निज़ामुद्दीन के क़याम के दौरान बहुत क़रीब से बंगला वाली मस्जिद के अकाबरीन की ज़ियारत का और उनके ईमानी, नूरानी, इल्हामी और रुहानी बयानात और हिदायात के सुनने और समझने का मौक़ा अल्लाह तआला ने इनायत फ़रमाया। बंदा ने अकाबरीन के दामन से चुनकर बहुत ही क़ीमती और अनमोल मोती आपकी ख़िदमत में पेश करने

की सआदत हासिल की है, जिसको मई 2008 में क़लमबंद करने का सिलसिला शुरू किया था। यह रिसाला जो किताब की शक्ल में आपके हाथ में आज इस वक़्त मौजूद है कई बरसों की क़ोशिश और मेहनत का नतीजा है।

बहम्द अल्लाह आजिज़ को अल्लाह ताअला ने बंगला वाली मस्जिद के अकाबरीन के बयानात और हिदायात और दावत के उसूल व आदाब के जमा करने और क़लमबंद करने का शर्फ़ बख़्शा। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने फ़ज़ल से हमारी इस साअई को क़बूल फ़रमाए। अल्लाह तआला मुझे और मुतालिआ करने वालों को अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

और इसको हमारी नजात, मग़फ़िरत, व ज़ख़ीरा आख़िरत और सदक़ा जारिया का सबब बनाये। आख़िर में अल्लाह तआला से दुआ है कि इसको क़बूल फ़रमाए और शर्फ़ मक़बूलियत से नवाज़ दे और इसके नफ़ा को सारे आलम में आम फ़रमाये।

"आमीन"

अल्लाह की रज़ा का तालिब

शेख़ नुसरत अली ज़ैदपुरी

ज़ैदपुर, बाराबंकी, यू.पी.

باسمہ تعالی

अर्ज़े नाशिर

दावत के उन्वान पर लिखी जाने वाली अपनी नौअयित की पहली किताब☆ मुन्फ़रिद अंदाज़

अल्लाह तआला ने तमाम इंसानों की कामयाबी दीन में रखी है और दीन के मुख़्तलिफ़ शोअबे हैं जिसमें ईमानियत, इबादात, मामलात, मुआशरत, अख़्लाक़ियत, इख़्लास व लिल्लाहियत अल्लाह के रास्ते की नक़ल व हरकत, बयानात इर्शादात मल्फ़ूज़ात हिदायात, तब्लीग़ व तदरीरस, तहरीर, तक़रीर, तसनीफ़, तालीफ़ मसाजिद व मदारिस, ख़ानाक़ाह उन तमाम शोअबों पर रौशनी डाली गई है।

हज़रात उल्माएकराम मुफ़तियानकराम, उस्ताज़दाकराम साल लगाए उल्माएकराम साल लगाने वाले उल्माएकराम, मदारिस के तल्बाकराम, हुफ़्फ़ाज़कराम, मसाजिद के आइमा कराम, क़ारी, हाजी, मुसन्निफ़, मोअल्लिफ़, मुहद्दिस, फ़क़ीह, मुफतसिर, मुक़र्रर, मुदर्रिस, मुबल्लिग़, दाअई, मुजाहिद, अदीब, अवाम, ख़्वास, आबिद, ज़ाकिर, इमाम, मोअज़्ज़िन, ख़ादिम, मख़्दूम, ताजिर, मुलाज़िम, महकूम, ज़मींदार, मज़दूर, आमी, पढ़ा लिखा, बेपढ़ा।

प्रोफ़ेसर, इंजीनियर, डाक्टर, वकील, कॉलेज के तुल्बा,

साइंसदां या जो जिस शोअबे से ताल्लुक़ रखता हो दीन की मेहनत करने वाला बन सकता है और दीन की मेहनत को अपनी ज़िंदगी का मक़सद बना सकता है।

इस किताब में हर एक को अपने अपने शोअबे में रहबरी मिलेगी।

ज़ैर नज़र किताब "आमाल दावत" का ऐसा गुलदस्ता है जिस में मुरत्तिब ने पूरी लगन और ख़ुलूस से सअई व जहद की है।

अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से क़बूल फ़रमाए और मक़बूल फ़रमाए। आमीन

और हमारे लिए और पूरी उम्मत के हक़ में नाफ़ेअ बनाए। और इसके नफ़े को सारे आलम में आम फ़रमाए।

आमीन या रब्बुल आलिमीन

बिस्मिल्लहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम।

अम्माबाअद

व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़ जिहादा...... मुस्लीमीन

दावत हक़ की राह में अव्वलीन दौर "इक़ामत ए दावत" का होता है। चुनांचे इस अव्वलीन दौर में जिहाद बिल-क़दम पर पूरा इंहिसार होता है। यानि दावत को क़ायम करने के लिए क़दम ख़ूब चलते हैं। दावत हक़ की राह में दूसरा दौर "हिफ़ाज़त दावत" का होता है। इस दौर में जिहाद बिलक़दम के साथ जिहाद बिलक़लम भी होता है। यानि इस दौर में दावत के उसूल व आदाब इस तहरीक़ के बुज़ुर्गों से तहरीर करके महफ़ूज़ किये जाते हैं। और आम किये जाते हैं। जिसकी वजह से वो "तहरीक दावत" अपनी असल और नहज पर बाक़ी रहती है। तारीख़ गवाह है कि बाअज़ मरतबा दावत हक़ को दूसरा दौर नसीब नहीं हुआ। जिसकी वजह से दौर ए अवला यानि जिहाद बिलक़दम के फ़ौरन बाद इसमें फ़रसूदगी आ गई और बातिल वालों का निशाना बन गई।

हज़रत मौलाना इल्यास साहिब कांधलवी रह० की अनाबत और इख़्लास की बरकम से उनकी तहरीक "दावत व तब्लीग़" को दौर ए अव्वल जिहाद बिलक़दम के बाद दौर ए सानी जिहाद बिलक़दम मय जिहाद बिलक़लम भी नसीब हुआ। चुनांचे इस दावत व तब्लीग़ का दूसरा दौर है इसलिए दावत व तब्लीग़ के

बुज़ुर्गों के बयानकर्दा उसूल व आदाब, बयानात और मल्फ़ूज़ात पर किताबें तबाअ की जा रही हैं। इस वक़्त बातिल, किताबों की इशाअत और तहरीरों के ज़रिया तूफ़ानी बारिश की तरह आलम पर छा जाने की कोशशि कर रहा है तो मंशा ए इलाही यह मालूम होता है कि हक़ वाले भी अबर ए रहमत के घुंघरू बादल की तरह किताबों के ज़रिया आलम को अपनी आग़ोश ए रहमत में ले लें। इसलिए हर मुल्क व ज़ुबान में दावत व तब्लीग़ पर किताबें आम हो रही हैं। इसी अबर ए रहमत के बादलों में हमारे अज़ीज़ व मोहतरम शेख़ नुसरत अली साहिब की किताब "आमाल ए दावत" भी बादल का टुकड़ा है। जिसकी तबाअत और इंशा अल्लाह उम्मत के लिए मुफ़ीद तरीन साबित होगी। तक़रीबन निस्फ़ हिंदुस्तान के मुख़्तलिफ़ शहरों का सफ़र करते हुए बंदार जब ज़ैदपुर पहुंचा तो मोअल्लिफ़ के इत्शाल अम्र में इस किताब का शुदा शुदा मुतालिआ किया। (इस अहक़र को बड़ा नफ़ा हुआ) और ये चंद सतूर तहरीर कर दीं। अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाये और निजात ए आख़िरत बनाए।

हक़ीर फ़क़ीर इलल्लाह

(मौलाना) मुहम्म्द अबू-बक्र नदवी ज़ैदपूरी

4 शाअबान सन् 1434 हिजरी

14 जून सन् 2013 ईसवीं

इल्म : इल्म अमल का इमाम है

☆ इल्म समुन्द्र है एक किताबों का इल्म और एक अल्लाह के ख़ज़ानों को इल्म।

☆ जानना असल नहीं है अमल असल है जो चीज़ अमल में न हो उसका इल्म चला जाता है।

☆ इल्म पहले नफ़ूस में था अब नक़ूश में है।

☆ इल्म का नूर नहीं आएगा अल्फ़ाज़ आ जाएंगे इसके लिए मुजाहिदा शर्त है।

☆ इल्म से मशहूर होंगे। अमल से मक़बूल होंगे।

☆ सहाबाकराम उलूम सीखते थे। पढ़ते नहीं थे।

☆ क़ाबिलियत शर्त नहीं बल्कि क़बूलियत शर्त है।

☆ इल्म अगर अमल में नहीं ढलता तो वो जिहाल्त है।

☆ ऐसे उलूम से पनाह मांगो जो अमल में न ढाले।

☆ जो इल्म पर अमल करेगा। अल्लाह तआा उसको अगला इल्म सिखा देगा।

☆ ईमान की अलामत उलैमा से मुहब्बत और उलैमा की सोहब से इल्म का हासिल करना।

☆ अगर इल्म से इल्म की और उलैमा की अज़मत पैदा नहीं हो रही है तो यह जिहालत है।

☆ अहले इल्म और अहले ज़िक्र और मशायख़ की ज़ियारत बहुत अज़ीम है।

✦जिहालत✦इल्म✦अमल✦ इख़्लास✦दीन की फ़िक्र✦

☆जिहालत के समुंद्र से इल्म का एक क़तरा बेहतर है।

☆ इल्म के समुन्द्र से अमल का एक क़तरा बेहतर है।

☆ इख़्लास के समुंद्र से दीन की फिक्र का एक लम्हा बेहतर है।

(मौलाना मुहम्मद तारिक़ जमील)

बिस्मिल्लहिर्रहमानिर्रहीम, अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिलआलिमीन

सब तारीफ़ें अल्लह तआला के लिए हैं जो पालने वाला सारे जहान का है। सारी आसमानी किताबों का खुलासा क़ुरआन है और क़ुरआन का खुलासा सूराः फ़ातिहा है। और सूराः फ़ातिहा का खुलासा *(इय्याका नाअबुदू व इय्याका नस्ताईन)* है। ऐ अल्लाह हम तेरी बंदगी करते हैं और तुझसे ही सवाल करते हैं अल्लाह की मान लो और अल्लाह से मांग लो तो चारों किताबों की अज्माली तब्लीग़ हो गई।

✦दावत व तब्लीग़ और अकाबरीन की मंशा✦दावत व तब्लीग़ के सिलसिला में इस किताब को लिखने का मक़सद✦बंगला वाली मस्जिद के अकाबरीन की मंशा✦

दावत के काम को बंगला वाली मस्जिद के अकाबरीन हज़रात की मंशा के मुताबिक़ कैसे किया जाए, अकाबरीन

हज़रात की मंशा क्या है और हम दावत के काम को किस तरह कर रहे हैं और बंगला वाली मस्जिद के अकाबरीन हज़रात दावत के काम को किस तरह करने को कह रहे हैं। इस किताब से अकाबरीन हज़रात की तरफ़ से हिदायत और दावत के उसूल व आदाब और रहबरी मिलेगी और दावत का काम करने वालों के लिए बहुत मुफ़ीद और मुआव्विन होगी। इसलिए इस हिदायात को बार बार पढ़ते रहने की ज़रूरत है यह दावत का काम नबियों वाला है। इसलिए नबियों वाली सिफ़ात से चलेगा दावत का हर अमल आलमी है। हमारा दीन आलमी है। हम आलमी नबी की आलमी उम्मत हैं। इसलिए हमारे हर अमल में हमारी निय्यत भी आलमी हो। हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह० हर अमल में आलमी नियत का बहुत ख़्याल रखते थे। और आलमी नियत कराते थे। एक मर्तबा एक मोअज़्ज़िन ने आज़ान दी।

मोअज़्ज़िन से पूछा अज़ान देने से पहले क्या नियत की थी। मोअज़्ज़िन ने जवाब दिया मुहल्ले के लोग अज़ान सुनकर नमाज़ के लिए आ जाएंगे। हज़रत ने फ़रमायाः यह नियत कर ली होती कि ऐ अल्लाह इस अज़ान की दावत को आलम में पहुंचा दे। तो मुहल्ले के नमाज़ी आ ही जाते। हज़रत मौलाना इल्यास रह० की मौजूदगी में हज़रत मौलाना अली मियां रह० ने मजमाअ में बया किया हज़रत मौलाना इल्यास रह० ने फ़रमाया मौलवी साहिब! क्या नियत की थी? मौलाना अली मियां रह० ने अर्ज़ किया हज़रत यह नियत थी कि मजमाअ को दीन की बात सुना रहा हूं।

हज़रत मौलाना इल्यास रह० ने फ़रमाया यह नियत की होनी

कि ए अल्लह इस के असरात आलम में पहुंचा दे। तो मजमाअ दीन की बात तो सुन ही लेता।

हज़रत मौलाना इल्यास रह॰ ने फ़रमाया कि गश्त अपने मुहल्ले में सारे आलम की हिदायत की नियत करके करोगे तो अल्लाह तआला इसके असरात दूसरे मुल्कों में पहुंचाएंगे।

और अगर साहिल पर पहुंच कर दावत दोगे तो उसके असरात साहिल के उस पार अल्लाह तआला पहुंचाऐ। इसलिए हर अमल करते वक़्त नियत सारे आलम की हो।

(दीन नेअमत भी है अमानत भी और दीन ज़िम्मादारी का नाम है) **(हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम)**

✦मोमिन की नियत ✦ इस किताब को किस नियत से पढ़ें✦

मोमिन की नियतः हर अमल में मोमिन की नियत बहुत अहमियत रखती है आमाल की क़बूलियत के लिए बुनियादी शर्त इख़्लास है।

लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने से पहले यह नियत कर लें कि अल्लाह तआला मुझसे राज़ी हो जाए और इस किताब में जो भी दीन की बात मैं पढूंगा।

इंशा अल्लाह इस पर अमल करने की पूरी कोशिश करूंगा। इस नियत से पढ़ेंगे तो अल्लाह तआला आपको अमल की तौफ़ीक़ भी देगा। और दीन की जिस बात पर अमल करना मुश्किल होगा। आपकी सच्ची नियत और पक्के इरादे की

बरकत से अल्लाह तआला इस पर अमल करना आसान फ़रमा देंगे। और जितना वक़्त पढ़ने पर लगेगा वो दीन बनता चला जाएगा। और इबादत में शुमार होगा।

चंद गुज़ारशात

☆ किताब को पढ़ने पहले यह दुआ ज़रूर कर लें कि या अल्लाह इस किताब को मेरी हिदायत का ज़रिया बना दे।

☆ किताब के मुतालिआ के वक़्त जो बात समझ में न आए।

☆ या जिन उमूर में खुद को कोताह महसूस करते हों। उस पर निशान लगा दें। और इसको बार बार पढ़ें। और इसकी इस्लाह के लिए ख़ूब दुआएं भी मांगे और कोशिश भी करें।

☆ इस किताब को दूसरे अहबाब को भी पढ़ने की दावत दें।

☆ और हज़रात अकाबरीन बंगला वाली मस्जिद निज़ामुद्दीन की ये बातें और हिदायत अमानत हैं।

☆ इसलिए दूसरों तक पहुंचाने की पूरी कोशिश भी की जाए। अल्लाह तआला हम सबको इन तमाम बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। "आमीन"

✦दर्स तब्लीग़ ✦ क़ुरआन की रौशनी में अंबिया अलिहिस्सलाम की ख़ुसूसियत हदीस की रौशनी में✦

पूरा क़ुरआन दावत हैः पूरे क़ुरआन में अल्लाह तआला ने दावत का तज़्किरा किया है।

सूराः बक़रा मेंः अल्लाह तआला ने यहूदियों को दावत दी।

सूराः आलि इमरान मेंः अल्लाह तआला ने ईसाइयों को

दावत दी।

सूराः अल माइदा मेंः अल्लाह तआला ने क़बाईल अरब को दावत दी।

सूराः ईनाम में : अल्लाह तआला ने मजूसियों को दावत दी कि नेकी और बदी का ख़ालिक़ में ही हूं।

सूराः आअराब में : अल्लाह तआला ने अक़वाम ए आलम को दावत दी कि ऐ पूरी दुनिया के इंसानों मैं तुम्हें अपनी तरफ़ बुलाता हूं।

✦हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह॰ और फ़िक्र ए उम्मत✦

अल्लह तआला ने मौलाना इल्यास रह॰ के ज़रिया (1000) एक हज़ार साल से ज़्यादा तवील मुद्दत गुज़रने के बाद इज्तिमाई तौर पर इस दावत वाले काम को शुरू कराया। इसके शवाहिद सहाबा, ताबईन, तबाअ ताबईन, हारून रशीद तक मिलते हैं। इसके बाद इंफ़रादी तौर पर औलिया अल्लाह आते रहे और दीन की मेहनत करते रहे। हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह॰ को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने एक अज़ीम अहम काम के लिए मुंतख़िब फ़रमाया। जिसे दावत व तब्लीग़ के नाम से याद किया जाता है।

हज़रत इदरीस अलिहिस्सलाम इल्मे-क़लम लेकर आए। तारीख़ ए इंसानियत में सबसे पहले क़लम का इस्तेमाल इदरीस अलिहिस्सलाम ने किया। हज़रत नूह अलिहिस्सलाम हलाल व हराम लेकर आए। पहले अज्माली हुक्म था, बाद में तफ़सील आ गई।

शरिअत का पहला ढांचा नूह अलिहिस्सलाम को मिला।

हज़रत इब्राहीम अलिहिस्सलाम मनाज़िर लेकर आए।

हज़रत यूसुफ़ अलिहिस्सलाम ताबीर-उर-रोया का हुक्म लेकर आए।

हज़रत सुलेमान अलिहिस्सलाम जानवरों की बोली का इल्म लेकर आए।

हज़रत ईसा अलिहिस्सलाम इल्मुल-अब्दान लेकर आए।

हज़रत मुहम्मद ﷺ अव्वलीन और आख़िरीन का इल्म लेकर आए। ***(अनमोल हदीस)***

✦अल्लाह की ताईद और ग़ैबी नुसरते✦मोअजज़ात अंबिया के साथ मख़्सूस थे नुसरत दावत के साथ ह✦ नुसरत अंबिया अलिहिस्स्लाम और सहाबा के साथ मख़्सूस नहीं

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

मेरे दोस्तों और बुज़ुर्गो!

अर्ज़ यह करना है कि इस दावत व तब्लीग़ से क्या चाहा जा रहा है, हर मेहनत हर एक आदमी कर रहा है। लेकिन हर एक मेहनत में कामयाब नहीं है। मेहनत में वो कामयाब है जिसकी मेहनत जनाब रसूल अल्लाह ﷺ से मेल खाए।

इसलिए यह बात ज़रूरत है कि दावत के साथ मिज़ाज नबूवत भी हो उसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल व करम से काम हो रहा है। लेकिन कार ए नबूवत अभी

मिज़ाज ए नबूवत से ख़ाली है।

मिज़ाज ए नबूवत इस काम में यह है कि जितना काम करने को कहा जाए। इतना ही किया जाए। और जिस तरह करने को बतलाया जाए। इसी तरह किया जाए। इसे कहते हैं मिज़ाज ए नबूवत।

अगर काम ख़्वाहिश पर या अपने मिज़ाज पर ले जाएं तो ग़ैबी नुसरतें नहीं आएंगी।

क्यों कि ग़ैबी नुसरतों को ताल्लुक़ मिज़ाज ए नबूवत से है।

इसी के बक़द्र अल्लाह की ताईद और ग़ैबी नुसरतें साथ में होंगी।

दोस्तों! काम होगा अल्लाह तआला की ताईद और ग़ैबी नुसरतों से काम बयान और तक़रीरों से नहीं होगा।

इसलिए ज़रूरी है यह बात कि काम को मिज़ाज ए नबूवत के साथ करें इस मेहनत को जिस तरह करने के लिए और जितना करने के लिए आप सबसे अर्ज़ किया जा रहा है। इस तरह करना यह मिज़ाज ए नबूवत है।

अल्लाह की मदद ज़ाब्ता के साथ है ज़माना के साथ नहीं क़यामत तक जब तक उम्मत ज़ाब्तों पर रहेगी मदद का वादा है।

नुसरत दावत के साथ नुसरत अंबिया अलिहिस्सलाम सहाबा के साथ मख़्सूस नहीं।

☆☆☆☆

✦दावत व तब्लीग़ और सहाबा की मेहनत✦दावत व तब्लीग़ का काम तो हो रहा है सहाबा की मेहनत सामने नहीं✦

(मौलाना मुहम्मद साअ़द)

अल्हम्दु लिल्लाहि वाहदहू वस्सलातु वस्सलाम अला मिन ला नबी बादा

अल्लहम्दुलिल्लाह तब्लीग़ का काम तो हो रहा है सहाबा की मेहनत सामने नहीं।

दावत का काम जितना सीरत की रौशनी में होगा, क़बूल होगा।

जो बात यहां से अर्ज़ की जाती है वो अमानत है।

करने के लिए कही जाती है। अगर उसमें ख़्यानत की गई तो इज्तिमाइयत बाक़ी नहीं रहेगी।

इसके बारे में कोई शक न हो।

यहां की बातों पर शक हुआ तो सब चीज़ें मुतास्सिर होंगी।

सारे आलम का ताल्लुक़ निज़ामुद्दीन से इतना ही बढ़ेगा।

जितना अमला पलट पलट कर निज़ामुद्दीन की तरफ़ आवेगा।

दोस्तों काम तो अमला से चलता है। और अमला इसके कहते हैं जो ज़िम्मदारों के साथ चिमट कर रहे। चार माह लगाया हो उसे अमला निज़ामुद्दीन का अमला है।

हज़रत फ़रमाया करते थे काम करने वाले कम से कम साल

में एक बार ज़रूर आवें। जब तक हमारे दरम्यान हज़रत के बयानात नहीं होंगे। दावत की सतह बुलंद न होगी। अब जो नये मुक़र्ररीन पैदा हो रहे हैं। उन्होंने काम को हज़रत मौलाना यूसुफ़ रह० के नहज से हटा दिया है। हमारे बयानात से ईमानियात का तज़्किरा निकल गया हालांकि इसका तज़्किरा सबसे ज़्यादा होना चाहिए। हमारा काम ही यही है कि अल्लाह तआला को इतना बोलो। इतना बोलो। कि अल्लाह कि ग़ैर का तास्सुर निकल जाए।

जिस अमल में कमज़ोरी देखो उसकी दावत ज़्यादा दो।

हज़रत फ़रमाते थे इस काम में अगर अपने आपको उसूल सीखने का मोहताज न समझा गया और उसूल के मुताबिक़ काम न हुआ तो सख़्त फ़ित्नों का ख़तरा है।

✦ आमाल का नाम इबादत है ✦ दस चीज़ों का नाम इबादत है ✦

(मौलाना मुहम्मद साअ़द)

दस चीज़ों का नाम इबादत है

(1) नमाज़, (2) रोज़ा, (3) हज, (4) ज़कात, (5) ज़िक्र, (6) तिलावत, (7) तिजारत, (8) दावत, (9) सुन्नतों का एहतिमाम, (10) पड़ोसियों के हुक़ूक़। इन दस चीज़ों का नाम इबादत है।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह० फ़रमाया करते थे कि यह काम क़रन ए अव्वल का हीरा है।

हज़रत मौलाना ईनामुल हसन रह. (हज़रत जी) फ़रमाया करते थे कि

इस सदी में इस मेहनत का इस रूएज़मीन पर उम्मत के दरम्यान में मौजूद होना अल्लाह का खुला ईनाम है। और फ़रमाते थे पांच आमाल के अंदर उम्मत की हिदायत छिपी हुई है। मौलाना सुलेमान रह. फ़रमाया करते थे। जो यहां मरकज़ आए और यहां मस्जिद के आमाल में न जुड़े वो अपने को आया हुआ न समझे बंगला वाली मस्जिद में ईशा की नमाज़ के बाद सीरत पाक की तालीम होती है। इसके बाद एलान होता है कि अपने ईमान की और अपने सामान की खुद हिफ़ाज़त करें। ईमान की हिफ़ाज़त और हसन ख़ात्मा के लिए ईमान की दावत और सुन्नतों की पाबंदी करें, तहज्जुद का एहतिमाम करें। अगर मैं इस काम का कोई नाम रखता तो तहरीक ए ईमान रखता। (हज़रत मौलाना इल्यास रह.)

यह काम सारे मुसलमानों का है। हमें कोई अलाहिदा जमाअत नहीं बनानी है। इस काम के मक़सद को हज़रत मौलाना इल्यास रह. इस तरह बयान फ़रमाया करते थे कि हुज़ूर पाक ﷺ उम्मत को जिस सतह पर छोड़कर गए थे उम्मत उस सतह पर आ जाए।

☆ आमाल मसाजिद आमाल नबूवत हैं। आमाल नबूवत आमाल हिदायत हैं। ताजिर की तिजारत इबादत है। मुसल्ली की नमाज़ इबादत है। ज़मींदारी इबादत है। नमाज़ से लेकर मुआशिरा तक हर चीज़ इबादत है। यह नहीं कि नमाज़ पढ़ ली, फिर आज़ाद दीन ज़िंदगी में होगा। तो ग़रीबी में रहकर भी

जन्नत में जाएगा। दीन ज़िंदगी में नहीं होगा। तो मालदारी में रहकर भी जहन्नुम में जाएगा।

इस काम को कोई तन्जीम न समझो, तब्लीग़ वालों का काम नहीं है उम्मत का काम है, तब्लीग़ को तहरीक बना दिया।

✦ख़िदमत का मुक़ाम ✦ यहां दावत अमल है✦

2 माह की तरतीब वालों को हिदायत

ख़िदमत तरबियत के लिए है ज़रूरत के लिए नहीं। जो ख़िदमत को तरबियत के लिए करेगा।

वो नागवारियां बर्दाश्त करेगा। और न समझे तो अहसान समझेगा। तरबियत होगी नगवार चीज़ों से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हर शख़्स के लिए वो चीज़ें लाएंगे। जो उसकी तरबियत के लिए है।हमारे यहां मिंबर से लेकर बैतुल-ख़ला साफ़ करने तक सारे काम बराबर हैं।

किसी काम में ऊँच नीच नहीं। यहां किसी काम को लेकर अपनी हैसियत से कम न समझना। यहां ख़िदमत ऐसी तक़सीम की जाती है। जैसे डाक्टर गोलियां तक़सीम करते हैं। हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ बूढ़ी औरत की ख़िदमत किया करते थे। ख़िदमत मेहमानों का हम पर अहसान है। एक सफ़र में हुज़ूर ﷺ जंगल से लकड़ियां चुनकर लाए। इस काम की हर ख़िदमत बड़ी है। ख़ादिम में दो शर्तें चाहिएं:

(1) ख़ादिम अमीन हो, (2) ख़ादमि मुख़्लिस हो।

अमीन इसलिए कि ख़ादिम के हाथ सामान आएगा। अमानत अदा करना है।

अगर मरकज़ का खाना, इसलिए खाया कि हमने ख़िदमत की है तो खुदा की क़सम अजर ज़ायाअ हो गया। अपने अजर की हिफ़ाज़त करो। यहां की चीज़ों के इस्तेमाल का हक़ नहीं है इजाज़त है। यहां की रोटी सालन चावल दाना दाना अमानत है, यहां की हर चीज़ को ज़ायाअ होने से बचाओ। बहुत बड़ी जिम्मादारी है दो माह की तरतीब वालों की। यहां की कोई चीज़ ज़ायाअ हो जाए तो अल्लाह तुम से और मुझसे लेगा। रोटी का इकराम मेहमान को पहले। यहां का माल इज्तिमाई है। हम मजमाअ के दरम्यान हैं। यहां के जूते चप्पल जो मरकज़ में रहते हैं, दूसरों के लिए हराम हैं। ख़िदमत तक़्वा के साथ है।

मुख़्लिसः मैं यह काम अल्लाह के लिए कर रहा हूं। मामलात की सफ़ाई इख़्लास की वजह से होती है। यहां दावत अमल है ख़िदमत अमल नहीं, यहां हम सब दावत में लगे हुए हैं। इज्तिमाई अजर मिलेगा दावत के साथ। मुजाहिद को घोड़े की लीद पेशाब सब पर अजर मिलेगा।

✦ख़िदमत का मुक़ाम ✦ यहां दावत अमल है✦

2 माह की तरतीब वालों को हिदायात

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

दो माह का मक़्सद यह था कि काम समझ कर अपने इलाक़ों में करते। ख़िदमत ताबेअ है दावत के, दो माह अलग

शोअबा नहीं है। आने वाले मजमाअ से ताल्लुक़ है मक़सद से ताल्लुक़ नहीं, वर्ना हमें रोज़ाना इस मजमाअ को दावत देना है, खुदा की क़सम फ़रिश्ते मदद करते हैं।

आप की दावत नियत हो। हमारे किसी 2 माह वालों का गश्त न छूटे। उन औक़ात में गश्त करें। जब यहां आमाल शुरू होते हैं। जिस दिन तुम्हारा कोई अमल छूट जाए, इबादत में ज़ोअफ़ आएगा। अगर "आमाले-दावत" के बग़ैर ख़िदमत करोगे। यहां ख़राबियां पैदा होंगी।

इसलिए यहां गश्त करो। जैसे कोई मक्का जाए और नमाज़ न पढ़े। यहां मरकज़ आए और गश्त न करे। मस्जिद की नमाज़ के अलावा कोई दूसरी नमाज़ की इजाज़त नहीं। वर्ना मरकज़ 2-माह तन्ज़ीम बनकर रह जाएगा।

मौलाना इल्यास रह० बीमारी में मस्जिद की नमाज़ पढ़ते थे।

जमाअत की नमाज़ को छोड़ना ऐसी सुन्नत को छोड़ना है जिससे तुम गुमराह हो जाओगे।

हम सारी दुनिया की मस्जिदों को आबाद करने की मेहनत कर रहे हैं।

और अपनी मस्जिद में अलग जमाअत।

हमारे यहां शरिअत को ज़िंदा करना मक़सूद है।

खाना पकाना, खिलाना मक़सद नहीं।

हज़रत अली रज़ि० ने जंग के मैदान में भी तस्बीहते-फ़ातिमा नहीं छोड़ी।

जमाअत की नमाज़ छोड़ना, निफ़ाक़ है निफ़ाक़।

किसी साथी की नमाज़ और गश्त न छूटे।

✦निकाह का बयान✦ निकाह मुआशरत की इबादत है ✦ निकाह मस्जिद का अमल है✦ सुन्नत को ज़िंदा करने के लिए ही शादी है✦ इंसान और हैवान में सुन्नत का फ़र्क़ है

(मौलाना मुहम्मद साअद)

निकाह मुआशरत की लाईन के मुन्करात से रोकता है। रसूमात से बचकर जो निकाह होगा मुन्करात से रुकेंगे। जिस तरह नमाज़ मस्जिद का अमल है, निकाह भी मस्जिद का अमल है। निकाह मस्जिद में करो। यह हदीस बता रही है कि निकाह इबादत है।

सारे "आमाल ए निकाह" निकाह हैं।

एक एक सुन्नत पर अमल करना, "अल-निकाह मिन सुन्नती", जो निकाह आप ﷺ के तरीक़ा से हटकर होगा वो सुन्नत पर नहीं है। इंसान और हैवान में सुन्नत का फ़र्क़ है।

रसूमात तो ऐसे जुज़ बन गए हैं कि रसूमात को छोड़ने पर ऐब समझा जा रहा है। जो निकाह में सुन्नत पर अमल न हो, वो या तो ग़ैरों से मरऊब हैं या उनसे मुहब्बत है।

सुन्नत का ज़िंदा करने के लिए शादी है। वर्ना इंसान और हैवान में कोई फ़र्क़ नहीं, रसूमात उम्मत पर ग़ालिब आ चुके हैं। यहूद व नसारा हमको और आप ﷺ के तरीक़ों को मिटाना चाहते हैं। हम भी उनमें शामिल हो गए। सुन्नत के मुन्किर को

मिटाना नहीं कहते, सुन्नत पर अमल न करना, या छोड़ना सुन्नत को मिटाना है। जो जिससे मुहब्बत करेगा, उसकी इताअत करेगा। जो अमल सुन्नत के ख़िलाफ़ होगा, दिलों में मुहब्बत पैदा न होगी। न ख़ानदानों में, न मियां बीवी में।

निकाह सोहबत करने को कहते हैं। लोग तो सोहबत की दुआ भी याद नहीं रखते। सोहबत से पहले सोचा करो कि औलाद कैसी चाहिए, नेक या बद। इस काम का मक़सद ही अहया ए सुन्नत है।

मेरे तरीक़े पर शादी करना मेरी सुन्नत है, यानि हुज़ूर ﷺ के तरीक़े पर शादी करना हुज़ूर ﷺ की सुन्नत है।

✦निकाह का बयान✦ निकाह इबादत है ✦निकाह से निगाह और शर्मगाह की हिफ़ाज़त होती है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

अलनिकाह मिन सुन्नती. हुज़ूर ﷺ की तरीक़े पर शादी करना हुज़ूर ﷺ की सुन्नत है।

निकाह मेरी सुन्नत है यानि मेरे तरीक़े पर शादी करना मेरी सुन्नत है।

निकाह इबादत है। निकाह से शर्मगाह और निगाह की हिफ़ाज़त होती है।

निकाह मस्जिद में करो, निकाह का ऐलान करो, निगाह और शर्मगाह की हिफ़ाज़त होती है।

मेरे तरीक़े पर शादी करना मेरी सुन्नत है।

सोहबत से पहले सोचे कि मुझे कैसी औलाद चाहिए।

नाफ़रमान औलाद होने की वजह यह है कि सोहबत सुन्नत तरीक़े से नहीं की।

निकाह कहते हैं बीवी से सोहबत करने को।

खुत्बा निकाह और ईजाब तो बीवी हलाल करने के लिए है

जिसने मेरी सुन्नत से ऐअराज़ किया वो मुझसे नहीं है।

कितनी शर्म की बात है कि बीवी को लाने के लिए दोस्तों को ले जा रहे हैं।

जितनी भी रसूमात है बेहयाई की तरफ़ ले जाने वाली हैं।

हुज़ूर पाक ﷺ ने वलीमा में खजूरें खिलाई थीं।

कोई सुन्नत के मवाफ़िक़ खजूरें तक़सीम कर दे, लोग उसे वलीमा न कहेंगे।

इस काम को मक़सद ही अहया ए सुन्नत है।

चार चीज़ें अंबिया अलिहिस्सलाम की सुन्नत हैं:

(1) अहया, (2) ख़ुशबू, (3) मिस्वाक, (4) निकाह

तीन चीज़ों को देखना इबादत है: (1) क़ुरआन, (2) बैतुल्लाह, (3) मां-बाप को

मुतक़्क़ी बनना: (1) आंखों को नामहरम से बचाना, (2) ज़बान को ग़ीबत से बचाना।

निकाह मेरी सुन्नत है: मेरे तरीक़े पर शादी करना मेरी सुन्नत है। यानि हुज़ूर ﷺ के तरीक़ा पर शादी करना हुज़ुर ﷺ की सुन्नत है।

✦हयातुस्सहाबा✦

✦इख़्लास ए नियत ✦ अपने अमल को मख़्लूक़ से छिपाना इख़्लास है✦

मौलाना मुहम्मद साअद

अपने अमल का मख़्लूक़ से छिपाना इख़्लास है। अगर इख़्लास अमल में हो तो थोड़ा सा अमल भी निजात के लिए काफ़ी है। इख़्लास क़बूलियत के लिए शर्त है। अपने अमल को मख़्लूक़ से छिपाना इख़्लास है।

जो अमल ज़ाहिर हो जाए उसकी तारीफ़ से ख़ुश न हो। और बुराई से नाराज़ न हो। जो लोग उस काम को करके अपने ज़िम्मादारों से हौसला अफ़ज़ाई चाहते हैं उनके आमाल का कोई ऐतेबार नहीं, तारीफ़ की तलब उसमें होगी जो इख़्लास में कमज़ोर होगा। इसलिए अपनी नियतों को ख़ालिस रखो, अपने आमाल को अल्लाह को देखते हुए करना।

आमाल में रिया दाख़िल होता है ईमान की कमज़ोरी की वजह से।

बग़ैर ईमान के इख़्लास नहीं होता और मुसलमान नमाज़ नहीं छोड़ता।

सच्चाई का ताल्लुक़ ज़बान से नहीं दिल से है।

जिस तरह इताअत के लिए ईमान शर्त है, अमल के लिए भी ईमान शर्त है।

जो शख़्स मुख़्लिस नहीं, वो थक कर बैठ जाएगा। नज़र मुन्तहा तक न होगी, आदमी थक जाता है।

इताअत के बग़ैर मुजाहिद नही होगा। नाक़िस मुजाहिदे से हिदायत नहीं मिलेती।

मुजाहिदा क़बूल ए इताअत के बग़ैर नहीं होगा।

एक होता है मुजाहिद, एक होता है मुलाज़िम। हम सब मुजाहिद हैं, जिसे अल्लाह के रास्ते से वापसी पर निदामत और अफ़सोस न हो। तो अल्लाह उनसे मुक़ाम पर काम न लेंगे। हमारे हर एक साथी के पास हयातुस्सहाबा की किताब होनी चाहिए।

चाहे वो तीन दिन भी न लगाए हो, अल्लाह के रास्ते की नक़ल व हरकत समझ में आएगी। हमारी नक़ल व हरकत में जितनी सहाबा वाली ख़ूबियां पैदा होंगी, उतनी सहाबा वाली हिदायत आएगी। तब्लीग़ का काम तो हो रहा है, सहाबा वाली मेहनत सामने नहीं।

✦हयातुस्सहाबा✦

✦इख़्लास ✦ इख़्लास वाले हिदायत के चिराग़ हैं✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

जितना बड़ा काम है उतना बड़ा इख़्लास चाहिए। आमाल की क़बूलियत के लिए बुनियादी शर्त इख़्लास है।

जो शख़्स नियत से ग़ाफ़िल होगा, रिया दाख़िल होगा और फ़साद दाख़िल होगा। अपनी नियत को हाज़िर रखना।

इख़्लास वालों का दर्जा बहुत ऊँचा है।

मुख़्लिस होना सिद्दीक़ियत का दर्जा है। इख़्लास वाले हिदायत के चिराग़ हैं।

दीन की मेहनत से और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से दुनिया का इरादा न करे।

अगर दुनिया का इरादा किया, तो अज्र ज़ायाअ हो जाएगा।

दीन की मेहनत मसाइल हल करने के लिए की, तो अल्लाह तआला निकाल कर फेंक देंगे।

दावत की बुनियाद अल्लाह का हुक्म पूरा करना हो, बरकतों का वादा है। इबादत मक़सूद है।

जन्नत का वादा अल्लाह से मक़सूद है। जब जन्नत मौऊद है तो दुनिया मक़सूद कैसे हो सकती है।

इख़्लास का फ़ैसला तो अल्लाह की करेंगे।

कोई ज़िंदा किसी मुर्दा के बारे में कोई फ़ैसला नहीं कर सकता।

ग़ैब पर अपने आपको मुत्तलाअ होना अक़ीदे की कमज़ोरी है।

जब ईमान की दावत दो, तो ईमान सहाबा के सामने रखकर ईमान की दावत दो।

"उम्मत में जज़्बात मुर्दा हो गए हैं। उम्मत में जज़्बात फिर से ज़िंदा हो जाएं।"

"इसके लिए हज़रत ने हयातुस्सहाबा लिखी है।"

✦वापसी वालों में बयान✦कारगुज़ारी का अमल ✦ कारगुज़ारी का अमल सुन्नत है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

इस रास्ते की नक़ल व हरकत मक़सद है। मतलूब है। हिदायत मौऊद है।

मैं यहां मरकज़ में कारगुज़ारी लेने वाले की बात सुन रहा था। एक साथी चार माह लगाकर वापस आया। उसकी सूराः फ़ातिहा सुनी। उसको सही याद नहीं थी। कारगुज़ारी लेने वाले ने कहा कि तुमने चार माह बेकार कर दिया।

यह सूराः फ़ातिह नहीं सीख सका। लेकिन यह अल्लाह के रास्ते की नूरानियत लेकर वापस लौट रहा है।

✦हयातुस्सहाबा✦

✦ख़िदमत इबादत है✦ इबादत हर उस अमल को कहते हैं जिस पर अल्लाह ने अज्र रखा है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

इबादत हर उस अमल को कहते हैं जिस पर अल्लाह ने अज्र रखा है।

अल्लाह के रास्ते का कोई अमल छोटा न समझा जाए। इस रास्ते से ख़िदमत मक़सूद नहीं, तरबियत मक़सूद है।

जब काम तक़सीम हो जाए जो यह देखो कि काम कौन से सहाबी ने किया है।

तरबियत न होने की वजह यह है कि काम को नीचा समझा। दावत में इस का कोई तसव्वुर भी नहीं।

अबू बक्र रज़ि॰ एक बूढ़ी औरत का पाख़ाना साफ़ कर सकते हैं।

अल्लाह के रास्ते में चौकीदारी करना इबादत है।

इबादत हर उस अमल को कहते हैं जिस पर अल्लाह ने अज्र रखा है।

एक सहाबी का रात भर पहना देना और जन्नत की ख़ुशख़बरी।

इस रास्ते में जो तकलीफ़ आवे, उसको सहाबा की तकलीफ़ में तलाश किया करो।

इस रास्ते की तकालीफ़ पर सहाबा को अज्र के मिलने का कैसा यक़ीन था।

दाअई का इस्तक़बाल नहीं हुआ करता, अगर चाहे तो क़ायम नहीं रह सकता।

एक सहाबी ने अपने मुसल्ले से लेकर दरवाज़े तक रस्सी बांध रखी थी।

जो रास्ता मतलूब होता है, उसकी तकालीफ़ भी महबूब होती है।

इस्लाम तकालीफ़ से फैलता है कुफ़्र राहत से फैलता है।

इस्लाम राहतों से फैलाए तो रस्म बन जाएगा। अल्लाह हिदयात देने के लिए अपने रास्ते का जहद चाहते हैं।

दाअई जो तकालीफ़ उठाता है, वो मदऊ की हिदायत का ज़रिया बनेगा।

इस रास्ते में आने वाली तकालीफ़ की कभी शिकायत न करे।

बल्कि शुक्र करे।

इस्तक़ामत शुक्र के ज़रिया हासिल करे।

✦हयातुस्सहाबा✦

✦अल्लाह के रास्ते की नक़ल व हरकत हरमैन की इबादत से अफ़ज़ल है✦अल्लाह के रास्ते की नक़ल व हरकत✦ नूरानियत और रुहानियत

इस रास्ते की नक़ल व हरकत मक़सूद हैं यह न कहना नुक़सान है, मुज़िर न समझना।

नक़ल व हरकत इतनी नूरानियत और रुहानियत रखती है कि अगर यह सीख न सका, तब भी इस रास्ते की नूरानियत और रुहानियत लेकर वापस होगा।

इसकी एक घड़ी अल्लाह के रास्ते में उसके अपने घर पर अपने नेक आमाल ओर अपने ख़ानदान वालों के नेक आमाल से ज़्यादा अफ़ज़ल है। उम्मत के अंदर अल्लाह के रास्ते का ख़रूज इतना मरग़ूब हो जाए कि अपने मुक़ाम पर रहकर भी ख़रूज को नक़ल व हरकत का अहसास रहे।

मैं फ़जूर की नमाज़ किसी दूसरी जगह और ईशा के बाद

ख़रुज हो जाए।

ताकि जन्नत में बाग़ों में रात गुज़ारूँ।

क्या तुम नहीं चाहते कि जन्नत के बाग़ों में रात गुज़ारो।

हर चीज़ पर ख़रुज का मक़दम न समझना, अब तब्लीग़ का प्रोग्राम बन कर रह गया।

नक़्ल व हरकत को ताअयर्रूज़ न समझना। एक आदमी गश्त में नबी वाली नक़्ल व हरकत उतार रहा है।

अल्लाह की बड़ाई बयान करते हुए आए, नमाज़ की तरफ़।

जो हयातुस्सहाबा नहीं पढ़ेगा, वो इस काम को सहाबा की नक़्ल व हरकत से नहीं जोड़ सकेगा। हर वक़्त ख़रुज को सहाबा की तरफ़ मन्सूब किया करो। नक़्ल व हरकत के साथ इबादत को जोड़ा है। ताकि इबादत में कमाल पैदा हो। इसलिए ख़रुज में निकलने को ताख़ीर से नुक़सान समझे। जो रात को निकल गया, वो जन्नत के बाग़ों में है। मैं हयातुस्सहाबा के बारे में कहता हूं कि रोज़ पढ़ा करो, ख़ूब पढ़ा करा, पाबंदी के साथ हयातुस्सहाबा का मुतालिआ किया करो। इस किताब के बग़ैर दाअइयाना मिज़ाज न बनेगा।

✦हयातुस्सहाबा✦

✦अल्लाह के रास्ते से वापिस आने वालों को ख़रुज के फ़ज़ाईल ज़्यादा बताए जाए✦ आमाल ए दावत आमाल ए हिदायत व आमाल ए तरबियत✦

वापिस आने वालों को ख़रुज के फ़ज़ाईल ज़्यादा बताओ

कि इन्हें वापस जाते ही निकलना है।

निकलने वालों के अंदर शौक़ और उसकी क़ीमत नज़र आ रही हो।

जब दावत को अमल के साथ पेश किया जाए तो दावत क़बूल हो जाएगी। उमराह हुदैबिया में नबी ﷺ ने अमल करके दिखाया। आमाल ए दावत आमाल ए हिदायत व आमाल ए तरबियत हैं।

अल्लाह के रास्ते में निकलना हिजरत की नक़ल उतारना है।

अल्लाह का महबूब रास्ता दीन की मेहनत के लिए निकलना है।

ईमान ✦ दावत ✦ अमल

(मौलाना अहमद लाट)

हज़रत रसूल पाक ﷺ की तीन ज़िंदगियां हैं:

(1) घरेलू ज़िंदगी, (2) कारोबारी ज़िंदगी, (3) मआशराती ज़िंदगी

हर एक दीन सीखने वाला था। दीन पर चलने वाला था। और हर एक दीन की दावत देने वाला था दीन ख़ैरख़्वाही का नाम है। भलाई का नाम है। किसी को अपनी ज़ात से नहीं जोड़ना है, हर एक का ताल्लुक़ अल्लाह की ज़ात से जोड़ना है। दीन की मेहनत हक़ है। इसकी मेहनत को सीखने के लिए चार माह मांगे जाते हैं। इस के लिए चार लाईन की मेहनत है: (1)

सुनने की मेहनत तालीम, (2) बोलने की मेहनत दावत, (3) सोचने की मेहनत ज़िक्र, (4) मांगने की मेहनत दुआ, है।

ईमान मुजाहिदे से पकेगा। दावत देने से बनेगा। हिजरत के सफ़र से फैलेगा। हुक़ूक़ुलइबाद की अदायगी से बचेगा।

जिसने दावत वाले काम से इंकार किया, उसने गोया ख़त्म ए नबूवत से इंकार किया।

दीन की इशाअत के पांच शोअबे हैं, तब्लीग़, दर्स व तदरीस, तसनीफ़, तालीफ़, तक़रीर, तहरीर, मदारिस, ख़ानक़ाह।

✦हयातुस्सहाबा ✦ घर की तालीम ✦
आमाल दावत में ताक़त है क़लूब को पलटने की ✦ घर की तालीम में क़लूब का तज़्किया है✦
(मौलाना मुहम्मद साअद)

यह दावत का काम बहुत सादा नज़र आता है।

दुनिया के हर काम अपने मुक़ाम से उठकर करते हैं। इस काम को अपने मुक़ाम से नीचे उतर करने का है। इस काम को लोग नऊज़ूबिल्लाह गिरा हुआ समझते हैं।

देखो दुनिया के बाक़ी काम भी बड़ाई वाले हैं।

बयान कौन करेगा। खुत्बा कौन देगा। सदारत कौन करेगा।

हमारे इस काम में गश्त कौन करेगा। ख़िदमत कौन करेगा।

सामान कौन उठाएगा।

घर की तालीम को हम मामूली समझते हैं। घर की तालीम में क़लूब का तज़्किया है।

इस पर हमारा यक़ीन नहीं। मक्का में मशहूर था कि ख़त्ताब का गधा ईमान ला सकता है। लेकिन उमर रज़ि॰ ईमान नहीं ला सकते।

हज़रत साअद रज़ि॰ घर में सूराः ताहा की तालीम दे रहे थे।

मेरे दोस्तों! जब "आमाल ए दावत" के साथ तिलावत होगी।

अल्लाह के ग़ैरों के क़लूब पलट देगा। " आमाल ए दावत" में ताक़त है क़लूब को पलटने की। इस रास्ते की तकालीफ़ की तमन्ना जिस दिल में न हो। उस दिल में उम्मत का दर्द झूठा है।

क़ुर्बानी जब मतलूबा दर्जा तक पहुंच जाएगी, अल्लाह हिदायत के फ़ैसले करेगा।

हमारे अंदर दावत न होगी। अपने दीन को छिपाया जाएगा। या ग़ैरों का रौअब पड़ेगा। या दीन छोड़ देगा।

हज़रत उमर रज़ि॰ ईमान लाते ही दावत शुरू कर देते हैं।

लोग कहते हैं कि इस काम में तज़्किया नहीं है, ऐन तज़्किया है।

तसव्वुफ़: तसव्वुफ़ ज़िक्र को नहीं कहते, तसव्वुफ़ का ख़ुलासा इत्तिबाअ ए सुन्नत है।

☆☆☆☆☆

✦हिजरत की इब्तिदा शहादत है ✦ मुन्तहा पूरी ज़िंदगी अल्लाह के रास्ते में लगाना है✦ इरतदाद उम्मत में आम है ✦ ग़ुरबत, जिहालत, फ़राग़त इरतदाद के सबब हैं✦

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

हिजरत की इब्तिदा शहादत है, मुन्तहा पूरी ज़िंदगी अल्लाह के रास्ते में लगाना है।

ग़ुरबत, जिहालत, फ़राग़त इरतदाद के असबाब हैं।

जब तक पूरी दुनिया बाक़ी रहेगी, हिजरत की ज़रूरत बाक़ी रहेगी। हमेशा रहेगी। चाहें पूरी दुनिया दारूल इस्लाम में दाख़िल हो जाए। मुन्करात तो ज़रूर रहेंगे। लोग हिजरत दुनिया के लिए करते हैं, क्योंकि दुनिया सामने होती है।

इसलिए सालाना चार माह की तशकील बार बार होती है कि चार महीने के लिए जाऊँ।

हमारे काम का मक़सद बातिल को हक़ की तरफ़ फेरना है।

दीन पर इस्तक़ामत दीन की दावत से होगी। हक़ की मेहनत को छोड़ देने बातिल ग़ालिब आ जाएगा।

इरतदाद का सबब यही है कि दीन की दावत छोड़ दी या तो यह उम्मत दाअई होगी या मग़लूब होगी।

ग़रीबः दावत छोड़ देंगे, मसाईल का हल माल की वजह से होगा। इसलिए मुरतद होंगे।

फ़राग़तः अहल ए बातिल उनको अपने काम में मशग़ूल कर देंगे कि दसूरे काम के लिए फ़ुरसत ही न होगी। इसलिए आदमी दीन की मेहनत में मशग़ूल रहे।

जिहालतः दीन की मेहनत छूटने का वबाल इरतदाद है।

अब्दुल्लाह बिन हज़ाफ़ा रज़ि॰ को रोम के बादशाह ने क़ैद कर लिया। और आधे मुल्क के लालच और जान की धमकी दी कि नसरानी हो जाओ। उन्होंने कहा कि पूरी बादशाहत दे दे तब भी मैं पलक झपकने के बराबर भी मुहम्मद ﷺ के दीन से नहीं फिर सकता। जो दीन के लिए अज़ियतें बर्दाश्त करते हैं, अल्लाह उन्हें इज़्ज़त बख़्शते हैं।

हम इस रास्त में ख़र्च करते हैं अपनी ज़रूरत के लिए सहाबा ख़र्च करते थे, आख़िरत के लिए आज उम्मत दो वजह से परेशान हैः (1) अपनी बद अमली की वजह से, (2) दूसरे अल्लाह ने जो कुछ रखा है, आख़िरत में रखा है, ये लोग इतने मज़े में और मुसलमान परेशान।

हम चीज़ों में इन्हें पकड़ेंगे और अमलों में तुम्हें कामयाब करेंगे।

हमने अपने अमलों को बिगाड़कर निज़ाम को मुख़ालिफ़ किया हुआ है।

ईमान न बनाा तो भेड़ियों के दिल लिए फिरेगा। सबसे पहली चीज़ जो बनाने की है वो ईमान है। जब ईमान बनेगा तो दीन के तमाम शोअबे ज़िंदा होंगे। इंसान के अंदर आमाल पर चलने का नाम ईमान है।

सारे हालात असबाब के यक़ीन की बुनियाद पर बिगड़ रहे हैं। इंसान क़बर में अपने यक़ीन पर जवाब देगा। अपने इल्म पर जवाब नहीं देगा। फ़ाक़ा तो कुफ़्र तक पहुंचा देता है।

✦दावत के सारे आमाल अपनी हिदायत के लिए हैं✦

❁मौलाना मुहम्मद इब्राहीम❁

दावत के सारे आमाल अपनी हिदायत के लिए हैं:

दीन नेअमत भी है। अमानत भी है। दावत के काम की बुनियाद इताअत है।

ईमान आया ईमान की मेहनत से। दीन आएगा दीन की मेहनत से।

दाअई को चार यक़ीन बनाना है: (1) अल्लाह को दीन महबूब है, (2) अल्लाह को दीन की मेहनत महबूब है, (3) अल्लाह को दीन की मेहनत करने वाला महबूब है, (4) दाअई की मदद यक़ीनी है। जो शख़्स तक़्वा से रहता है गुनाह से बचता है, वो चौबीस घंटे ज़ाकिर है। नमाज़, रोज़ा, तिलावत ये सब काम सवाब के हैं। लेकिन इस बात से ग़ाफ़िल हैं कि गुनाहों को छोड़ना भी बड़ी इबादत है। बल्कि तमाम इबादतों से बरतर है। तक़्वा तो यह है कि जिस चीज़ को अल्लाह ने हराम किया है उससे बचे। और जिसको फ़र्ज़ किया है उसको करे। ईमान बनेगा दावत से। और दावत के लिए क़ुर्बानी देनी पड़ेगी। पूरी ज़िंदगी, सुन्नत और शरियत पर लाना है। इस पर लाने का यह रास्ता है। आमाल ए मस्जिद से अपने आपको जोड़ना है।

दीन के जितने काम हैं वो मुक़ाबिल नहीं हैं। हज़रत मौलाना ईनामुल हसन रह. (हज़रत जी) की कभी तहज्जुद नहीं छूटी।

इस काम के असरात में से है कि अल्लाह के हुक्मों से मुहब्बत करो। हर अमल में तीन चीज़ें हैं: (1) सही यक़ीन, (2) सही तरतीब, (3) सही नियत।

हिदायत की मेहनत पर अल्लाह हिदायत देते हैं। सारे आलम की फ़िक्र, सारे आमाल की पि

इमामत और नसीहत दो काम नबी के हैं। और दो काम दाअई के हैं।

✦हयातुस्सहाबा✦

✦दीन दुनिया पर मौक़ूफ़ नहीं ✦ जानी क़ुर्बानी माली क़ुर्बानी पर मक़दम है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

दीन दुनिया पर मौक़ूफ़ नहीं। बहुत से लोग हैं जो दीन का काम करने के लिए दुनिया कमाने लगे हैं। दीन में लगो, अल्लाह मदद तो ग़ैरों से लेंगे।

दीन तो ज़िंदा मज़हब है। ख़ुद चलने की इस्तदाद है। अल्लाह चलाएंगे।

मिल्क व माल से इस्लाम नहीं फैला है।

जिन सहाबा को अल्लाह ने माल दिया, ग़ुरबा से ज़्यादा परेशान थे।

अल्लाह ने ग़ुरबत में काम लिया।

अल्लाह की मदद बे-सर-व-सामानी में आएगी।

हमारे काम करने वाले दीन के तक़ाज़े के लिए माल मांगते हैं।

हालांकि हमारा मुतालिबा माल नहीं जान है।

जानी क़ुर्बानी माली क़ुर्बानी पर मक़दम है।

बहुत से लोग दुनिया कमा रहे हैं, दीन पर ख़र्च करने के लिए।

लोग दुनियावी तालीम हासिल कर रहे हैं कि हम दूसरी ज़बानों में दीन का काम करेंगे।

यह शैतान का धोखा है।

यह तो इल्म की तरफ़ से जहल की तरफ़ ले जा रहे हैं।

अरे जो ग़ाफ़िल है वो दूसरे मुल्कों में दीन का काम कैसे करेगा। अल्लाह उन मुल्कों में काम ले जा रहा है जिनकी हम ज़ुबानें भी नहीं जानते। जितने असबाब ज़्यादा होंगे, उतनी ग़फ़लत ज़्यादा होगी।

✦हयातुस्सहाबा✦

✦हक़ की दावत से बातिल मग़लूब होगा

✦ सारा ईमान सब्र और शुक्र है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

दावत के वजूद से उम्मत ख़ैर की तरफ़ आएगी और असबाब ए हिदयात बढ़ेंगे।

दावत छोड़ने पर बावजूद दीन होने के गुमाराही आएगी। दीन पर लाकर छोड़ दिया गया।

तो बेदीनी पर आएगी। एक है इस काम को अपना समझकर करना। अगर काम में सिर्फ़ हिस्सा लिया, तो काम में तसलसल बाक़ी न रहेगा। दावत को अपने मशाग़िल में शामिल कर लो। यह काम की दलील है।

सालाना चिल्लाः महीने के तीन दिन को हम तसलसल कहते हैं, तसलसल समझते हैं।

यह तसलसल नहीं है। 24 घंटे की फ़िक्र दाअइयाना हो।

ताजिर रोज़ दुकान पर आने वाले ग्राहक को दावत दे।

दावत का छूट जाना गुमाराही का सबब है।

अगर हमने इबादत के लिए कोने पकड़ लिए, चाहे उम्मत कमें कितने ही सालेह, उलेमा, मशायख़, मुहद्दिस मौजूद हों, गुमराही आएगी। अगर ज़ाती तरक़्क़ी चाहते हो तो काने संभालो।

एक कोने में बैठकर इस उम्मत का दीन मुकम्मल नहीं हो सकता।

और दीन की तरक़्क़ी चाहते हो तो सहाबा की तरह क़ुर्बानियां देकर घर छोड़ो।

दावत में गश्त से बढ़कर अल्लाह की रहमत खींचने से बड़ा कोई अमल नहीं।

त.यफ़ के ग.श्त पर इतना बड़ा फ़रिश्ता उतर आया।

गश्त का कोई बदल नहीं। बहुत बड़ी ताक़त है। बाअज़ अमराज़ अमूमी गश्त में ख़त्म हो जाते हैं।

उम्मत दावत छोड़ देगी तो उम्मत के सालेहा मायूस हो जाएंगे।

दावत इलल्लाह से बढ़कर उम्मत की इस्लाह के लिए कोई दूसरा तरीक़ा है नहीं।

✦हयातुस्स्हाबा✦

✦औरतों का अल्लाह के रास्ते में निकलना मतलूब भी है सुन्नत भी✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

जिस तरह मर्दों का ख़रूज ज़रूरी है। औरतों का ख़रूज भी ज़रूरी है, मतलूब है।

शरियत की पाबंदी के साथ।

मस्तूरात के ख़रूज से औरतों और घरों के माहौल को बदलना।

ख़रूज से ज़्यादा शरयत ज़रूरी हैं। उम्मत का जो तबक़ा दावत पर न लगेगा, घरों में बातिल के आने का रास्ता उसी से बनेगा।

उम्मत में तीन तबक़े हैं: (मर्द, औरत, बच्चा)

कोई अजनबी आदमी घर में उस वक़्त तक नहीं आ सकता जब तक उसका घर के किसी फ़र्द से ताल्लुक़ न हो। ख़रूज में किसी औरत से बेउसूली होगी तो नुक़सान उठाना पड़ेगा। दूसरे लोग इस बेउसूली को पकड़ेंगे। उछालेंगे। मस्तूरात के काम के उसूलों पर जमें।

मस्तूरात की जमाअत फ़्रांस गई। फ़्रांस की अदाकरा औरतें

जमाअत में निकलने के लिए तैयार हुईं। लेकिन उन्होंने कहा, हम जमाअत में निकलेंग, लेकिन पर्दा नहीं करेंगे। साथियों ने गुंजाईश निकाली। उन्होंने निज़ामुद्दीन से राब्ता किया, इजाज़त चाही। निज़ामुद्दीन से जवाब मिला कि पर्दे के साथ जाएंगी। उनको बताया गया कि पर्दे के साथ निकलना तय हुआ है। तो उन्होंने कहा कि हम पर्दा के साथ निकलेंगी। अल्लाह ने उन औरतों को फ्रास में काम का ज़रिया बनाया। और वो इस उसूल की वजह से फ्रांस की औरतों की हिदायत का ज़रिया बनें निकलने का मक़सद हिदायत है। दीन दीन के रास्ते से आएगा। शरियत से हटकर नहीं, अपनी जगह छोड़ देना तौबा की ज़िद है।औरतों को घर में वो आमाल करवाने हैं कि घर का माहौल बने।

वाक़िआः हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि॰

बग़ैर अमीर की इजाज़त के इस्तंजा के लिए जाना भी फ़ित्ना का सबब बनेगा।

✦हयातुस्सहाबा✦

✦मस्तूरात की नक़ल व हरकत का मक़सद घर घर में आमाले-दावत को दाख़िल करना है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

शुजाअत मर्दों औरतों और बच्चें में हिफ़ाज़त दीन और दावत की वजह से थी। दावत को छोड़ने की वजह से बुज़दिली आएगी। मुक़ाबला तो दूर की बात है दीन की हिफ़ाज़त के लिए माल भी न ख़र्च करेगा। माद्दी क़ुव्वत न थी। माद्दी क़ुव्वत पर अल्लाह की मदद नहीं उतरती। अल्लाह का कोई वादा नहीं। औरतें भी क़त्ताल करती थीं। दीन की हिफ़ाज़त के लिए दावत

के लिए बुज़दिली निफ़ाक़ की वजह से पैदा होती है। बहादुरी ईमान की अलामत है। मुनाफ़िक़ पीछे रहते और औरतें आगे होतीं। औरतें दीन मे मर्दों से मग़लूब हैं (बेदीनी में)

हज़रत फ़रमाते थे कि अगर तुमने औरतों की सलाहियतों को हक़ पर नहीं लगाया तो बातिल उन्हें ग़लत पर लगा देगा। रोज़ाना की तालीम का लाज़मी जुज़, छः सिफ़ात है। और इसमें अल्लाह के रास्ते मे निकलने की तश्कील भी हो। हमारी मस्तूरात की नक़ल व हरकत का मक़सद घर घर में "आमाल ए दावत" को दाख़िल करना है। और जमाअत के काम को दाख़िल करना है। हफ़तावारी तालीम में वक़्त लगाना शर्त नहीं। लेकिन हफ़तावारी तालीम शुरू करने के लिए वक़्त लगाना शर्त है। वक़्त लगाई हुई अपनी निगरानी में किताब पढ़वाए। हलक़ा लगवाए, छः सिफ़ात का मुज़ाकिरा करे। और तश्कील के लिए वक़्त लगाई हुई काम करेंगी। हर घर हफ़तावारी तालीम से जुड़ा हो। इसकी फ़िक्र करें। घर तलाश करें, इसतदाद पैदा करें। (यह ज़िम्मदारों का काम है)

✦मुन्तख़िब अहादीस✦

✦छः सिफ़ात का मक़सद ✦ मौलाना यूसुफ़ रह. से हटकर हम काम को समझ ही नहीं सकते जो कुछ हज़रत के दिल में था वो मुन्तख़िब अहादीस और हयातुस्सहाबा में है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

कलिमा तैय्यबा (1): ईमान बिलग़ैब : ग़ैब की बातों पर ईमान।

ईमान लुग़त में किसी बात को किसी के एतेमाद पर यक़ीनी तौर पर मान लेने का नाम है। और दीन की ख़ास इस्तलाह में ख़ैर रसूल को बग़ैर मुशाहिदा के महज़ रसूल के एतेमाद पर मान लेने का नाम ईमान है।

तामलील व अवामिर में कामयाबी: अल्लाह तआला की ज़ात आली से बराहे-रास्त इस्तफ़ादा के लिए अल्लाह तआला के अवामिर को हुज़ूर ﷺ के तरीके पर पूरा करने में दुनिया व आख़िरत की कामयाबियों का यक़ीन करना।

नमाज़: अल्लाह तआला की क़ुदरत से बराहे-रास्त इस्तफ़ादा के लिए अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के अवामिर को हज़रत मुहम्मद ﷺ के तरीक़े पर पूरा करने में सबसे अहम और बुनियादी अमल नमाज़ है।

इल्म व ज़िक्र: अल्लाह तआला की ज़ात आली से बराहे-रास्त इस्तफ़ादा के लिए अल्लाह तआला के अवामिर को हज़रत मुहम्मद ﷺ के तरीक़े पर पूरा करने की ग़र्ज़ से अल्लाह वाला इल्म हासिल करना। यानि इस बात की तहक़ीक़ करना कि अल्लाह तआला मुझसे इस हाल मे क्या चाह रहे हैं।

इकरामे-मुस्लिम: अल्लाह तआला के बंदों से मुताल्लिक़ अल्लाह तआला के अवामिर रसूल अल्लाह ﷺ क तरीक़े की पाबंदी के साथ पूरा करना। और इसमें मुसलमानों की नौअईयत का लिहाज़ करना यानि मुसलमान का मुक़ाम।

इख़्लास ए नियत: यानि तसीह ए नियत: अल्लाह तआला के अवामिर को महज़ अल्लाह तआला की रज़ामंदी के लिए पूरा करना। अल्लाह तआला के वादों पर यक़ीन के साथ अमल करना।

दावत व तब्लीग़ः अपने यक़ीन व अमल को दुरुस्त करने और सारे इंसानों को सही यक़ीन व अमल पर लाने के लिए रसूल अल्लाह ﷺ वाले तरीक़े पर मेहनत को सारे आलम में ज़िंदा करने की कोशिश करना।

✦बयान✦

✦ईमान व यक़ीन ✦ ईमान की तहक़ीक़ करना फ़र्ज़ ए ऐन है✦नबी की बात की तस्दीक़ करना ईमान है, नजूमी की बात की तस्दीक़ रकना कुफ़्र है✦जिस चीज़ की देखकर तस्दीक़ की जाए उसको ईमान नहीं कहते✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

नबी की ख़बर अक़्ल के ख़िलाफ़ होगी।

नबी की ख़बर नज़र के ख़िलाफ़ होगी।

नबी की ख़बर ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होगी।

दीन आएगा ज़िंदगी में यक़ीन के रास्ते से।

यक़ीन आएगा ज़िंदगी में दावत के रास्ते से।

लोग अमल सीखते हैं, ईमान नहीं सीखते।

अमल पर अजर, अमल पर इख़्लास, अमल पर इस्तक़ामत।

बग़ैर ईमान के अमल का कोई वज़न नहीं है।

सारा ईमान ही इख़्लास है। जिस अमल में नज़र अल्लाह के ग़ैर पर हो, शिर्क है।

आमाल भी बीमार होते हैं। रिया अमल की बीमारी है। यह दिल की बीमारी है।

अपने अमल के नुक़सानात भी देखा करो। बग़ैर सबूत के कोई अमल माअतबर नहीं।

ईमान की तहक़ीक़ करना फ़र्ज़ ए ऐन है। फ़र्ज़ किफ़ाया नहीं, ईमान वालों ईमान सीखो। (क़ुरआन)

फ़र्ज़ किफ़ाया वो काम होत हैं जो दसूरों के लिए होते हैं। फ़र्ज़ ऐन वो काम होत हैं जो खुद के लिए किये जाते हैं। दाअई को दावत का फ़ायदा होगा। चाहे दुनिया में उसकी बात कोई न सुनता हो। कोई न सुने। तुम दावत छोड़ दोगे, मदऊ तुम पर ग़ालिब आ जाएंगे। ईमान की तहक़ीक़ करो। ईमान आप ﷺ की लाई हुई बातों को आप सल्लल के एतेमाद पर यक़ीनी मानना। नबी की ख़बर अक़्ल के ख़िलाफ़ होगी।

नज़र के ख़िलाफ़। ज़ाहिर के ख़िलाफ़। नजूमी की बात की तस्दीक़ करना कुफ़्र है।

नबी की बात की तस्दीक़ करना ईमान है। फ़र्ज़ है। नजूमी की बात का इंकार करना ज़रूरी है।

जिसने नजूमी की बात की तस्दीक़ की उसने नबी की ख़बर का इंकार किया, नबी से उसकी ख़बर की तस्दीक़ कराना यही तो कुफ़्र है। नबी की ख़बर पर नबी से सबूत मांगना यही तो कुफ़्र है।

✦दावत की नक़ल व हरकत से मग़फ़िरत पहला ईनाम ✦ शैतान बड़ा दुश्मन है✦वो नबी को भी नहीं छोड़ता ✦ जो सुन्नत का इत्तबाअ करेगा शैतान से महफ़ूज़

रहेगा ✦ गुनाहों की कसरत और तन्हाई में गुनाहों की कसरत से ईमान सलब हो जाता ✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

हुज़ूर ﷺ की मेअराज की बात सुनकर कमज़ोर ईमान वाले मुरतद हो गए।

दीन का मदार हुक्म पर है अक़्ल पर नहीं।

अल्लाह ने अक़्ल के सौ हिस्से बनाए हैं। एक हिस्सा पूरी दुनिया को दिया है।

और 99 हिस्से हुज़ूर ﷺ को दिये हैं।

दावत की नक़ल व हरकत से मग़फ़िर पहला ईनाम है।

यह बात ठीक नहीं है कि जो अमल न करे वो दावत न दे।

अगर अमल नहीं करते हो तो ज़्यादा दावत दो।

जो नमाज़ की दावत दे रहा है, वो नमाज़ कैसे छोड़ सकता है।

लोगों ने जादू किया, छः महीने तक आप सल्ल पर असर रहा।

ज़हर दिया ज़हर का असर आख़िर तक रहा।

सच्चाई जानने के लिए ज़हर दिया। दिया ज़हर और ज़ाहिर हुई सच्चाई।

शैतान बड़ा दुश्मन है वो नबी को भी नहीं छोड़ता।

जो सुन्नत का इत्तबाअ करेगा, शैतान से महफ़ूज़ रहेगा।

काम तो अल्लाह का है। दीन तो अल्लाह का है।

जो अल्लाह के दीन का काम करेगा, अल्लाह उसकी मदद

करेगा।

जान व माल लगाए बग़ैर इख़्लास नहीं होगा।

गुनाहों की कसरत और तन्हाई में गुनाहों की कसरत से ईमान सलब हो जाता है।

बहुत हिफ़ाज़त की ज़रूरत है। जो लोग गुनाह छुपकर करते हैं सू-ए-ख़ात्मा का अंदेशा है।

गुनाहों से बचना बहुत ज़रूरी है। छुपकर गुनाह से नफ़रत, छुपकर नेक अमल करने से मुहब्बत हो।

दीन के लिए जिसको फ़ुरसत न हो, अल्लाह उसको मशग़ूल कर देगा। दावत का काम जगत सुधार रहा है।

✦अल्लाह के रास्ते में निकलने वालों के लिए हिदायात ✦ रवानगी की बात और दुआ✦

(8 मार्च 2014 बरोज़ मंगल हज़रत मौलाना ज़ुबैर उल हसन कांधलवी रह. दुनिया से रहलत फ़रमा गए।)

(मौलाना मुहम्मद ज़ुबैर)

अल्लह पाक को दीन सब से ज़्यादा महबूब है। दीन आसान, दीन पर चलना आसान, दीन की मेहनत आसान।

सबसे बड़ा नफ़ा अल्लाह की रज़ा है। अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी नेअमत है।

बस निकलने के ज़माने में कोई वक़्त ज़ायाअ न करे। यह सीखने का ज़माना है।

वापस जाकर मुक़ामी काम में जाकर लगना है। निकलने के ज़माने में इन आमाल को करना है।

दावत, तालीम, नमाज़, क़ुरआन, ज़िक्र, तिलावत, साथियों की ख़िदमत, अमीर की इताअत।

गश्तों के ज़रिये अपने भाईयों को मस्जिद में लाना। जो दीन पर चलेगा अल्लाह का महबूब बनेगा।

नबी का दुलारा बनेगा। मस्जिद में दुनिया की बात करने से चालीस दिन के आमाल बरबाद हो जाते हैं।

उम्र दी सीखने के लिए, इसलिए दीन सीखना फ़र्ज़ ए ऐन है। जो जितना दीन पर चलेगा, वो उतना अल्लाह का महबूब बनेगा।

दीन है तो सब कुछ है। दीन नहीं तो क़ुछ नहीं।

जमाअत में निकल कर काम को सीखना है और मुक़ाम पर मेहनत करना है।

✦कारगुज़ारी का अमल ✦ कारगुज़ारी का अमल सुन्नत है✦

रब का यक़ीन आता है दावत के रास्ते से सबब का यक़ीन आता है नज़र के रास्ते से

मश्वरे के बाद तीन काम करना हैं: (1) तालीम, (2) खुसूसी मुलाक़ात, (3) ख़िदमत।

जिसने अपना खाना तैयार कर लिया उसने आधा काम कर लिया। न खाना पकाना उसूल है, न दावत क़बूल करना उसूल है। ख़ुसूसी मुलाक़ात तीन क़िस्म के लोगों से करना है: (1) दुनिया की लाईन का बड़ा आदमी, (2) वक़्त लगाया हुआ

पुराना साथी, (३) उल्माए इकराम तालीमी गश्त में लोग नक़द आएंगे, उनसे कहें हमारे साथ पढ़े लिखे, डाक्टर या और क़िस्म के लोग भी हैं, तशकील के बाद वसूली की फ़िक्र करें।

गश्त में जब लोग फ़ारिग़ हों। उस वक़्त गश्त करें। तशकीली गश्त बाद ज़ोहर शुरू हो जाएगा। सबब का यक़ीन आता है नज़र के रास्ते से। रब कि यक़ीन आता है दावत के रास्ते से। यक़ीन के बनने का रास्ता दावत ही है।

✦मस्जिद का अमल✦मस्जिद का हर अमल इबादत है ✦ मस्जिद का हर अमल इज्तिमाई बनाओ✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

मस्जिद का हर अमल इबादत है। मस्जिद में इबादत के लिए जाना खुद इबादत है।

मस्जिद में रहना खुद इबादत है।

मस्जिद में ग़फ़लत दाख़िल होगी ग़फ़लत से।

मस्जिद में तो महज़ दीन की ख़ातिर आना चाहिए।

मस्जिद में इबादत के लिए जाना चाहिए।

मस्जिद का हर अमल इज्तिमाई बनाओ।

ज़िक्र अल्लाह की याद के लिए है। तस्बीह पूरी करने के लिए नहीं।

दावत ग़फ़लत करने के लिए है। ग़फ़लत और फ़राग़त

गुनाहों की तरफ़ ले जाती है।

जो अल्लाह की इत्ताअत पर है। वो ज़ाकिर है। हर इत्ताअत करने वालो ज़ाकिर है।

मस्जिद का हर अमल ज़िक्र मे दाख़िल है। दीन की हर मजलिस ज़िक्र मे दाख़िल है।

अपने बैठने को ज़िक्र बनाओ। अपने बैठने को इबादत बनाओ। और सुनो अमल के इरादे से।

सारा बातिल बाज़ारों के रास्ते से आता है। सारा हक़ मस्जिदों के रास्ते से आता है।

मस्जिद में ईमान का हलक़ा। मस्जिद की आबादी की बुनियादः मस्जिद में ईमान के हलक़े क़ायम होना है।

ईमान वालों को मस्जिद में लाकर आबाद करना ताकि मस्जिद में आमाल ए दावत ज़िंदा हों।

मस्जिद की तरफ़ उठाने पर एक मक़बूल हज का सवाब मिलता है। उम्मत के जुड़ने की जगह मस्जिद है।

उम्मत के बनने की जगह मस्जिद है। उम्मत की तरबियत की जगह मस्जिद है। मस्जिद के फ़ज़ाईल बताएं।

मस्जिद की तरफ़ जिहाद है। मस्जिद को आबाद रखना अल्लाह के रास्ते में निकलना यह दो अमल अल्लाह के ग़ुस्सा को ठंडा करने वाला है।

सारे आलम की मसाजिद को ईमान की मजालिस से आबाद करना बुनियादी मक़सद है।

✦हलाल व हराम✦

✦अमल को छोड़ना भी हराम ✦ अमल का बिगाड़ना भी हराम✦

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

अमल का छोड़ना भी हराम है। अमल का बिगाड़ना भी हराम है।

खुदा की क़सम सुन्नत के बग़ैर किसी अमल की कोई हैसियत नहीं।

इस्लाम का हुस्न सुन्नत है। हर अमल को सुन्नत पर लाओ।

जिस्म को वो गिज़ा दो, जिससे इबादत क़ायम हो, हलाल ईंधन मिले।

इंसान अमल की मशीन है। अपनी गिज़ाओं को पाक करो।

लोग हराम खा जाते हैं, और समझते हैं इबादत से माफ़ हो जाएगा।

लुक़्मा समुंद्र है, ख़्यालात मोती हैं।

गंदे इरादे गंदे रोज़ी का नतीजा हैं, पाकीज़ा गिज़ा हासिल करो।

रोज़ी में हराम दाख़िल होता है असबाब के यक़ीन से।

खुदा की क़सम ख़िन्ज़ीर और सूद में कोई फ़र्क़ नहीं।

जो इसमें फ़र्क़ करे वो मोमिन नहीं।

मुशरीकीन मक्का ने हलाल से बनाया था बैतुल्लाह को।

हमसे अच्छे मुशरीकीन मक्का थे, हलाल हराम की तमीज़ नहीं।

ख़्वाहिश को क़ुरबान करे तो दीन आएगा।

रोज़ाः खाना छोड़ दिया। छोड़ा नहीं तरतीब पर आया है। तो अल्लाह ने रोज़ी बढ़ा दी।

दीन की बात को यक़ीन से सुनो। बयान में नींद आना ग़फ़लत है।

जहन्नम का एक पत्थर दुनिया के सारे पहाड़ों से बड़ा है।

ईमान वाले के पास दो बड़ी दौलत हैंः (1) जान, (2) माल

जिस्म के लिए तीन गिज़ाएं ज़मीन से और रूह के लिए गिज़ाएं आसमान से।

काफ़िर की एक दाढ़ जहन्नम में अहद पहाड़ के बराबर होगी।

✦छः सिफ़ात तो रस्म बन गए, ये तो आला सिफ़ात हैं✦ जो बात दावत में आएगी वही यक़ीन में आएगी✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

अल्लाह की क़ुदरत वादों के साथ आई है। वादों हुक्मों के साथ हैं।

इबादत यक़ीन से क़ायम होगी। यक़ीन दावत से पैदा होगा।

जो अल्लाह को अपने अमल से ख़ुश न करे वो बुर्ज़गों की दुआओं से कैसे ख़ुश करेगा।

निफ़ाक़ को बयान किया जाए ताकि निफ़ाक़ से बचा जाए ईमान की हिफ़ाज़त होगी। कैंसर के नुक़सान बताने से कैंसर से बचेगा। मुन्किर को बयान किया जाएगा मना नहीं किया जाएगा।

मुन्किर से रोकना माअरूफ़ात पर लाने के लिए। मुन्किर से रोका तो अपने मुन्किर पर और ज़्यादा इसरार करेगा।

यह नहीं कि मुन्किर बयान नहीं किया जाएगा। डाक्टर बीमारियों को बयान करते हैं।

बीमारियों के नुक़सानात बताते हैं। निफ़ाक़ को बयान करने से ईमान की हिफ़ाज़त है।

छः सिफ़ात रस्म बन गए, ये तो आला सिफ़ात हैं।

फ़ज़ाईल के साथ साथ मुन्तख़िब अहादीस को पढ़ा करो।

अब तो बयानात के मौज़ूअ बदल गए।

असबाब का मिल जाना भी इम्तिहान। और असबाब से काम बन जाना भी इम्तिहान, असबाब का इम्तिहान है। और अहकामात इत्मिनान हैं।

जो बात दावत में आएगी वही यक़ीन में आएगी। जो बात दावत में नहीं आएगी, वो बात यक़ीन में नहीं आएगी। और जो बात यक़ीन में नहीं आएगी, तो वो बात अमल में आ ही नहीं सकती।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ात ए आली से बराहे-रास्त

इस्तिफ़ादाह के लिए कायनात का यक़ीन निकालना शर्त है।

नुसरत दावत के साथ है। नुसरत अंबिया और सहाबा के साथ मख़्सूस नहीं।

✦नुसरत दावत के साथ है✦ नुसरत अंबिया के साथ मख़्सूस नहीं✦ईमान के वाक़िआत से यक़ीन बढ़ता है✦ ✦ईमान बनता है✦इस काम को लोग कलिमा नमाज़ सीखने की तहरीक समझते हैं इसलिए अहमियत नहीं देते✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

इस काम को लोग कलिमा नमाज़ सीखने की तहरीक समझते हैं। इसलिए अहमियत नहीं देते।

अमल की तरफ़ शक्लों के इंकार के साथ आओ।

जो दावत और अमल को जमा करेगा, उससे अच्छा दीन किसी का नहीं होगा। अमल की कोई मुन्तहा नहीं, जो पैदा होने से मौत तक मस्जिद में पड़ा रहे, तब भी उम्मत को उम्मत का दीन पहुंचाना है।

मेहनत करने वालो को अल्लाह हिदायत पहले देंगे। इस पर पूरा अजूर व असर मिलेगा।

(1) आमाल पर इख़्लास, (2) आमाल पर इस्तक़ामत (3) आमाल पर वादों का पूरा होना, (4) किसी अमल पर अजूर नहीं

ईमान के बग़ैर

ये चार चीज़ें ईमान की अलामत हैं।

ईमान की अलामत इताअत और इख़्लास है। ईमान और इख़्लास एक चीज़ हैं।

ईमान के वाक़िआत से यक़ीन बढ़ता है। ईमान बनता है।

पहले बंदा नबी को भूलता है, फिर सुन्नतों को भूलता है। फिर मुश्किल आ जाती है सुन्नत से शर्म आने लगती है।

सुन्नतों पर अमल न होने की वजह से ग़ैरों का रौअब पड़ता है। और ग़ैरों के तरीक़े अच्छे लगते हैं।

जो माल तक़्वा से मिलेगा, उस पर हिसाब नहीं होगा।

सहाबी को 17 अशर्फ़ियां मिलीं बिल में हाथ दाख़िल करते तो सवाल होता।

जो माल दूसरों पर ख़र्च किया जाए उस पर भी हिसाब नहीं। हिसाब उस पर जहां हाथ लगाया।

सुन्नतों पर अमल होने की वजह से ग़ैरों पर रौअब पड़ता है।

अल्लाह ने अपनी मददें और बरकतें आप सल्ल की सुन्नतों के साथ लाज़िम कर दी हैं।

सुन्नत के बग़ैर कोई विलायत नहीं।

विलायत कहते हैं: अल्लाह का दोस्त बनना। चाहे कोई भी करामत ज़ाहिर न हो।

✦तर्क असबाब की दावत नहीं है ✦ बल्कि असबाबों के यक़ीनों से निकलना है✦असबाब को नबियों ने वलियों ने, सहाबा ने किसी ने नहीं छोड़ा✦हलाम व हराम✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

जो माल तक़वा से आएगा, तक़वा पर ख़र्च होगा।

हलाल माल चाहे कितना भी ज़्यादा हो, हराम ख़र्च नहीं होगा।

हराम माल चाहे जितना कम हो, हराम में ख़र्च होगा।

जो माल हराम में ख़र्च उसकी तहक़ीक़ करो।

क़ुदरत अल्लाह की ज़ात में है। कायनात में नहीं।

ग़ल्ला के बग़ैर ग़ल्ला, दूध के बग़ैर दूध, बकरी के बग़ैर दूध, दरख़्त की टहनी को तलवार बना दिया।

असबाब से निकल जाना इम्तिहान से निकल जाना।

असबाब को नबियों न वलियों ने सहाबा ने किसी ने नहीं छोड़ा।

असबाब के बग़ैर इंसान चल नहीं सकता।

अल्लाह इम्तिहान में डालना चाहता है, असबाब से रोकना नहीं चाहता।

अल्लाह आज़माईश में डालते हैं, असबाब इम्तिहान के लिए, इत्मिनान के लिए नहीं।

मैंने नमाज़ पढ़ ली मैं कामयाब हूं, मैंने हुक्म पूरा कर दिया।

तौहीद बयान करो। गश्तों में मुलाक़ातों में।

सारे आमाल का मदार तौहीद पर है। हमारा मौज़ूअ तौहीद को बयान करना है।

तौहीद बयान करने से मख़्लूक़ का यक़ीन कमज़ोर होता चला जाएगा।

अल्लाह की ग़ैबी मदद को ख़ूब बयान करो।

हमारे दरम्यान अख़बार की बातें चल रही हैं।

आमाल पर वादा है। असबाब छोड़ना नहीं है।

तवक्कल अल्लाह की ज़ात पर रहे। असबाब पर अल्लाह का कोई वादा नहीं।

अल्लाह की क़ुदरत वादों के साथ है और अल्लाह के वादे हुक्मों के साथ हैं।

✦इस काम का मक़सद अहया ए सुन्नत है ✦ बाअज़ सुन्नतें इस्लाम का शआर हैं✦दाढ़ी इस्लाम का शआर है ✦ शआर को मिटाना इससे बड़ा कोई गुनाह नहीं✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

सुन्नत को छोड़ने की वजहः

(1) ग़ैरों के तरीक़ों की मुहब्बत, (2) ग़ैरों के तरीक़ों में

कामयाबी।

सुन्नत को इसलिए छोड़ा है, हुक्म मालूम है, दर्जा मालूम नहीं।

सहाबा सुन्नत पर इसलिए अमल करते थे, सुन्नत होने की वजह से।

हम सुन्नत को छोड़ते हैं सुन्नत की वजह से, छोड़ दो यह सुन्नत ही तो है।

बाअज़ सुन्नतें इस्लाम का शआर हैं।

दाढ़ी इस्लाम का शआर है। शआर को मिटाना इससे बड़ा कोई गुनाह नहीं।

अज़ान नमाज़ का शआर है, अज़ान का दार्जा बड़ा है।

अज़ान के बग़ैर नमाज़ हो जाएगी।

मुसलमान की इम्तियाज़ी शान सुन्नत पर है।

अब नाम पूछना पड़ता है सलाम करने के लिए।

मुसलमान सुन्नत का पाबंद हुए बग़ैर सलाम का मुस्तहक़ हो ही नहीं सकता।

सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से, निफ़ाक़ से बरी है।

इस काम का मक़सद अहया ए सुन्नत है।

हज़रत जी के सामने एक आदमी खड़े होकर पानी पी रहा था।

मुसलमान के अलावा किसी को सलाम करना जायज़ नहीं।

मुसलमान को पता ही नहीं कि इस्लाम में दाढ़ी का क्या मुक़ाम है।

बस इतना जानते हैं कि दाढ़ी सुन्नत है।

✦दीन की बात कहना सुनना सब इबादत है✦दावत इलल्लाह सबसे बड़ा ज़िक्र है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

दीन की बात कहना सुनना सब इबादत है।

इबादत हर उस अमल को कहते हैं जिस पर अल्लाह ने अज्र रखा है।

दीन की बात सुनने का हक़ अदा करो। इबादत को ज़ायाअ मत करो।

अमल का सवाल होगा। जितने अहकामात हैं, सबका सवाल होगा।

हर अमल अल्लाह के हुक्म से है, सुनना इबादत है।

ज़िक्र सिर्फ़ तस्बीहात पर मौक़ूफ़ नहीं है।

हर वो अमल जिससे अल्लाह की याद हो ज़िक्र है। नमाज़ भी ज़िक्र है, क़ुरआन भी ज़िक्र है।

अल्लाह का हुक्म है कि ज़िक्र अल्लाह के ध्यान से करो।

हर अमल बड़ा हो या छोटा, अल्लाह का क़ुर्ब पैदा करने के लिए है।

इल्म बग़ैर तक़्वा के नहीं आता।

नफ़्स के मुजाहिदे से अमल की इस्तदाद पैदा होती है।

अमल के साथ उसकी दावत हो।

दावत इलल्लाह सबसे बड़ा ज़िक्र है, नफ़्स के मुजाहिदे के साथ सुना जाए।

उम्मत दो हाल से ख़ाली नहीं, दाअई होगी या मदऊ होगी।

उम्मत अपने दीन की दावत छोड़ देगी तो मदऊ होगी।

(1) ग़ैरों का ख़ौफ़, (2) लालच की वजह

उम्मत दावत छोड़ देगी तो ग़ैरों के तरीक़ों की मुहब्बत आएगी। अपने दीन पर इस्तक़ामत होती है अपने दीन की दावत से। उम्मत दीन की दावत से मदऊ नहीं होगी।

✦दावत के दो असर हैं ✦ अपनी तरबियत दूसरों की हिदायत ✦ ग़ीबत ✦ तुम आमाल ए सालेहा करते हुए फिरो ✦ तुम्हारे आमाल का असर आलम पर पड़ेगा✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

दावत के दो असर हैं, अपनी तरबियत दूसरों की हिदायत।

तुम आमाल ए सालेहा करते हुए फिरो, तुम्हारे आमाल का असर आलम पर पड़ेगा।

आमाल दावत से ख़ाली हो गए, मेहनत के दो रुख़।

ग़ैरों के लिए बहुत मुख़्तसर, जैसे फ़िरऔन को दावत दी।

ग़ैरों को इतनी दावत कि इस्लाम ले आओ कामयाब हो जाओगे।

ईमान वालों को हुक्म है ईमान लाओ। ईमान वालों ईमान सीखो।

मोमिन ईमान का ज़्यादा हक़दार है। मोमिन को हुक्म है।

तक़वा मोमिन की शान है।

सहाबा को हुक्म है अपने ईमान की तज्दीद करते रहा करो।

इस कलिमा को ज़िक्र में भी लाओ। तज़्किरों में भी लाओ।

कलिमा ज़िक्र में रहा तज़्किरों में नहीं रहा। यह कलिमा ज़िक्र में है तज़्किरों में नहीं।

अल्लाह की बढ़ाई, अल्लाह की अज़मत, अल्लाह की क़ुदरत के तज़्किरे हों।

कलिमा का इख़्लास उसको हराम से रोक दे।

मोमिन की अलामतः नेकी से ख़ुशी हो। गुनाह से ग़म हो। यह ईमान की अलामत हैं।

ईमान की अलामतों से बयान करो। ईमान की एक हक़ीक़त है।

सब्र और शुक्र बहुत बड़ी दौलत है।

लोग तहक़ीक़ करते हैं। दुनिया में गोश्त किसी जानवर का सबसे ज़्यादा खाया जाता है। दुनिया में सबसे ज़्यादा गोश्त इंसान का खाया जाता है। ग़ीबत करना अपने भाई का गोश्त

खाना है।

हर जानवर के गोश्त से पेट भर जाता है। ग़ीबत से पेट नहीं भरता।

इंसान का गोश्त सबसे लज़ीज़ होता है।

✦जिस चीज़ की देखकर तस्दीक़ की जाए उसको ईमान नहीं कहते✦ नबी की बात ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होगी ✦ नबी की बात अक़्ल के ख़िलाफ़ होगी✦ नबी की बात नज़र के ख़िलाफ़ होगी✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

जिस चीज़ की देखकर तस्दीक़ की जाए उसे ईमान नहीं कहते।

आंख से इशारा भी ग़नीमत है। ग़ीबत तो ज़िना से भी बड़ा गुनाह है। सहाबा को ताज्जुब था।

ज़िना करना बुत की इबादत करना है। ज़िना पर जमने वाला बुत परस्ती पर जमता है।

इज्तिमाई ज़िंदगी में ग़ीबत ज़्यादा होती है। अंफ़रादी में कम होती है।

(1) बदगुमानी, (2) तजस्सुस, (3) ग़ीबत

अल्लाह के यहां ज़िना की तौबा है। ग़ीबत की तौबा नहीं।

जिस चीज़ की देखकर तस्दीक़ की जाए उसको ईमान नहीं कहते।

हयातुस्सहाबा पढ़ा करो। नबी की बात ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होगी।

नबी की बात अक़्ल के ख़िलाफ़ होगी। नबी की बात नज़र के ख़िलाफ़ होगी।

मेअराज के वाक़िआ में आप सल्ल की बात का मुनाफ़िक़ों ने इंकार किया।

कि जहन्नम में दरख़्त है तो जलता क्यों नहीं। (ज़ाहिर के ख़िलाफ़)

जहन्नम में ज़क़ूम की मेहमानी की जाएगी काफ़िरों के लिए। ज़क़ूम तैयार कर रखे हैं।

यह काफ़िरों के लिए तैयार हैं। एक चीज़ का इंार या आग का या दरख़्त का।

रात को मेअराज हुई, सुबह को पूरा वाक़िआ बयान किया।

ईमान की फ़िक्र करो। इम्तिहान होगा। दीन में अक़्ल का कोई दख़ल नहीं।

जो दीन का अक़्ल से समझते हैं। वो दीन में तहरीफ़ करेंगे। दीन को बदलेंगे।

कहेंगे सूद हराम है हलाल हो जाए। दीन में तहरीफ़ करेंगे कि सूद हराम है हलाल होना चाहिए।

ग़ीबतः काअब अहबार रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैंने अंबिया

साबिक़ीन की किताबों में पढ़ा है कि जो शख़्स ग़ीबत से तौबा करके मरता है वो जन्नत में सबसे आख़िर में दाख़िल होगा। और बिला तौबा योंही मर गया वो दोज़ख़ में सबसे पहले दाख़िल होगा। (तन्बीह उल ग़ाफ़िलीन)

✦सब्र और शुक्र बहुत बड़ी दौलत है ✦ अल्लाह की मदद ✦ हराम से बचना तंगियों में ✦ क़र्ज़ हो गया सूद से बचना ✦ फ़ाक़ा ✦ कुफ़्र✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

तक़दीर पर ईमान लाना, अल्लाह रज़ा और नाराज़गी पर इम्तिहान लेते हैं। फ़ाक़ा तो कुफ़्र तक पहुंचा देता है। तक़दीर पर ईमान से राज़ी होगा। जो अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी हो गया, अल्लाह उससे राज़ी। नाराज़गी से नाराज़ हो जाता है। राज़ी तो रहना पड़ेगा। फ़ाक़ा तो कुफ़्र तक पहुंचा देता है। सब्र करते हैं।

हराम से बचना तंगियों में, क़र्ज़ हो गया, सूद से बचना।

रोज़ा में खाने से बाअज़ आ गया। उस रोज़ा को सब्र कहा। इसलिए इसका बदला जन्नत है।

शुक्र उसका क्या कहना या अल्लाह तेरा शुक्रिया तो ज़ुबान की अदायदी शुक्र की अदायगी सारे जिस्म की अदायगी है। हर अज़ू को इताअत पर लाओ। एक तरफ़ शाकिर एक तरफ़ मुश्रिक। काफ़िर और शाकिर!

इब्राहीम अलिहिस्सलाम शाकिर थे। जो अपनी हाजत को पूरा होने की निस्बत करे अल्लाह की तरफ़ अल्लाह आज़माते हैं। शकिर है कि मुश्रिक। फ़ाक़ा तो कुफ़्र तक पहुंचा देता है।

असबाब ज़रूरत के लिए नहीं। इम्तिहान के लिए। हमारी तिजारत हो। चाहे सुलैमान अलिहिस्सलाम की सल्तनत हो। घोड़े लाए गए। सुलैमान अलिहिस्सलाम के पास। उनको को देखने में अस्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई। गुरूब हो गया। घोड़े पर वाले भी, खुबसूरत भी और तैरने वाले भी, उड़ने वाले भी, अब दुनिया में ख़त्म हो गए। इतना ग़म था। दुआ की अल्लाह सूरज को वापिस कर दे। अस्र पढ़ी फिर गुरूब हो गया। एक जंग हो रही थी। अस्र का वक़्त ख़त्म हो गया। दुआ की ऐ अल्लाह सूरज को यहीं रोक दे। सूरज रुका रहा। अस्र की नमाज़ पढ़ी फिर सूरज गुरूब हुआ।

वो शख़्स अल्लाह की मदद को नहीं देख सकता। जो अपने दीन को दूसरों के हवाले कर दे।

अस्हाब कहफ़ शहज़ादों की जमाअत थी, ईमान ले आए।

अपना दीन बचाने के लिए एक ग़ार में छिप गए। सूरज अपना रास्ता बदल कर निकलता रहा। इसलिए कि यहां पर वो लोग सो रहे हैं जो अपना दीन बचाने के लिए निकले हैं। तो पूरी उम्मत का दीन बचाने पर ग़ैबी निज़ाम हरकत में आएगा। अल्लाह ने असहाब ए कहफ़ को 309 साल सोने के बाद जगाया।

✦दावत का काम तस्ख़ीरे-आलम का

नुस्ख़ा है ✦ बग़ैर तक़वा के ग़ैरों पर अज़ाब नहीं आएगा ✦ बद्दुआ क़बूल होती है मज़लूम की ✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

दावत और अमल का जमा करो। यह तस्ख़ीरे-आलम का नुस्ख़ा है।

असहाब ए कहफ़ का वाक़िआ सूरज रास्ता काट कर निकल रहा है। ग़ार के पास आता है और एक शेर उनकी हिफ़ाज़त के लिए बैठा है।

तो अल्लाह की तौहीद बयान करे। उसकी ऐसी मदद, अल्लाह आज़माते हैं। सबूर में शुक्र में।

हमल ठहर जाता है दोनों दुआ करते हैं कि तूने ही किया।

जब बच्चा देते हैं, हमारे किये हुए काम में हमारे ग़ैर को शरीक करते हैं।

सुलैमान अलिहिस्सलाम के पास बिल्क़ीस का तख़्त लाया गया। तो कहा अल्लाह का फ़ज़ल है। अल्लाह का फ़ज़ल आज़माईश के लिए है। बंदे का इम्तिहान लेते हैं अपने फ़ज़ल के ज़रिये। नमाज़ के फ़ज़ल तलाश करने का हुक्म है। अल्लाह की मदद सबूर पर नहीं आती। जब तक सबूर के साथ शुक्र न हो। तक़वा भी हो।

जो हालात गुनाहों की वजह से आएंगे। उस पर अज़ाब ग़ैरों पर नहीं आएंगे।

हम चलें ग़ैरों के तरीक़ों पर, कारोबार, शादी, मुआशरा में सब्र और तक़वा। मुसलमान सारे तरीक़े पर चले ग़ैरों के तरीक़े पर।

यूसुफ़ अलिहिस्सलाम ने सब्र और तक़वा दोनों इख़्तियार किया। बग़ैर तक़वा के ग़ैरों पर अज़ाब नहीं आएगा।

बद्दुआ क़बूल होती है मज़लूम की

ईमान की सबसे अहम अलामत तक़वा है। मुत्तक़ी के लिए अल्लाह रास्ता ज़रूर निकाल देते हैं।

हज़रत मिक़्दाद को चूहे ने अशर्फ़ियां दीं। हज़रत यूसुफ़ अलिहिस्सलाम के लिए कोठरी से निकलने का रास्ता बना दिया।

सहाबी अब्दुल्लाह बिन ज़ुलबजादीन का काफ़िरों की क़ैद से निजात का मिलना और अपने साथ बकरियों को साथ लाना।

रिज़्क़ का मिलना तक़वा पर अल्लाह ने रिज़्क़ का भी इंतिज़ाम कर दिया है। यह है तक़वा की बरकत।

✦मुन्तख़ब अहादीस ✦ हयातुस्सहाबा ✦
मुन्तख़ब अहादीस का ख़ूब एहतिमाम करो
✦ यह किताब हज़रत की अमानत है ✦
जो कुछ हज़रत के दिल में था वो मुन्तख़ब
अहादीस और हयातुस्सहाबा में है✦
(मौलाना मुहम्मद साअद)

सुन्नत दो तरह की हैं: सुन्नत ए आदत, सुन्नत ए इबादत

अदीबः अदीब वो है जो सुन्नत का पाबंद हो।

जो सुन्नत से ख़ाली है वो बेअदब है।

मक्का में एक अदीब से मुलाक़ात के लिए गया। पूछा अदीब कहां हैं। कहा मैं ही तो अदीब हूं। वो अदीब ग़ैर शरअ थे। अदब से ख़ाली थे।

हम अदब सारा सीख लें। तो हम अबू जहल के अदब को नहीं पहुंच सकते।

मुन्तख़ब अहादीस का ख़ूब एहतिमाम करो। रोज़ाना एक वक़्त फ़ज़ाईल और एक वक़्त मुन्तख़ब की तालीम हो।

मुक़ाम पर एक दिन फ़ज़ाईल एक दिन मुन्तख़ब की तालीम।

मुन्तख़ब अहादीस हर फ़र्द अपनी अंफ़रादी तालीम में ला दें। और उसकी तालीम करें।

अब तो हमारे यहां उन्वानात का बयान करना ही रह गया है।

क्या 786 कह देने से बिस्मिल्लाह की बरकात कामिल हो जावेंगी।

शबगुज़ारीः शबगुज़ारी के मराकिज़ में वक़्त लगाए हुए। ज़ी-इस्तदाद मुख़्तलिफ़ अफ़कार से यकसू आलम से हयातुस्सहाबा अरबी सुनो।

मौलाना यूसुफ़ रह॰ से हटकर हम काम को समझ ही नहीं सकते। जो कुछ उनके दिल में था वो मुन्तख़ब अहादीस और

हयातुस्सहाबा में है। मुझे बड़ा ग़म है इसका कि सूबों में जमाअतें जाती हैं और वहां सुनती हैं कि अभी इसका मश्वरा नहीं हुआ। यह हज़रत की मेहनत को ज़ायाअ करना है।

मौलाना यूसुफ़ रह॰ सहाबा को जोड़कर चल रहे थे। और हम लोग छोड़कर चल रहे हैं। वो तो मौलाना यूसुफ़ रह॰ से अल्लाह ने एक काम लिया है। लिहाज़ा उनकी किताबें हर घर और हर मस्जिद में पढ़ी जाएं।

अगर यहां की इताअत न की गई, तो मरकज़ियत कहां रह गई। अब मैं आज के बाद न सुनूं।

दावत से इबादत में क़ुव्वत पैदा होगी।

✦दावत के काम का मक़सद ही अहया ए सुन्नत है✦अगर दीन मस्जिद के अंदर न आया तो मस्जिद के बाहर दीन कभी नहीं आएगा✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

इस काम का मक़सद अहया ए सुन्नत है।

अहया ए सुन्नत का मक़सद इसकी तहक़ीक़ में रहना कि मेरा अल्लाह मुझसे इस हाल में क्या चाहता है।

शैतान नहीं चाहेगा कि तरबियत हो।

शैतान चाहेगा कि हर अमल नाक़िस हो, कोई अमल कामिल न हो।

नमाज के बाद अज़कार ए मसनूना। अज़कार ए मसनूना अदा किये जाएं।

हज़रत अली रज़ि॰ ने तस्बीहात ए फ़ातिमा को नहीं छोड़ा। अज़कार पूरे किये जाएं।

मसनून दुआओं को एहतिमाम किया जाए।

दीन अगर मस्जिद के अंदर न आया तो मस्जिद के बाहर दीन कभी नहीं आएगा।

इसलिए कि मस्जिद बनने की जगह है, बाज़ार बिगड़ने की जगह।

मस्जिद के बाहर बेदीनी को माहौल है। दीन मुशाहिदे का पेश करना है। मोमिन का अपना अमल है। 24 घंटे मोमिन के। अज़कार से घिरे हुए हैं। दावत हर अमल में तरक़्क़ी के लिए है। अमल करते हुए दावत दो। दावत देते हुए अमल करो। दावत का ख़ास्सा है यक़ीन पैदा करना है कि दीन यक़ीनी बने। आख़िरत यक़ीनी बने। दीन को दावत में लाओ।

सबसे पहले दावत है ईमान की मेहनत की। और ईमान की सबसे ज़्यादा ग़फ़लत है।

ईमान वालों यक़ीन सीखो। अमल की बुनियाद ईमान है।

हुक्म के मुताबिक़ यक़ील चलाएगा। यक़ीन की तब्दीली।

किसी अमल में ईमान के बग़ैर इख़्लास पैदा नहीं होगा। ईमान, इख़्लास एक चीज़ है।

आमाल में रिया दाख़िल होगा यक़ीन के ज़ोअफ़ से।

(1) आमाल पर अजूर (2) आमाल पर इस्तक़ामत (3) वादों का पूरा होना (4) इख़्लास होना। ये चार चीज़ें ईमान से शामिल होती हैं। अमल होगा लेकिन वादे पूरे नहीं होंगे।

✦सारी नेकियों की मदार तौहीद पर है✦अहकामात के इल्म से फ़राग़त हो जाएगी ✦ तौहीद से कभी फ़राग़त नहीं ✦

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

ईमान को हासिल करने के 4 रास्तेः

(1) अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को बोलना शुरू करो। अल्लाह की ज़ात से दावत निकल गई। आख़िरत को दोज़ख़ को भुलाया। पहले अल्लाह को भूलेगा। फिर आख़िरत को भूलेगा। अल्लाह को याद रखेगा। तो आख़िरत को याद रखेगा। कलिमा दावत से निकल गया। इसलिए इसका बोलना कलिमा के ख़िलाफ़ हो गया।

अल्लाह के ग़ैर की नफ़ी ताल्लुक़ पैदा करने वाली चीज़ है। क़ुर्ब

क़ुर्ब अल्लाह की तरफ़ दावत देने में है।

तौहीदः तमाम नेकियों को मदार तौहीद पर है। तज़्किरे ग़ैरों के। ज़िक्र ग़ैरों का, मुहब्बत ग़ैरों की।

कलिमा के अंदर तक़ाज़ा है कि अल्लाह से होने की तस्दीक़ की जाए और कलिमा के अंदर तक़ाज़ा है अल्लाह के ग़ैर की नफ़ी।

ला इलाहा इललल्लाह की तस्दीक़ करो। और तकज़ीब करो यानि अल्लाह से होने का और ग़ैर से न होना।

अहकामात के इल्म से फ़राग़त हो जाएगी। तौहीद से कभी

फ़राग़त नहीं है। अल्लाह की तौहीद को और उसकी वहदानियत को बयान करो। करने वाली ज़ात महज़ अल्लाह की है। अल्लाह के ग़ैर से कुछ नहीं होता। अंबिया भी मोहताज हैं। मुख़्तार नहीं। किसी को हिदायत नहीं दे सकते। अल्लाह के हाथ में है हिदायत।

सारे नबी मिलकर एक फ़र्द को हिदायत नहीं दे सकते। इख़्तियार अल्लाह के पास है।

मोअजज़ा अल्लाह देते हैं अपने ताअर्रूफ़ के लिए। और नबी को सच्चा साबित करने के लिए।

हम सुबह से शाम तक इतने वादे करते हैं, इंशा अल्लाह नहीं कहते।

15 दिन तक वह्यी नहीं आई। कल मैं यह बता दूंगा। इंशा अल्लाह क्यों नहीं कहा। उलेमा ने लिखा है कि अहकामात का इल्म अमल के लिए है। अमल के लिए अहकामात के इल्म से फ़राग़त हो जाएगी। लेकिन ईमान वाले को अल्लाह की तौहीद से फ़राग़त नहीं कि इतना कहना काफ़ी नहीं कि हम जानते हैं अल्लाह एक है। बल्कि रोज़ाना अल्लाह की तौहीद बयान करो। इसका हुक्म है।

✦दावत और दुआ✦अल्लाह को दावत और दुआ पसंद है ✦ दावा पसंद नहीं✦

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

अल्लाह को दावत और दुआ पसंद है। दावा पसंद नहीं।

15 दिन वह्यी नहीं आई। 15 दिन बाद वह्यी आई। आप इंशा अल्लाह कह लिया करें। नबी से कहा जा रहा हैं यह है दावत कलिमा की। अपने उमूर को अल्लाह के हवाले करो। दावत और दुआ के ज़रिये यों लोगों को हिदायत मिलती है।

असबास से मायूस होकर, असबाब से उम्मीद लगाए हैं। जो कुछ बना हुआ है ताअर्रूफ़ के लिए है। अल्लाह की ज़ात से फ़ायदा हासिल करना है। एक सुन्नत इस कायनात से ज़्यादा अफ़ज़लियत और क़ुव्वत रखती है।

मोमिन को एक अमल पर और एक सुन्नत पर जो हूर मिलगी, सब मिलकर उसकी क़ीमत नहीं दे सकते। जब पहचान का रास्ता ख़त्म हो जाएगा तो इस कायनात को ख़त्म कर दिया जाएगा।

जो कुछ बना हुआ है अल्लाह के ताअर्रुफ़ के लिए है। न ज़मीन से ग़ल्ला, न दुकान से नफ़ा, न दवा से शिफ़ा, न डाक्टर के हाथ में शिफ़ा। शिफ़ा अल्लाह के हाथ में है। न मर्द औरत से बच्चा। इसको बार बार बोलना पड़ेगा कि अल्लाह की ज़ात से फ़ायदा उठाने के लिए। अहकामात हैं।

अल्लाह का कायनात पर कोई वादा नहीं। वादा होता तो कोई भी कायनात में नाक़ाम नहीं होता।

असबाब के साथ, क़ुदरत भी नहीं। वादा भी नहीं।

क़ुदरत हुक्मों के साथ। वादे हुक्मों के साथ। पूरी ज़िंदगी को इताअत पर लाओ, नेकी हैं दिल का रुख़ सही हो। अल्लाह की क़ुदरत को, अल्लाह की अज़्मत को, अल्लाह की बढ़ाई को

बोला करो। यह हमारा मौज़ुअ हो। गश्तों में मुलाक़ातों में अंबिया के साथ अल्लाह की ग़ैबी मददें हुई। अंबिया के वाक़िआत को बयान करो। अल्लाह ने इब्राहीम अलिहिस्सलाम की आग में किस तरह मदद की।

मूसा अलिहिस्सलाम की पानी में किस तरह मदद की।

हज़रत हजूर बिन अदी रज़ि के सहाबी के लिए जेल की कोठरी मे बादल का टुकड़ा आकर बरसा। उनको ग़ुस्ल की हाजत थी, पानी नहीं था, अल्लाह ने मदद की।

असबाब पर निगाह रखकर अल्लाह से उम्मीद करना कुफ़्र का रास्ता है। (मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह०)

✦आमाल और दुआ✦ अल्लाह ने दुआओं को आमाल के साथ जोड़ा है ✦ इबदात के साथ जोड़ा है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

अल्लाह की मदद का ज़ाब्ता के साथ है। ज़माना के साथ नहीं है।

क़यामत तक, जब तक उम्मत ज़ाब्तों पर रहेगी, मदद का वादा है। क़यामत के दिन तक। माद्दी चीज़ों का यक़ीन ग़ैर की तरफ़ ले जाएगा। सहाबा कराम के साथ ग़ैबी मदद और बरकतों के वाक़िआत ख़ूब बयान किया करो। इससे अल्लाह के साथ उम्मीद बनेगी। इन आमाल पर यक़ीन आवेगा। ईमान वाला कहता है असबाब बनाना हमारे ज़िम्मा। काम बनाना अल्लाह के

ज़िम्मा। तुम अमल बनाओ। अल्लाह तुम्हारे काम बनाएंगे। मुसलमान कहता है कि असबाब बनाकर पेश करो, फिर दुआ करो। लोग असबाब बनाते हैं, फिर दुआ मांगते हैं।

अल्लाह ने दुआओं को असबाब के साथ नहीं जोड़ा है, आमाल के साथ जोड़ा है। पहले सबब बनाओ फिर दुआ करो। यह हो रहा है। अल्लाह का असबाब पर कोई वादा नहीं। जब अल्लाह अपने बनाए हुए असबाब के पाबंद नहीं तो हमारे बनाए हुए असबाब के पाबंद कैसे हो सकते हैं? तीन आदमी एक ग़ार में दाख़िल हुए और ग़ार का दरवाज़ा बंद हो गया।

हर एक ने अल्लाह के सामने अपना अमल पेश किया।

मामलात, मआशरत, अख़्लाक़ पेश किया।

(1) मज़दूर मज़दूरी लिये बिना चला गया, उसकी मज़दूरी से नफ़ा हासिल किया था।

(2) दूसरे ने मुआशरा का अमल पेश किया। अल्लाह के ख़ौफ़ से बुराई से रुक गया।

(3) तीसरे ने अमल पेश किया, वालिदैन के साथ सलूक। वालिदैन को दूध पेश किया।

अल्लाह ने दुआओं को इबादात के साथ जोड़ा है। आमाल के साथ जोड़ा है।

सहाबा के साथ अल्लाह की मदद।

निज़ाम ए कायनात से जोड़ना शिर्क है। निज़ाम ए कायनात को कायनात से जोड़ना, इसको शिर्क कहते हैं और निज़ाम ए कायनात को ख़ालिक़ ए कायनात से जोड़ना, इसको ईमान कहते हैं।

✦सहाबा के साथ अल्लाह की मदद ✦ एक ईमान वाले की मददें सहाबा के बराबर होंगी✦एक ईमान वाले को पचास सहाबा के बराबर अज्र मिलेगा✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

एक ईमान वाले की दस सहाबा के बराबर मदद होगी और

एक ईमान वो को पचास सहाबा के बराबर अज्र मिलेगा।

सहाबा अल्लाह की मददों को देख रहे थे। जो मेरे बाद ईमान लाएंगे।

अगर हमने असबाब से ग़ैरों का मुक़ाबला किया।

तो जिस के पास असबाब ज़्यादा होंगे, वो कामयाब होगा।

ईमान को ईमान की अलामतों से बयान करो। जो इल्म और ईमान को चाहेगा उसको देगा।

नेकी खुश करे, गुनाह ग़मगीन करे। कि जान ले कि तू मोमिन है।

यक़ीन ख़राब हो जाए, तो गुनाह पर ख़ुशी होगी।

जो गुनाह करके ख़ुश होगा, उसको तौबा की कभी तौफ़ीक़ नहीं होगी।

जो बड़े गुनाह पर तौबा करे, तो माफ़ हो जाता है।

जो गुनाह न करे, न तौबा इस्तग़फ़ार करे, तो अल्लाह

तआला इस्तग़फ़ार करने वाली क़ौम पैदा करेगा।

जो गुनाह करे और तौबा इस्तग़फ़ार करे, अल्लाह को तौबा इतनी पसंद है।

(1) नमाज़ छोड़ने वाले कहेंगे असबाब असल हैं, आमाल से क्या होगा।

(2) आमाल भी, असबाब भी, दोनों को लेकर चलेगा।

(3) आमाल में कामयाबी का यक़ीन होगा। वो नमाज़ को बनाएगा।

तिजारत के अहकाम तो सवाले से और हराम से बचान के लिए दिये गए हैं।

अल्लाह वादा ख़िलाफ़ नहीं है।

असबाब पर कोई वादा नहीं।

✦इल्म सीखना फ़र्ज़ ए ऐन है ✦ इल्म नमाज़ की तरह फ़र्ज़ है✦इल्म वो है जो क़ुरआन और हदीस में है ✦ इसके अलावा सब फ़न हैं✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि ने दमिश्क़ की मस्जिद में एक शख़्स को नमाज़ पढ़ते हुए देखा। तो पूछाः तुम इस तरह से नमाज़ कितने दिनों से पढ़ रहे हो।

उसने कहाः चालीस साल से। हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहाः अगर

तुम्हारी मौत इसी हाल में आ गई, तो तुम क़यामत में मुहम्मद ﷺ के दीन पर नहीं उठाए जाओगे।

नमाज़ में सकून पैदा करो। नमाज़ इत्मिनान से पढ़ो।

जो रुकुअ से उठकर सीधा खड़ा न हो अल्लाह उसकी तरफ़ रहमत की नज़र से नहीं देखते।

उसकी नमाज़ की तरफ़ नज़र उठाकर भी नहीं देखते।

इबादत में तबीयतें नहीं चलतीं।

अमल तो एक फ़रिश्ता लिख लेता है, अज्र तो अल्लाह खुद देंगे।

रोज़े का बदला खुद देंगे।

इल्म वो सीखे जिसको आलिम बनना हो। इल्म सीखना फ़र्ज़ ए ऐन है।

असबाब हों या न हों, फ़र्ज़ ए ऐन है। इल्म नमाज़ की तरह फ़र्ज़ है।

अल्लह ने सीखने के लिए उम्र दी, नबी भेजे सिखाने के लिए।

इल्म अमल का इमाम है। अपने अमल को इल्म के ताबेअ करो।

एक आदमी मुख़्लिस तो है, लेकिन जाहिल है।

उसने उस वक़्त रोज़ा रखा जब रोज़ा रखने का हुक्म नहीं है।

नमाज़ उस वक़्त पढ़ रहा है जिस वक़्त नमाज़ का वक़्त नहीं है। जैसे अस्र बाद नफ़िल पढ़ रहा है।

यह गुनाहगार है। ग़ैरों के फ़नून से पलने का यक़ीन है। अल्लाह वाले इल्म से पलने का यक़ीन नहीं।

जितने फ़नून हैं लोगों के तजुर्बे हैं। मख़्लूक़ के तजुर्बे हैं।

✦इल्म वो है जो क़ुरआन और हदीस में है इसके अलावा सब फ़न है✦ सब बड़ी जिहालत हर चीज़ को इल्म समझना✦

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

मुसलमान ग़फ़लत में पड़ा हुआ है, सबसे बड़ी जिहालत हर चीज़ को इल्म समझना कोई डाक्टरी पढ़ रहा है।

कोई इंजिनियरिंग, कोई साइंस पढ़ रहा है। इसको वो इल्म समझ रहा है।

सारा इल्म क़बर के तीन सवालातः मोहक़्क़िक़ उलेमा से पूछ कर तफ़सीर पढ़ा करें, शेख़ुल हिंद की तफ़सीर।

अब लोग साइंस पढ़ रहे हैं कि मैं साइंस का इल्म हासिल कर रहा हूं। एक डाक्टर मिले कि मैं इल्म हासिल करने जा रहा हूं। वो जिहालत है। इसको इल्म समझ रहे हैं। दुनिया के उलूम और फ़नून को हासिल करना। यह ज़माना जिहालत में फ़ख़्र था। नबियों के इल्म का मज़ाक़ उड़ाया। तो अल्लाह ने मिटा दिया।

इल्म वो है जो क़ुरआन व हदीस में है। इसके अलावा सब फ़न है। उम्मत इल्म पर आवे।

मैंने सारे उलूम हासिल कर लिए। हज़रत उमर रज़ि. सारे उलूम हासिल करने के बाद, तौरात पढ़नी चाही। चंद औराक़ लेकर हाज़िर हुए। हुज़ूर ﷺ को इतना गुस्सा आया। गुस्सा इस

बात पर कि उमर रज़ि ने तौरात क्यों पढ़ी। अगर मूसा अलिहिस्सलाम आ जाऐं, तो उनकी निजात का कोई रास्ता नहीं। सिवाए मेरे तरीक़े के, अल्लाह वाले इल्म से जाहिल रहे। इसलिए अब उम्मत धोका में पड़ चुकी है कि जो कुछ दुनिया में सीखो सब इल्म है। उम्मत को जिहालत से निकाला जाए। हयातुस्सहाबा ख़ूब पढ़ा करो। यह काम अल्लाह का है जिससे चाहे ले ले। तुफ़ैल इब्ने उमर दौसी रज़ि 80 घरानों के इस्लाम में दाख़िल होने का ज़रिया बने।

ग़ैरों के फ़नून से पलने का यक़ीन है। सबसे ज़्यादा साइंस है जिसने मुसलमानों को अल्लाह से काटा। साइंस में अल्लाह के ग़ैर से होना पढ़ाया ही जाता है। साइंस का खुलासा अल्लाह के दरम्यान हायल हो जाए। अंग्रेज़ी से पलने का यक़ीन है रब से पलने का यक़ीन नहीं। अल्लाह वाले इल्म से पलने का यक़ीन नहीं। सबसे बड़ी जिहालत हर चीज़ को इल्म समझना। सांइस का इल्म, डाक्टरी का इल्म, इंजिनयरिंग का इल्म, अंग्रेज़ी का इल्म, अख़बार समझकर पढ़ते हैं, अंग्रेज़ी समझकर पढ़ते हैं, इंजिनयरिंग समझकर पढ़ते हैं, क़ुरआन समझकर नहीं पढ़ते। लोग अंग्रेज़ी ज़बान सीखते हैं, अल्लाह के दुश्मनों की ज़बान है, अरबी अल्लाह के नबियों की ज़बान है।

✦क़ुरआनी मक्तब✦मस्जिद मस्जिद मक्तब की शक्ल क़ायम करो✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

मस्जिद मस्जिद मक्तब की शक्ल क़ायम की जाए। मक्तब के लिए इमारत नहीं बनाना। मेज़, कुर्सी, तिपाई नहीं बनानी है,

हर मस्जिद में मक्तब क़ायम हो सकता है। हर मस्जिद में कुछ जगह ऐसी होती है जो ख़ाली हो।

क्यों न हमारे साथी क़ुरआन पढ़ा दिया करें। तन्ख़्वाह का कोई मसला ही नहीं।

रोज़ाना की मुलाक़ातों में घर घर इसकी बात चलाएं। कि आप लोग अपने बच्चों को क़ुरआन की तालीम के लिए, क़ुरआन सीखने के लिए, अपने बच्चों को मस्जिद में भेजें। इंग्लैंड में सबसे अच्छा निज़ाम है इसका। इंग्लैंड में कोई मस्जिद मकतब से ख़ाली नहीं है।

जिस एहतिमाम से बच्चा स्कूल जाता है, उसी एहतिमाम से मक्तब लाया जाता है।

हवादिस ए ज़माना ने इल्म को मस्जिद से निकाल दिया।

(मौलाना इल्यास)

मौलाना इल्यास रह॰ के ख़तूत में बाक़ायदा मक्तब की ज़रूरत, क़ायम करना, और इसकी तन्ख़्वाह का इंतज़ाम करने का ज़िक्र मिलता है। इसलिए ज़रूरत है कि मस्जिद मस्जिद मक्तब की शक्ल क़ायम करो।

किसी एहतिमाम की ज़रूरत नहीं है। इख़्लास को हमारे साथी न समझ सके। एक साथी क़ारी है, ढाई घंटे के साथ एक घंटा मस्जिद में बच्चों को क़ुरआन पढ़ाते हैं, बहुत ख़ुशी हुई सेहत ए क़ुरआन के बग़ैर नमाज़ ख़तरे में है। अगर सही क़ुरआन पढ़ना नहीं सीखा तो ज़िंदगी भर सही तिलावत के अजूर से महरूम रहेगा। हुज़ूर ﷺ सबसे पहले हाफ़िज़ थे।

आप ﷺ की ज़िंदगी में बीस हाफ़िज़ थे।

क़ुरआन के पांच हुक़ूक़ हैं: (1) क़ुरआन पाक को सीखना, (2) क़ुरआन को समझना, (3) क़ुरआन को सिखाना, (4) क़ुरआन की तिलावत करना, (5) क़ुरआन पर अमल करना।

अरबी ज़बान से तीन वजह से मुहब्बत करना चाहिए:

(1) हुज़ूर पाक ﷺ की ज़बान है, (2) क़ुरआन पाक की ज़बान है, (3) आख़िरत की ज़बान है।

✦हयातुस्सहाबा ✦ अल्लाह के रास्ते की नक़ल व हरकत ✦ आलम बादल की तरह है✦ उलेमाकराम का मुक़ाम ✦ मर्तबा ✦ अज़मत ✦ मुहब्बत ✦ अल्लाह वालों की सोहबत✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

दीन उस वक़्त तक ज़िंदा रहेगा। जब तक नक़ल व हरकत आम रहेगी।

इल्म के साथ नक़ल व हरकत होगी। जिहालत ख़त्म होगी। सुन्नत को छोड़कर नक़ल व हरकत होगी।

बिद्अत फैलेगी। जो शख़्स जिहालत की वजह से गुनाह करेगा, सज़ा पावेगा।

यह न कहो अनजाने में गुनाह किया, मालूम न था। उम्र दी सीखने के लिए, नबी भेजे मालूमात, इल्म सिखाने के लिए। इसलिए दीन सीखना फ़र्ज़ ए ऐन है। तब्लीग़ में हम प्रोग्राम

बनाकर चल रहे हैं। जो यह कहे कि हम इतनी देर तालीम करते हैं, वक़्त का ताय्युन है। वो तब्लीग़ नहीं तन्ज़ीम है। दावत की नक़्ल व हरकत पूरे दीन को सीखने के साथ है। हम कहते हैं जिसको इल्म सीखना है आलिम के पास आए।

क्योंकि प्यासा कुंएं के पास आता है, कुंआ पर आता है। कुआं उनके पास नहीं जाएगा। ऐसा कहना जिहालत है। आलिम कुआं नहीं बादल की तरह है। आप सल्ल ने फ़रमाया आलिम बादल की तरह है।

कुंआ में पस्ती है, बादल में बुलंदी है। कुआं में जमूद है, बादल में हरकत है। कुआं से एक जगह सैराब कराना होता है। बादल मुल्कों को एक साथ कई ज़मीन के हिस्से सैराब कराता है। उलेमाकराम का मुक़ामः उलेमा अंबिया के वारिस हैं, उलेमा नायब ए रसूल हैं। उलेमा से मुहब्बत किया करो। उलेमा का मुक़ाम बहुत ऊँचा है, उलेमा की ज़ियारत को इबादत यक़ीन करो। (मौलाना यूसुफ़ रह.)

एक आलिम शैतान पर हज़ार आबिदों से ज़्यदा से भारी है। उलेमाकराम की क़द्र करो, उलेमाकराम का हल्कापन दिल में आ गया। तो अल्लाह पाक उसकी औलाद को इल्म से महरूम कर देंगे। जो शख़्स उलेमाकराम की तौहीन करेगा, क़बर में उसका चेहरा क़िब्ला से फिर जाएगा, जिसको न यक़ीन हो देख ले।

(मशायख़ चिश्त)

हज़रत रसूल पाक ﷺ के चेहरा ए अनवर की ज़ियारत एक हज़ार की इबादत से अफ़ज़ल है। अल्लाह वालों की सोहबत में थोड़ी देर बैठना सौ साल की नफ़िल इबादत से अफ़ज़ल है। ईमान की अलामत उलेमा से मुहब्बत और उलेमा

की सोहबत से इल्म का हासिल करना, अगर इल्म से इल्म की और उलेमा की अज़मत पैदा नहीं हो रही है तो यह जिहालत है। अहले इल्म और अहले ज़िक्र और मशायख़ की ज़ियारत बहुत अज़ीम है।

✦अज़ान क़ौली और अमली दावत है ✦ यह रास्ता तौबा का है ✦दीन मुजाहिदे से फैलता है ✦ बातिल राहत से फैलता है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

अज़ान की पांच सुन्नतेः (1) ध्यान से सुनना, (2) कलिमात का जवाब देना, (3) अज़ान के ख़त्म होने पर कलिमा तैयबा पढ़ना, (4) दुरूद शरीफ़ पढ़ना, (5) अज़ान के बाद की दुआ पढ़ना।

बात के सुनने का हक़ अदा करो। सुनने का हक़ अदा न हुआ तो अमल का हक़ अदा न होगा।

यह पहली शर्त है। पहला ज़िक्र सुनना है।

अल्लाह का नाम भी ज़िक्र है। सुनना भी ज़िक्र है। और अल्लाह के हुक्म का पूरा करना भी ज़िक्र है।

इसलिए कहना, सुनना सब ज़िक्र है। अपने बैठने को ज़िक्र बनाओ।

नफ़्स के मुजाहिदे से सुनो। नफ़्स के मुजाहिदे में नूरानियत है।

दीन मुजाहिदे से फैलता है। बातिल राहत है। अमल की दावत है।

सुनने और जानने के लिए नहीं। अमली दावत है।

हज़रत अली रज़ि से पूछा वुज़ू के बारे में आपने अमल करके बताया।

अज़ान क़ौली और अमली दावत है। क़ौली यह है कि अज़ान के अल्फ़ाज़ दोहराओ।

और अमली यह कि अमल करके दिखना, दावत इबादात में तरक़्क़ी के लिए है।

माअरूफ़ात इसलिए कि माअरूफ़ात पर अमल और मुन्किरात इसलिए कि मुन्किरात को छोड़ दें।

दावत को दाअई की निजात का सबब बनाया है। दावत अपनी और दीन की हिफ़ाज़त का ज़रिया है।

जिनकी हलाकत का अल्लाह ने फ़ैसला कर लिया।

तो दाअई को निजात मिलेगी। दीन को सामने रखकर हिजरत करो।

जब तक तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है जब तक हिजरत बाक़ी है।

यह रास्ता तौबा का है। जो तौबा करने वाला है और तौबा करने वाला अमल की तरफ़ बुलाने वाला।

अमल करने वालों से आगे बढ़ जाता है।

दाअई की मेहनत ज़ायाअ नहीं होगी। मेहनत का अज्र और असर पाएगा। पचास सहाबा के बक़द्र एक मोमिन को अज्र मिलेगा। ओर एक मोमिन की मदद होगी दस सहाबा के बराबर।

आख़िरत का एक दिन दुनिया के हज़ार दिन के बराबर है।

✦दावत फ़र्ज़ ए ऐन है ✦ ईमान सीखना फ़र्ज़ ए ऐन है✦दावत के काम का बुनियादी मक़सद हर मस्जिद में ईमान के हलक़े क़ायम हों✦

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

फ़ेरी वालकी दावत में जाज़्बियत है। मुजाहिदे निकला है। क़ुर्बानी दे रहा है।

तो घरों से बच्चे, औरतें सामान लेने के लिए निकल आती हैं।

दावत में इतनी जाज़्बियत है, दावत फ़र्ज़ ए ऐन इसलिए कि अपने लिए

जो दूसरों के लिए वो फ़र्ज़ ए किफ़ाया, नमाज़ जनाज़ फ़र्ज़ ए किफ़ाया है।

दावत अपने लिए फ़र्ज़ ए ऐन, दूसरों के लिए फ़र्ज़ ए किफ़ाया।

अपनी ज़िंदगी में दीन लाना फ़र्ज़ ए ऐन है। ईमान सीखना फ़र्ज़ ए ऐन है।

इतना सीखना फ़र्ज़ ए ऐन है कि हराम से रोक दे। कलिमा का इख़्लास उसको हराम से रोक दे। ईमान इख़्लास है। दावत से कलिमा का इख़्लास चाहिए, अल्लाह का हुक्म है ईमान वालों, ईमान सीखो। सहाबा का हुक्म है कि अपने ईमान का नया करो।

एक कलिमा का ज़िक्र और एक है कलिमा के तज़्किरे।

दुनिया असबाब से भरी हुई है। माल की बड़ाई, उनकी बड़ाई से मुहब्बत पैदा होगी।

ईमान की दावत खुद ईमान वालों के लिए। इस्लाम को अमल से पेश किया जाए।

मुशाहिदे का इस्लाम पेश नहीं किया। इस्लाम मुतालिआ से नहीं मुशाहिदे से फैलेगा।

काम का बुनियादी मक़सद हर मस्जिद में ईमान के हलक़े क़ायम हों। सहाबा ईमान की मज्लिसें क़ायम करते थे।

अल्लाह का ज़िक्र तो है, अल्लाह के तज़्किरे नहीं हैं। जिसके तज़्किरे होंगे उसका यक़ीन होगा। अल्लाह को लाओ तज़्किरों में। करने वाली ज़ात अल्लाह की है। ताकि चीज़ों का यक़ीन निकले। और अल्लाह का यक़ीन बने।

यक़ीन बनने का रास्ता दावत है। ईमान की दावत खुद मोमिन के लिए है जो अल्लाह के ग़ैर से उम्मीद रखेगा, अल्लाह उसे ग़ैर के हवाला कर देगा।

✦अल्लाह सहाबा का इम्तिहान लेते थे ✦ नबी की बात की तस्दीक़ करो ✦नबी के एतेमाद पर ✦ दीन का मदार अक़्ल पर नहीं है हुक्म पर है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

करने वाली ज़ात अल्लाह की है। तो करने के ज़ाब्ते मुहम्मद सल्ल के तरीक़े हैं।

दुनिया में ईनाम और बदला आख़िर में। यह रास्ता मोमिन का है।

असबाब अल्लाह के करने के ज़ाब्ते नहीं। सबसे पहले अल्लाह के ग़ैर की नफ़ी है।

अल्लाह के नबी के साथ ज़ाहिर के ख़िलाफ़ करते हैं। मेअराज का वाक़िआ।

रात में महीनों का सफ़र और सुबह तक वापसी। अक़्ल से लेंगे, मरतद हो गए।

नबी की अदना सुन्नत तक, उम्मती की अक़्ल नहीं पहुंच सकती। नबी की ख़बर अक़्ल के ख़िलाफ़ होगी।

नबी की ख़बर नज़र के ख़िलाफ़ होगी, नबी की ख़बर ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होगी। अल्लाह ने अक़्ल को पैदा किया। और अक़्ल के 100 हिस्से किये। एक हिस्सा अक़्ल का सारी मख़्लूक़ को, 99 हिस्से आप ﷺ को दिये।

हमारी अक़्ल बहुत नाक़िस है। दीन का मदार अक़्ल पर नहीं हुक्म पर है। ख़बर का मदार यक़ीन पर है।

क़िब्ला बदला कि कौन इताअत करता है। उनको ताअना मिला कि हमारी नमाज़ ज़ायाअ हो गईं।

इताअत से इताअत की तरफ़, हुक्म से हुक्म की तरफ़ आए।

अल्लाह सहाबा का इम्तिहान लेते थे। नबी की बात की तस्दीक़ करो। नबी के एतेमाद पर घोड़ा ख़रीदने का वाक़िआ।

गवाह लाओ। गवाह कोई नहीं। बात दो के दरम्यान हज़रत खुज़ैमा रज़ि ने गवाही दी कि आपने घोड़ा ख़रीदा है। इसलिए कि आप ने इतनी बड़ी चीज़ों की ख़बर दी है। क़बर की, हश्र की, आख़िरत की, जन्नत की, जहन्नम की ख़बर दी है। दावत हुक्मों के साथ, हुक्मों के साथ क़ुदरत है।

दाव शिफ़ा का ज़रिया नहीं मज़हर है। ज़रिया तो दुआ है।

आमाल ज़रिया हैं, असबाब ज़रिया नहीं। असबाब के साथ क़ुदरत भी नहीं, वादा भी नहीं।

लोग असबाब में नाकाम होते हैं। अल्लाह का वादा असबाब में नहीं है।

कायनात नबी है ताअर्रुफ़ के लिए। अज़ाब ज़ाहिर हो जाए, तो ईमान लाना बेकार।

अंबिया के साथ ज़ाहिर के ख़िलाफ़ जो हुआ, उसको बयान करो।

✦जो यक़ीन अख़बार पर है क़ुरआन पर नहीं✦अख़बार पढ़ते हैं सुबह क़ुरआन नहीं पढ़ते✦

मौलाना मुहम्मद साअद

जो यक़ीन अख़बार पर है क़ुरआन पर नहीं। इसलिए अंबिया के वाक़िआत बयान किया करो। क़ुरआन तो क़यामत तक के लिए सारे वाक़िआत बता रहा है। दुनिया के निज़ाम को अल्लाह के ज़ाब्ता समझ बैठे।

यह बुनियादी ग़लती है। अल्लाह का ज़ाब्ता निज़ा

है। निज़ाम ए दुनिया नहीं।

सारा निज़ाम अल्लाह का ग़ैर है। ज़मीन से ग़ल्ला, औरत से बच्चा, दरख़्तों से फल, आसमान से बारिश, दवा से शिफ़ा, जब दावत निज़ाम ए दीन की कि अल्लाह का ज़ाब्ता निज़ाम ए आलम नहीं है।

आमाल को असबाब पर मक़दम किया जाए। असबाब इम्तिहान के लिए। असबाब नहीं तो इम्तिहान नहीं।

सहाबा के साथ ग़ैबी मददें और बरकतों के वाक़िआत और नबियों के साथ जो मददें हुईं, उनको ख़ूब बयान करो।

हज़रत अबू हुरैराह रज़ि के पास मुट्ठी भी खजूरें, लश्कर में से 10-10 को बुला लाओ, जो अल्लाह की मदद का मुन्किर होगा, अल्लाह की मदद को कभी नहीं पाएगा। दुआओं को इबादात से जोड़ा है असबाब के साथ नहीं।

असबाब बनाकर ग़ैर भी दुआ करते हैं। अगर मुसलमान भी यह कहे, असबाब बनाकर दुआ करो, मैं खजूरे खाता रहता। जो ज़मीन से ले रहे, वो अल्लाह के ख़ज़ाने से नहीं ले रहे हैं। जो ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोलेगा, अल्लाह उनके साथ नहीं ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोलने वाला मिज़ाज बनाओ। अबू हुरैराह रज़ि ने एक हज़ार पचास मन खजूरें खाईं जो गुनाह पर अड़ेगा, उसके सग़ाईर कबाईर बन जाएंगे।

गुनाहों पर तौबा करने से कबाईर भी माफ़ हो जाते हैं।

अगर मजमाअ में अख़बार पढ़कर सुनाया जाए सबको हैरत होगी।

अख़बार समझकर पढ़ते हैं, अख़बार निरा झूठ है।

✦सुन्नत के बग़ैर कोई विलायत नहीं✦पूरी दुनिया के चोर और मुजरिम सारे मिलकर पुलिस के हक़ में बद्दुआ करें तो उन पर अज़ाब नहीं आएगा✦

«मौलाना मुहम्मद साअद»

तीन क़िस्म के लोग हैं: (1) आमाल से क्या होगा, असबाब से होगा।

(2) आमाल भी असबाब भी हैं, दोनों को लेकर चलो, जमा करो।

अमल तो करेंगे, अमल को बिगाड़ेंगे सबब के लिए।

(3) असबाब को बिगाड़ेगा अमल की वजह से।

एक सहाबी ने कहा: तिजारत के लिए बहरीन जाना चाहता हूं।

आप सल्ल ने फ़रमाया अल्लाह को साथ ले लो। यानि घर पर दो रकअत नफ़िल पढ़ लेना।

जो सबब को असल समझेगा, हराम इख़्तियार करेगा।

अल्लाह की क़ुदरत अमल के साथ, वादा हुक्मों के साथ।

सबूर हराम से बचने के लिए, पहले तहारत है नमाज़ के लिए, तहारत को आधा ईमान कहा।

पहले तहारत है, फिर इबादत है। वुज़ू और ग़ुस्ल से तो ज़ाहिर को पाक किया। बदन का ख़ून भी ज़ाहिरी तक़वा है।

हराम खाते हैं मामूली समझकर। लुक़्मा समुंद्र है। ख़्यालात मोती हैं।

आज मुसलमान पूरी दुनिया में बद्दुआएं कर रहे हैं। मुसलमान जब तक ग़ैरों के तरीक़ों से अलग नहीं हो जाते। उनके हक़ में बद्दुआ क़बूल नहीं होगी। जैसे चोर और मुजरिम भी बद्दुआएं और सब्र करते हैं। सब्र तो कर रहे हैं लेकिन मुजरिम हैं, पूरी दुनिया के चोर और मुजरिम सारे मिलकर पुलिस के हक़ में बद्दुआ करें तो उन पर अज़ाब नहीं आएगा। आज चाहे जितनी उनके लिए बद्दुआ करो, अज़ाब नहीं आएगा।

ग़ैरों के तरीक़ों में इज़्ज़त नज़र आ रही है। सुन्नत के बग़ैर कोई विलायत नहीं।

विलायत कहते हैं अल्लाह का दोस्त बनना। चाहे कोई करामत ज़ाहिर न हो।

अपनी कमाई को हलाल पर लाओ। सुअर को हराम समझ रहे हैं सूद को नहीं समझते।

दुनिया में हर वक़्त 14 क़ुतुब, 40 अब्दाल और 500 अल्लाह के बरगज़ीदा नेक लोग मौजूद रहते हैं।

✦मश्वरा✦मश्वरा इज्तिमाई अमल है ✦ आमाल ए दावत में से है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

मश्वरा इज्तिमाई अमल है। आमाल ए दावत में से है। मश्वरा में राय तय हो जाए तो इस्तग़फ़ार करे न तय हो तो

शुक्र करे। राय देना अपना हक़ नहीं समझना चाहिए। राय देना काम का हक़ है। जैसे मुक़्तदी को इमाम को लुक़्मा देना नमाज़ का हक़ है। अमीर की राय एक तरफ़। साथियों की राय एक तरफ़। तब भी इताअत शर्त है। फ़ैसला के बाद अपने को तांबेअ कर दे। अपनी राय पर ज़िद न करे। मश्वरा के बाद अपनी राय पर जमे। तो असयान पैदा होगा। इताअत ख़त्म हो जाएगी।

मश्वरा में बड़ी बड़ी बरकतें छिपी हुई हैं। जैसे ख़न्दक़ के मौक़ा पर क़ैसर व किसरा के फ़तह की ख़ुशख़बरी मिली। और चंद आदमियों का खाना पूरे लश्करे मदीना ने खाया। इसके पीछे मश्वरा मिलेगा। मश्वरा के ताबेअ रहने वाला ख़ैर पर रहेगा। इज्तिमाईयत बाक़ी रहेगी। जिस तरह नमाज़ में एक इमाम होता है। बाक़ी सब मुक़्तदी हैं। नमाज़ में इमाम भूल जाए उसे मुक़्तदी लुक़्मा देते हैं। ज़िम्मादार को चाहिए कि साथयों से राय ले। जिस तरह दीन का अहम रुक्न नमाज़ है। इसी तरह दावत का अहम रुक्न मश्वरा है। जिसकी नमाज़ नहीं उसका दीन नहीं। इसी तरह जिसका मश्वरा नहीं उसकी दावत नहीं। जिस तरह दीन अमानत है, उसी तरह मश्वरा अमानत है। मश्वरा इज्तिमाई अमल है। मश्वरा अगर इज्तिमाई कामें में इंफ़रादी हुआ तो इख़्तलाफ़ होगा। राय दिल का कांटा है। राय साथियों से ली जाए तो साथियों की ख़ुशनसीबी है। मश्वरा में फ़ैसला हो जाए तो अपनी राय भूल जाए। ख़लफ़ा ए राशिदीन मश्वरा का एहतिमाम किया करते थे।

राय में इख़्तिलाफ़ रहमत है। दिलों में इख़्तिलाफ़ अज़ाब है।

इंफ़रादी आमाल का मश्वरा मुस्तहिब हैं इज्तिमाई आमाल का मश्वरा वाजिब है। अगर अकेले किया तो उजब है। मश्वरा करना अल्लाह का पसंदीदा अमल है। अंबिया की सुन्नत है। सहाबा की सिफ़त है। हमारी ज़रूरत है। दीन का नफ़ा देखकर राय दें। मश्वरा से पहले मश्वरा करना साज़िश है। मश्वरा के बाद मश्वरा करना बग़ावत है।

दीनी उमूर में तक़वा वाले राय देंगे। राय लेंगे। हमारे यहां राय लेना, राय देना सिफ़ात ए क़बूलियत पर है, तजुर्बात पर नहीं है।

✦लोग अमल सीखते है ✦ ईमान नहीं सीखते✦क़ुरआन ने ग़ीबत को हराम कहा है✦

(मौलाना साअद)

4 चीज़ें अमल के लिए ज़रूरी हैं, लोग अमल सीखते हैं ईमान नहीं सीखते।

(1) आमाल के अंदर इख़्लास, (2) आमाल पर अजूर, (3) आमाल पर वादे, (4) आमाल पर इस्तक़ामत।

अमल के अंदर इख़्लास ज़रूरी है। ईमान के बग़ैर इख़्लास नहीं होगा।

अमल पर वादों का पूरा होना। जिनको अमल पर वादों का यक़ीन न होगा, वो हालात देखकर चलेंगे।

ईमान वाले हुक्म देखकर चलते हैं। मुनाफ़िक़ हालात देखकर चलते हैं।

हालात हुक्म से हटा देंगे। हालात हराम को हलाल कर देगा।

हलाल को हराम कर देगा। यह मुनाफ़िक़ की अलामत है।

ख़न्दक़ में नबी के और नबी के साथियों के साथा अल्लाह की मदद हुई।

क़ुदरत हुक्म के साथ। वादों पर यक़ीन हो।

उम्मत में बेदीनी जिहालत की वजह से नहीं। बावजूद दीन के इल्म के।

वादों के यक़ीन पर आओ।

आप ﷺ सहाबा को वादों को यक़ीन दिलाते थे।

ईमान के बग़ैर अमल पर इस्तक़ामत नहीं होगी। यह वो क़िस्म है कि दीन के किनारे किनारे चलो।

हालात अच्छे होंगे तो दीन पर चलेंगे हालात ख़राब होंगे तो दीन को छोड़ देंगे। न पूर दीनदार न पूरे बेदीन।

सबसे ज़्यादा नुक़सान इन्हीं का है। दीन आएगा दीन की इताअत के साथ। एक सहाबी की आप सल्ल की मजलिस में ग़ीबत की गई। आप सल्ल ने फ़रमाया तुम क़ुरआन से खेल रहे हो।

क़ुरआन ने ग़ीबत को हराम कहा है।

ईमान की अलामत बताई, नेकी से ख़ुश हो गुनाह से ग़मगीन हो। हो यह रहा है सूद भी है ईमान भी है। झूठ भी है ग़ीवत भी है।

✦ईमान वालों यक़ीन सीखो ✦ क़ुरआन ने ग़ीबत को हराम कहा है ✦ इंसान इबादत की मशीन है ✦ इस मशीन का ईंधन पाक होना चाहिए ✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

ईमान वालों को ईमान पर लाने का हुक्म दिया गया है। कि ईमान वालों यक़ीन सीखो।

मोमिन इस कलिमे के ज़्यादा हक़दार हैं। ज़्याा अहल हैं।

ईमान यह है कि तक़वा पैदा हो। तक़वा ईमान की अलामत है।

जिसमें तक़वा होगा। उसको हराम क़बूल नहीं होगा। अगर उसको छिपाकर हराम खिलाया गया तो मेअदा क़बूल नहीं करेगा।

जब यक़ीन ख़राब होगा तो लोग गुनाह करके खुश होंगे और दूसरों को बताएंगे।

हज़रत अबू बक्र रज़ि को एक लुक़्मा खिलाया गया, आप उस लुक़्में का जल्दी निकालना चाहते थे।

इंसान इबादत की मशीन है। इस मशीन का ईंधन पाक होना चाहिए। ताकि गुनाह से बचे।

लोग धोका में हैं कि हराम कमाया है। ख़ैर के काम में ख़र्च कर दो। हलाल हो जाएगा।

ख़िन्ज़ीर काट कर खिलाना और सूद खिलाना दोनों हराम है। हराम काल कमाकर ज़कात अदा करे, तो हराम का गुनाह माफ़ नहीं होगा।

अगर कोई ख़िन्ज़ीर को बिस्मिल्लाह कहकर ज़िबह करे तो हलाल न होगा। पाक न होगा।

लोक हराम तरीक़ा से कमा के सोचें मदरसा में, मस्जिद में लगा दें।

ईमान होगा तो तक़्वा होगा। तक़्वा होगा तो हराम हज़्म न होगा।

लोग ईमान की तरफ़ से मुत्मईन हैं। और इबादत से ग़फ़लत।

इबादात, मामलात और मआशरत, इन तीन शोअबों का मदार यक़ीन पर है ईमान पर है।

मामलात शर्त है।

तहारत कर लिया, मेरे अंदर ख़ून पाक होना चाहिए।

ज़ाहिरी तक़्वा, जिस्म हराम कमाई से पाक हो।

✦असबाब अपने अंदर गुमराही लिये हुए हैं✦ आमाल हिदायत लिए हुए हैं✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

सिर से लेकर पैर तक हराम ख़ून जिस्म में दौड़ रहा है। सबसे मामलात ठीक करो हुक्म पर लाओ।

इस मशीन को ईंधन हलाल दो। अपनी कमाईयों को हलाल पर लाओ।

मामलात से इबादात क़ायम करो। जिस तरह वुज़ू से नमाज़ क़ायम होगी। इबादात का क़ायम होना पूरे दीन को क़ायम कर देगा। नमाज़ के बिगाड़ की वजह से है। नमाज़ यक़ीन से क़ायम होती है।

नमाज़ के मुक़ाबले में असबाब ग़ैर यक़ीन हैं।

नमाज़ में जल्दी करेंगे, असबाब की वजह से।

एक और ग़लतफ़हमी यह है कि असबाब दुनिया के लिए, आमाल आख़िरत के लिए।

दुनिया असबाब से और आख़िरत आमाल से। जिसने यह तय कर लिया।

पहले कारोबार ठीक कर लें फिर दीन बाद में।

हाजतें हयात के साथ हैं।

असबाब अपने अंदर गुमाराही लिए हुए हैं।

आमाल हिदायत लिये हुए हैं। हमारे अल्लाह के दरम्यान असबाब ज़रिया नहीं हैं।

आमाल ज़रिया हैं। असबाब से ईमान वाला मुत्मईन नहीं।

काफ़िर अपने असबाब से मुत्मईन हैं। असबाब मोमिन के इम्तिहान के लिए हैं।

इत्मिनान के लिए नहीं हैं। वादे हुक्म के साथ, हुक्म यक़ीन के साथ।

दीन के सारे शोअबों को नबी के तरीक़े पर लाओ। दीन के सारे शोअबों में दीन की नक़ल व हरकत को पहुंचाना यह हमारी ज़िम्मादारी है।

✦दावत फ़र्ज़ ए ऐन है ✦ जो दीनदार हैं वो भी दावत दें ✦ मुस्लिम ग़ैर मुस्लिम में कोई फ़र्क़ नहीं रहा ✦

❁मौलाना मुहम्मद साअद❁

उम्मत कें अदर नक़ल व हरकत होगी तो पा रहेगी। और दूसरों को पाक करेगी। हिजरत तो यह है मुहाजिर उसको कहते हैं जो तौबा करने वाला हो। जैसे जारी पानी खुद भी पाक है, दूसरों को भी पाक करेगा। ठहरा हुआ पानी जो चीज़ गिर जाएगी, नापाक हो जाएगी। अपने दीन को लेकर हरकत में आना है। इसिलए ज़िम्मादारी इज्तिमाई है इंफ़रादी नहीं है। दावत देना हर फ़र्द के लिए ज़रूरी है। दावत फ़र्ज़ ए ऐन है हर एक के लिए। जो दीनदार हैं। वो भी दावत दें। दावत इसलिए कि अपने दीन की हिफ़ाज़त, दूसरों की हिदायत। अपना दीन बाक़ी रहेगा।

उम्मत दावत छोड़ देगी तो उम्मद दूसरों की दावत कबूल करे लेगी।

उम्मत दाअई होगी या मदऊ हो जाएगी। दावत का काम अपने दीन की हिफ़ाज़त और दूसरों की हिदायत।

ग़ज़वा तबूक में काअब बिन मालिक एक बार नहीं जा सके। तो बादशाह ग़ुसान ने दावत दी। ख़त भेजा। ख़त पढ़कर तंदूर में डाल दिया। दावत में गश्त में, ख़रूज में बुलान पर अपना ही फ़ायदा है।

जो अपनी बेदीनी की वहज से दीन को छोड़ देगा। वो

अपने दीन को नहीं बचा सकेगा। उम्मत के इख़्तिलात ने दीन को मुश्किल कर दिया। मुसलमान में ग़ैर मुस्लिम में कोई फ़र्क़ नहीं रहा। तुम दावत दो अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए। बातिल अपनी बेदीनी की तरफ़ दावत देंगे। अपनी ज़िम्मादारी पूरी करो। दूसरों की गुमराही तुम्हें नुक़सान नहीं पहुंचा सकती। उम्मत मदऊ हो जाएगी बातिल की तरफ़। अपने दीन की तरफ़ दावत से अपने दीन की हिफ़ाज़त हो जाती है।

अब्दुल्लाह इब्ने हुज़ाफ़ा रोम में दीन की मेहनत कर रहे थे। बादशाह ने दावत दी। लालच दी।

आधी बादशाहत देने के लिए कहा। सहाबी ने कहा कि मैं पलक झपकने के बराबर भी मुहम्मद ﷺ के दीन को नहीं छोड़ सकता। बादशाह ने कहा कि मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा, सूली दूंगा। आप रोने लगे। खौलते तेल में डालने का हुक्म दिया। आप अपने ईमान पर क़ायम रहे। अपने ईमान पर इस्तक़ामत अपने दीन की दावत से होती है। बादशाह ने नसरानियत पेश की कि नसरानी हो जाओ। आप ने उसकी दावत को क़बूल नहीं किया, इंकार करते रहे।

✦अल्लाह के रास्ते में मरने की तमन्ना करे ✦ घर पर मर जाए अल्लाह के रास्ते का सवाब मिलेगा ✦ हिजरत और नुसरत ईमान की जड़ हैं ✦ ईमान की शरायत में से है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

मुहाजिर- निस्बत ए इलाही पर जान व माल और अहल व

अयाल, कारोबार छोड़कर अल्लाह के रास्ते की हर तकलीफ़ और मुजाहिदे को बर्दाश्त करे। इस काम की बुनियाद अपनी जान व माल।

हिजरत और नुसरत ईमान की शारायत हैं। मैअयार कामयाबी जहन्नम से बचा लिया गया। जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। अंबिया दावत की मेहनत और दुआ की क़ुव्वत लेकर आते थे। जन्नत के सौ दरजें हैं। सब से ऊँचा दरजा मुजाहिद फ़ी सबीलुल्लाह का है। अल्लाह के रास्ते का एक घंटा 10 करोड़ के बराबर है। अबू बक्र रज़ि ईमान लाए। 40 हज़ार अशर्फ़ियां थीं। अपना काम दुआ से चलाते थे।

जान भी अपनी लगाएंगे। माल भी अपना लोगों पर लगाएंगे। राहत उनको पहुंचाएंगे। आख़िरत दूसरों की बनाएंगे। कभी इस रास्ते से इज़्ज़त मत हासिल करो। अल्लाह की दी हुई अमानत जान की ज़रूरत पड़ेगी। तो दे देंगे। जो कुछ भी है अमानत है बक़द्रे ज़रुरत इस्तेमाल की इजाज़त है। अल्लाह के रास्ते में मरने की तमन्ना करे। घर पर मर जाए अल्लाह के राते का सवाब मिलेगा। इस काम को कमाई का ज़रिया न बनाए। मौत की आख़िरी सांस तक अपनी इस्लाह मत छोड़ देना। इस रास्ते से न इज़्ज़त हासिल करो न माल चाहो। तहज्जुद की पाबंदी करने वाला वली होकर मरेगा। मरने से पहले अपना ठिकाना जन्नत में देख लेगा। दावत में किराये टट्टू नहीं चलते जान किसी का माल किसी का। निस्बत ए इलाही पर अपने अहल व अयाल कारोबार छोड़े। अल्लाह के रास्ते के मुजाहिदात को बर्दाश्त करे। फिर आवाज़ लगाए। कामयाबी अल्लाह के

हुक्म में है। फिर असर पड़ता है। हिजरत और नुसरत ईमान की शरायत में से है। पैसा किसी का जान किसी की मरने तक नहीं बनेगा। इस काम में अपनी जान अपनी माल।

जो अमूमी गश्त नहीं करेगा। किब्र नहीं टूटेगा। अमूमी गश्त से किब्र टूटेगा। मतकल्लिम हर ईमान वाले से छोटा बनकर मिलने वाला बना दे। और हर एक की कड़वी कसैली सुनने वाला बन जाए। अल्लाह का ध्यान ही गुनाह से बचा सकता है। इसी लिए तस्बीहात हैं। क़ुरआन की जितनी तिलावत हो नाग़ा न करे। अल्लाह को मानने का नाम ईमान है। अल्लाह को मानने का नाम इस्लाम है। लोग इस काम को समझते नहीं। करते नहीं करते हैं तो जमते नहीं हैं। जमते हैं तो अल्लाह के लिए नहीं करते।

✦बयानात ✦हिदायात ✦ मुक़ामी काम ✦क़ुरआनी तालीम ✦ इंफ़रादी तालीम ✦ इंसाफ ✦ ✦इकराम ✦ ग़ैबी नुसरतें ✦ अमूमियत✦

(मश्वरा सूबा यू.पी. बंगला वाली मस्जिद निज़ामुद्दीन, अगस्त 2013 ईसवीं)

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गों और दोस्तों! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हम पर बड़ा अहसान फ़रमाया है वो मेहनत हमका अता फ़रमाई जिसमें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की सारी मददें मौऊद हैं, मक़सूद हैं। काम का कोई तक़ाज़ा अल्लाह के ताल्लुक़ के बग़ैर पूरा हो ही नहीं सकता। इसलिए अपने आपको मिज़ाज ए नबूवत पर

लाओ। मिज़ाज ए नबवत का सबसे पहला काम अमूमियत है। हुज़ूर सल्ल की दावत में अमूमियत है।

ग़ैबी नुसरत इंफ़रादी दावत में है। काम रस्मियत में जा रहा है। उम्मत का तबक़ाती निस्बत पर जुड़ना दुनिया का फ़ायदा है। काम के ताअर्रुफ़ को दुनिया के लिए इस्तेमाल करना काम से महरूमी है। देखो मेरे दोस्तों! अज़ियत पहुंचाने वालों पर अहसान करो, अल्लाह तआला को यह अदा बहुत पसंद है। शिकायत का कोई ख़ाना ही नहीं इस काम में तकलीफ़ ही तकलीफ़ है। इस रास्ते में आने वाली नागवारियां उम्मत की हिदायत का सबब होंगी। हम अपने आप को मिज़ाज ए नबूवत पर लाएं। अपने साथियों की ख़ूबियों बयान करो। हसद न करो। अल्लाह तआला पुरानों का इम्तिहान लेते हैं। नये को, छोटों को अमीर बनाकर। बड़ों की इताअत छोटा कर ले, यह अदना दर्जा है। और छोटों की इताअत बड़े करें यह आला दर्जा है। हम अमीर उसको बनाते हैं जिसको तजुर्बा है हालांकि जिसका क़ुरआन सही हो उसको अमीर बनाओ। हर निकलने वाली जमाअत को मुक़ामी काम समझाओ। जो जमाअत आप रवाना करें। चिल्ला, चार माह, सः रोज़ा, सबसे कहो। किसी को अपने ज़ाती ताल्लुक़ से बढ़ाना यह काम में ख़यानत है। अगर हम दिन भर की मेहनत के बाद रात को क़ियाम नहीं कर रहे हैं तो काम तन्ज़ीम बन जाएगा। दाअई का एक अमल आलम पर पड़ता है। इंफ़रादी इबादत दीन की नुसरत नहीं, दीन की नुसरत बग़ैर अल्लाह की मदद नहीं। ग़ैबी नुसरतें इंफ़रादी दावत पर हैं। हमारी मुलाक़ातें मस्जिद के माहौल में लाने के लिए हैं। अगर न आएं तो बात कर लें। मस्जिद का वक़्त ले लें। मुलाक़ातों के

दौरान हर घ्झर में यह कहना कि अपने बच्चों को मस्जिद में क़ुरआन की तालीम के लिए क़ुरआन सीखने भेजें। मुक़ामी काम बहुत ज़रूरी है। अगर चिल्ला, चार माह गया हुआ है और वापसी पर मुक़ामी काम नहीं है तो बैठ जाएगा। हमारे दरम्यान बातिल के तज़्किरे बहुत हो गए हैं। हज़रत फ़रमाते थे बातिल के तज़्किरे ख़त्म कर दो बातिल ख़त्म हो जाएगा। हुज़ूर सल्ल इंसाफ़ के पाबंद थे, इकराम के आदी थे। काम करने वालों में जमूद का आना काम का मर जाना है। रोज़ाना घर की तालीम में अल्लाह के रास्ते में जाने की तरग़ीब दो। छः सिफ़ात का मुज़ाकिरा। मस्जिद की आबादी के लिए पांच आमाल शर्त नहीं हैं।

✦अल्लाह की रज़ा का हर अमल इबादत है✦सारे दीन का मदार यक़ीन पर है ✦ दीन की बात का कहना सुनना भी इबादत है ✦ ईमान ✦ तस्दीक़✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

दीन की बात का सुनना भी इबादत है। यह कानों का ज़िक्र है। बात को ध्यान के साथ सुनना। टेक लगाकर सुनना तकब्बुर की अलामत है। बात को सुने और अमल न करे। इसलिए अमल के इरादे से सुनो। अमल इताअत के लिए न लिया तो। तो इल्म तिजारत या मुलाज़िमत बनेगा।

फ़ित्नाः एक फ़ित्ना चला है कि इन उलेमा को क्या मालूम एक बटन दबाओ सब कुछ सामने। न उलेमा की सोहबत न

मदारिस का माहौल। पहले इल्म अमल से लिया जाता था। मालूमात की कोई कमी नहीं है। दुनिया में इल्म आलात और असबाब में आ गया। पहले कोई किताब इल्म पर नहीं थी। अमल के रास्ते से यक़ीन सीखा जा सकता था। इल्म से पहले अमल लिया जाता था। अमल के लिए तो ईमान ने हुक्म को ज़ायाअ नहीं होने दिया। ईमान सीखा जा रहा था।

सहाबी को इल्म हुआ शराब की हुरमत का। जैसे ही सुना। मुहल्ला में ऐलान करा दिया। अल्लाह के अहकाम पर अमल ईमान की वजह से होता है। वादों का यक़ीन पैदा करो, दावत से कोई अमल ईमान के बग़ैर नहीं है। ईमान की तहक़ीक़ करो। ईमान किसे कहते हैं।

ग़ैब पर ईमानः अक़्ल मख़्लूक़ है अक़्ल नाक़िस है। जो कुछ नबी से होगा। ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होगा। अक़्ल के ख़िलाफ़ होगा। मेअराज का सफ़र। एक महीना का सफ़र एक रात में यह बात अक़्ल के ताबेअ नहीं है। कमज़ोर ईमान वाले मेअराज के वाक़िआ से मुरतद हो गए। ईमान बिलग़ैब असल है। जिस चीज़ की देखकर तस्दीक़ की जाए उसको ईमान नहीं कहते। जिनको नबी पर ईमान नहीं था। कहते थे क़यामत जल्द लाओ। ईमान नहीं था नबी पर। एक सहाबी वह्यी लिखा करते थे। वो नबी के हालात देख रहे थे। अल्लाह ने उन सहाबी का इम्तिहान लिया। अल्लाह ने इंसान की तख़्लीक़ की है। सहाबी ने कहा यह तो तुम कह रहे हो। वो सहाबी मुरतद हो गए। जो बात आप सल्ल पर नाज़िल हो रही है वो वह्यी है। किसी अज़ू का अमल जब ज़िक्र बनेगा। जब उस अमल में दिल शरीक हो।

आज बहुत से आमाल आदत बन गए हैं। जिसकी वजह से ग़फ़लत पैदा हो रही है। इंसान के अंदर आदत ग़फ़लत पैदा करती है। अपने सुन्नने को ज़िक्र बनाओ। दिल को शरीक करो। अल्लाह ने अक़्ल के सौ हिस्से बनाए हैं। 99 अक़्ल के हिस्से आप ﷺ को दिये, एक हिस्सा सारी मख़्लूक़ को दिया।

✦सब अंबिया मिलकर किसी को हिदायत नहीं दे सकते ✦ सब अंबिया मिलकर किसी काफ़िर को जहन्नम की आग से नहीं बचा सकते ✦ सब अंबिया मिलकर एक तिनके को हरकत नहीं दे सकते ✦ बग़ैर अल्लाह की मर्ज़ी के जब तक अल्लाह न चाहे✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

हुज़ूर ﷺ ने एक आदमी से सौदा किया। घोड़े का, घोड़ा ख़रीदा। घर जा रहे थे आगे आगे। रक़म देने के लिए। घोड़ा बेचने वाला पीछे था। उसने दूसरे आदमी से सौदा कर लिया। उसने कहा ऐ मुहम्मद ﷺ आप घोड़ा ख़रीदेंगे या मैं बेच दूं। बात दो के दरम्यान हो रही थी। आप ﷺ ने कहा वो तो मैंने ख़रीद लिया है। उसने कहा गवाह पेश करो। गवाह लाओ कि आप ﷺ ने घोड़ा ख़रीदा है।

सामने से हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ि सहाबी आ रहे थे। हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ि ने गवाही दी। आप ﷺ ने ख़ुज़ैमा रज़ि से कहा [illegible] क्या ख़बर? तो ख़ुज़ैमा रज़ि ने कहा आप झूठ नहीं बोल

सकते। आप ﷺ ने घोड़ा ख़रीदा है। इसलिए कि आप ﷺ ने इतनी बड़ी बड़ी चीज़ों की ख़बर दी है। जन्नत की जहन्नम की ख़बर दी है। हमने आपकी ख़बरों पर यक़ीन किया है। यह इम्तिहान है। सहाबा का। ईमान का। आप ﷺ ने फ़रमाया आज से हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ि की गवाही दो के बराबर। इसलिए कि नबी की बात तस्दीक़ की है। दावत से ईमान हासिल करो। इस कलिमा को दावत में लाओ। इख़्लास पर लाओ। इसके हासिल करने के 4 रास्ते हैं:

रोज़ाना की मुलाक़ातों में अल्लाह के ग़ैर की नफ़ी की जा रही है। हमारी गश्तों को मौज़ुअ है कलिमा का पहला जुज़ इससे पहले दिल का रुख़ सही नहीं हो सकता। अल्लाह ने किसी के दो दिल नहीं बनाए। दोनों चीज़ें हों ईमान भी निफ़ाक़ भी। एक दिल होगा। दिल का रुख़ सही नहीं होगा। ईमान के बग़ैर। यक़ीन आए बग़ैर। इब्राहीम अलिहिस्सलाम ने दिल का रुख़ बदल लिया। मोमिन का रुख़ देखा जाएगा।

तिजारत में मामलात में मआशरत में। दीन के तमाम शोअबों में अल्लाह के हुक्म को देखे। जिब्राईल अलिहिस्सलाम का भी इंकार। आग में डाले जाने के वक़्त जिब्राईल अलि आए तीन फ़रिश्तों को साथ लेकर जिब्राईल अलिहिस्सलाम की मदद का इंकार किया। कहा हमं आपकी ज़रूरत नहीं। जिब्राईल अलिहिस्सलाम ने कहा अल्लाह से तो कह दीजिए। इब्राहीम अलिहिसस ने कहा अल्लाह हमारे हाल से बाख़बर है। अल्लाह ने आग को बुझाने के लिए किसी को ज़रिया नहीं बनाया। बराहे रास्त मदद की। असबाब इम्तिहान के लिए हैं। हाजतें अल्लाह

के कब्ज़ा में। असबाब अल्लाह के इख़्तियार में। सब अंबिया मिलकर किसी को हिदायत नहीं दे सकते। बग़ैर अल्लाह की मर्ज़ी के जब तक अल्लाह न चाहे।

✦दावत कहते हैं अल्लाह की तरफ़ आना✦ दुआ कहते हैं अल्लाह से लेना✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

इंशा अल्लाह नहीं कहा। अल्लाह को दुआ और दावत पसंद है। दावा पसंद नहीं।

दावत कहते हैं अल्लाह की तरफ़ आना। दुआ कहते हैं अल्लाह से लेने को।

असहाब ए कहफ़ कौन थे। नबी सल्ल ने फ़रमाया कल बता दूंगा। 15 दिन वह्यी नहीं आई। अल्लाह की जितनी मददें नबियों के साथ हुई हैं, नबियों के वाक़िआत बयान करो। वो तो नबी थे। वो तो सहाबी थे। दूसरों का रौअब हमें शक में डाल देगा।

अल्लाह ने नबी को इत्मिनान दिलाने के लिए नबियों के वाक़िआत बयान किये हैं।

सहाबाकराम के साथ ग़ैब के, मदद के, सहाबा के साथ अल्लाह की मददों को ख़ूब बयान करो। अल्लाह मदद करने वाले हैं। क़यामत तक मदद का वादा है। यह नहीं कि वो सहाबी थे। अल्लाह बंदे के गुमान के साथ है।

यह बहुत बड़ी ताक़त है। अल्लाह हमारे साथ है। अल्लाह ने वादा किया है। दुआ पर मदद का एक शख़्स ने हज़रत अबू

दरदाअ रज़ि से आकर कहा कि आपका मकान जल गया। आप ने कहा हमारा मकान नहीं जल सकता। यह यक़ीन था कि मैंने दुआ पढ़ ली है। इस दुआ पर कैसा यक़ीन था। अब लोग दुआएं याद नहीं करते। मसनून दुआओं में वो दुआएं हैं। जिनको नबी क़बूल करवा चुके हैं। मैं इसका मकान कैसे जला दूं जिसने मेरे साथ गुमान किया है।

ईमान को ईमान की अलामतों से पहचानो।

मुन्तख़िब अहादीस पढ़ा करो। हज़रत मुन्तख़िब में छः सिफ़ात याद कराना चाहते थे। आप सल्ल ने ईमान सहाबा को सिखलाया था। ईमान क्या है।

नेकी से ख़ुशी से गुनाह से ग़म। जो अल्लाह से "इल्म" और "ईमान" को चाहेगा अल्लाह उसे देगा। ईमान और इख़्लास एक चीज़ है।

ईमान इताअत की पक्की अलामत है। ईमान मोमिन को हुक्म पर ले आएगा।

✦असबाब नहीं तो इम्तिहान नहीं✦ असबाब न होते लोग यही कहते अल्लाह ने किया✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

मोमिन को एक ठोकर लगेगी। तो सोचेगा कि किस वजह से।

काफ़िर तो जानवर की तरह है।

क्यों बांधा गया। क्यों खोला गया। कुछ पता नहीं।

मोमिन बंधे हुए घोड़े की तरह है। वादे हुक्मों के साथ।

तवक्कल करें। असबाब को छोड़ें। लोग समझते हैं तब्लीग़ में असबाब को छोड़ने को कहा जा रहा है।

असबाब इख़्तियार करना तवक्कल के ख़िलाफ़ नहीं।

असबाब पर तवक्कल करना ईमान के ख़िलाफ़। इंसान के अंदर हैवानियत है। लोग समझते हैं

असबाब इख़्तियार करें या न करें, असबाब में इम्तिहान है।

असबाब नहीं तो इम्तिहान नहीं। काम बनाया अल्लाह ने निस्बत अल्लाह की तरफ़।

असबाब न होते तो लोग यही कहते अल्लाह ने किया। सारे असबाब इम्तिहान के लिए।

असबाब में हुक्म पूरा करो। अल्लाह ने असबाब के अंदर आज़माया।

शिर्क और शुक्र। शिर्क यह है कि दूर हुआ है।

शाकिर उसे कहेंगे जो अल्लाह की इताअत पर हो। काफ़िर वो है जो मुन्किर हो।

अल्लाह की नेअमतों में अल्लाह के ग़ैर का इंकार करके शुक्र और शिर्क को एक साथ बयान किया है।

मर्द औरत मिलते हैं, औरत हमल को लेकर फिरती रहती है।

दोनों मियां बीवी अल्लाह से दुआ करते हैं। अगर तूने हमें यह औलाद, बच्चा सही सालिम पैदा हो गया तो कहते हैं

अल्लाह ने किया। शाकिर नेअमत की निस्बत अल्लाह की तरफ़ करेंगे। शिर्क करने वाले मुश्रिक हाजत पूरा होने के बाद निस्बत अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ करते हैं। यह है फ़र्क़ शुक्र और शिर्क में। शुक्र ऐसी नेअमत है जिससे बंदा अल्लाह से क़रीब होता है। शिर्क ऐसी लानत है जिससे बंदा अल्लाह से दूर होता है।

✦मोमिन को असबाब में नाकाम करते हैं✦ काफ़िर को असबाब में कामयाब करते हैं आख़िरत के इंकार के लिए✦

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

मोमिन को असबा में नाकाम करते हैं। काफ़िर को असबाब में कामयाब करते हैं। आख़िरत के इंकार के लिए। हज़रत उमर रज़ि ने कहा दुश्मन मज़े में और आप ग़मगीन। आप सल्ल ने फ़रमाया क्या उमर रज़ि अब तक धोका में पड़े हुए हो। अल्लाह ने इनको दुनिया में दिया, अज़ाब के लिए। दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में कोई घर नहीं। काफ़िरों से कहा खाओ, पियो थोड़े दिन।

मुसलमान धोका में उनकी आसाईश को देखकर परेशान, अल्लाह काफ़िरों को नाराज़ होकर दे रहा है। मुसलमान उसकी तमन्ना करते हैं। ऐसे लोग अल्लाह की नज़रों से गिरे हुए हैं। जिन लोगों ने असबाब को हाजत पूरा करने का ज़रिया समझ लिया है। यह तो ग़ैर भी कहते हैं: पीन कौन बरसाता है। खाना कौन देता है।

लोग यह समझ बैठे, असबाब को इख़्तियार किये बग़ैर

हाजत पूरी नहीं होगी। यक़ीन होता तो असबाब में जाने से पहले हाजत पूरी कराते।

तुम हमारे बनो, हम मख़्लूक़ को ताबेअ करेंगे। एक सहाबी पेशाब करने बैठे अल्लाह ने उनकी हाजत पूरी की। बग़ैर असबाब के अल्लाह ने रोज़ी का इंतिज़ाम किया। जो अल्लाह से लेते हैं और अल्लाह के लिए ख़र्च करते हैं। उनका कोई हिसाब नहीं।

असबाब से कमाने का हिसाब है। अल्लाह से लेनें का कोई हिसाब नहीं। जो हराम रास्ते से कमाते हैं, वो हलाल में ख़र्च नहीं होगा। जो हलाल रास्ते से कमाते हैं वो हराम में ख़र्च नहीं होगा।

एक एक को हुक्म वादों पर लाओ। असबाब पर कोई वादा नहीं। अमल ज़ायाअ होगा। असबाब के लिए। नमाज़ में जल्दी करेगा। दुकान के लिए। नमाज़ को छोड़ेगा असबाब के लिए। नमाज़ को बिगाड़ेगा असबाब के लिए। दूसरों को अमल के यक़ीन पर लाओ।

हलाल का हिसाब है। हराम पर पकड़ है।

✦ लोग इल्म से आगे बढ़ गए ✦ इल्म से आगे जिहालत है ✦ सारे इल्म क़बर के तीन सवाल ✦ रब ✦ शरियत ✦ सुन्नत ✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

हर हुक्म को इल्म पर लाना है। हर हुक्म को इल्म पर

लाओ। इल्म अमल का इमाम है। मुक़्तदा है।

लोग इल्म से आगे बढ़ गए। इल्म से आगे जिहालत है।

लोग हर चीज़ को इल्म क़राद देने लगे। इल्म के ताबेअ रहो।

इल्म अमल का इमाम है। इसलिए मुक़्तदी बना। हर चीज़ को हमने इल्म समझ रखा है।

दुनिया में जो चाहे इल्म सीखो। यह भी इल्म है। सबसे बड़ी जिहालत हर चीज़ को इल्म समझना है।

दुश्मनों ने मुसलमानों को इल्म ए दीन से हटाने के लिए हर चीज़ को इल्म कह दिया। साइंस को इल्म कहते हैं।

हर नबी ने अपनी क़ौम को दज्जाल से डराया है। दीन का इल्म इसलिए छोड़ दिया।

कि यह भी इल्म है, यह भी इल्म है। हर चीज़ को इल्म क़रार देना दुनिया ज़माना की सबसे बड़ी जिहालत है।

डाक्टरी फ़न है। डाक्टरी को इल्म समझ बैठे। इनको सीखो। ज़रूरत की हर चीज़ है। एक डाक्टर चीन जा रहे थे। उनको सूराः फ़ातिहा याद नहीं थी। उस वक़्त बड़े बड़े पढ़े लिखे इस जिहालत में पड़े हुए हैं। इल्म कहते हैं मेरा अल्लाह मुझसे क्या चाहता है।

सारा इल्म क़ब्र के तीन में हैः रब, शरियत, सुन्नत।

जो सुन्नत पर चलेगा, क़बर में नबी को पहचानेगा। क़बर में ज़बान मालूमात पर नहीं चलेगी। इल्म वो है जो मेरा रब

चाहता है, रब की चाहत इल्म है। मख़्लूक़ की चाहत फ़न है। फ़न वो है जो मख़्लूक़ चाहती है। फ़न मख़्लूक़ को मख़्लूक़ से जोड़ती है। हज़रत उमर रज़ि इतने बड़े आलिम। वो चीज़ हराम करा रहे हैं। शराब को हराम करा रहे हैं, जो नाज़िल नहीं हुई। तौरात इल्म के इज़ाफ़ा के लिए पढ़ी। और लेकर हाज़िर हुए हुज़ूर सल्ल हज़रत उमर पर इतना नाराज़ हुए कि इतना नाराज़ कभी नहीं हुए। आप सल्ल ने फ़रमायाः ऐ उमर क्या क़ुरआन तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं। उमर रज़ि जो दीन मैं लेकर आया हूं हज़रत मूसा अलिहिस्स भी आ जाएं तो उनको भी निजात का कोई रास्ता नहीं। सिवाए हमारी शरियत के।

अक़ाइद का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है। जिस तरह ईमान का अमल हासिल करना फ़र्ज़ है।

✦दीन सीखना फ़र्ज़ ऐन है ✦ मौलवी बनना फ़र्ज़ किफ़ाया है ✦ साइंस तो शिर्क पढ़ाता है ✦ शिर्क सिखाता है ✦ क़ुरआन तौहीद सिखाता है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

सबसे बड़ी जिहालत हर चीज़ को इल्म समझना। रब से पलने का यक़ीन बनाना है।

इल्म वो है जो क़ुरआन और हदीस में है। इसके अलावा सब फ़न है।

अल्लाह वाले इल्म से पलने का यक़ीन नहीं। ग़ैरों के फ़नून

से पलने का यक़ीन है। इल्म की दावत से उम्मत को इस जिहालत से भी निकालना है। जिस ने हर चीज़ को इल्म क़रार दिया है। मुझे शर्म आती है कि उलेमा भी इससे मुतास्सिर हैं। दीन सीखना फ़र्ज़ ऐन है। मौलवी बनना फ़र्ज़ किफ़ाया है।

हज़रत फ़रमाते थेः साइंस तो शिर्क पढ़ाता है। क़ुरआन तौहीद सिखाता है। साइंसा का ख़ुलासा है मख़्लूक़ को मख़्लूक़ से जोड़ना। इल्म का ख़ुलासा है मख़्लूक़ को ख़ालिक़ से जोड़ना। इल्म फ़र्ज़ है नमाज़ की तरह। सबसे बड़ी जिहालत हर चीज़ को इल्म समझना। साइंस का इल्म, डाक्टरी का इल्म, इंजिनयरिंग का इल्म, अंग्रेज़ी का इल्म। नमाज़ और इल्म की फ़र्ज़ियत में कोई फ़र्क़ नहीं। आलिम वो है जो अपने दीन के ताबेअ कर लिया है। सारी नक़ल व हरकत इल्म व ज़िक्र के साथ है। ग़फ़लत जिहालत के साथ है। अल्लाह हिदायत ज़रूर देंगे। यह रास्ता नबी वाला है। नक़ल व हरकत से दीन बाक़ी रहेगा। अल्लाह का मुजाहिदे पर मदद का वादा है। जो नबी के रास्ते पर चलेगा वो रब को पा लेगा। जिस मेहनत में लगे हैं, यह मेहनत हिदायत के लिए यक़ीन मेहनत है।

दुनिया का फ़न हासिल करना फ़ख़्र करना। कुफ़्र का मिज़ाज है। दीन सीखना और दीन सिखाना बहुत ज़रूरी है। इसलिए अपने बच्चों को क़ुरआन पढ़ाएं। दीनी मदारिस में दाख़िल कराएं। अल्लाह वाले इल्म से पलने का यक़ीन नहीं। ग़ैरों के फ़नून से पलने का यक़ीन है। हदीस में आता है कि जो क़ुरआन को पढ़कर ग़नी न हो वो हम में से नहीं है। कि क़ुरआन यक़ीनन ग़नी कर देगा। हज करो ग़नी बनोगे। इल्म दो

क़िस्म का है। फ़ज़ाईल का इल्म। मसाईल का इल्म। फ़ज़ाईल का इल्म अल्लाह के वादों पर यक़ीन के लिए, मसाईल का इल्म अमल के सही और क़बूल होने के लिए।

सारी दुनिया के पढ़े लिखे मुसलमान भी इस फ़ित्ने में मुब्तिला हो गए कि उन्होंने हर चीज़ को इल्म क़रार दे दिया हर चीज़ को इल्म क़रार देना ज़माना की सबसे बड़ी जिहालत है। ख़ालिक़ की तहक़ीक़ करना इल्म है। मख़्लूक़ की तहक़ीक़ करना फ़न है।

✦दावत के काम की बुनियाद✦
✦2 माह की तरतीब में बयान✦

(मौलाना उबैदुल्लाह बलियावी)

हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह बलियावी रह॰ ने 1988 ईसवीं के अमरीका और अफ़्रीका के जोड़ में फ़रमाया थाः

दावत के काम की बुनियाद

☆ फ़र्द जमाअत है, जलसा और इज्तिमाअ नहीं

☆ दिल है दिमाग़ नहीं

☆ क़दम है क़लम नहीं

☆ जान है माल नहीं

☆ तवाज़ेअ है अनानियत नहीं

☆ सुलह है जंग नहीं

☆ इत्तिहाद है इख़्तिलाफ़ नहीं

☆ मश्वरा है हुक्म नहीं

☆ अमर बिल माअरूफ़ है नही अनिल मुन्कर नहीं

☆ इस्तेतार है इश्तहार नहीं
☆ तबशीर है तन्फ़ीर नहीं
☆ अजमाल है तफ़सील नहीं
☆ उसूल है फ़रोग़ नहीं
☆ तरग़ीब है तन्बीह नहीं

हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह॰ इस काम को शोहरत से बचाना चाहते थे। दावत के काम में शोहरत दरकार नहीं, सलाहियत दरकार है। हज़रत फ़रमाते थे कि हमारा काम सौ साल आगे हो। शोहरत सौ साल पीछे हो।

दाअई की सिफ़ातः
सही यक़ीन, सही नियत, ज़िक्र, फ़िक्र, ख़ौफ़, शौक़

✦हयातुस्सहाबा✦

✦सुन्नत ✦ बिदअत ✦ जिहालत ✦ ग़फ़लत ✦ इल्म ✦ तब्लीग़ ✦ तालीम ✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

इल्म के साथ नक़ल व हरकत होगी। जिहालत ख़त्म हो जाएगी।

ज़िक्र को छोड़कर ग़फ़लत फैलेगी। सुन्नत को छोड़ कर बिद्अत फैलेगी।

जो शख़्स जिहालत की वजह से गुनाह करेगा, सज़ा पावेगा।

इस काम का मक़सद इल्म को आम करना और जिहालत को को ख़त्म करना है।

तब्लीग़ में हम प्रोग्राम बनाकर चल रहे हैं। जो यह कह रहे हैं कि हम इतनी देर तालीम करते हैं।

वक़्त का ताअय्युन है। वो तब्लीग़ नहीं तन्ज़ीम है।

उम्र दी सीखने केलिए, दीन सीखना फ़र्ज़ ऐन है।

दावत की नक़ल व हरकत पूरी दीन को सीखने के साथ है।

अल्लाह के रास्ते का ख़र्च। इंसानी ज़रूरियात पर ख़र्च करना। सिर्फ़ इस्लमा में ही नहीं यह तो ग़ैर भी ख़र्च करते हैं। ग़ैर तो मख़्लूक़ पर ख़र्च करेगा।

इस्लाम ज़िंदा हो जाए। इसलिए ख़र्च नहीं करेगा। इस्लाम को मिटाने के लिए ख़र्च करेगा। अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना।

इख़्लास के साथ सारी दुनिया का माल भी ख़र्च करते तो नक़ल व हरकत के एक क़दम के बराबर भी न कर सके। हम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं। अपनी ज़रूरियात को सामने रखकर सहाबा रज़ि आख़िरत को सामने राकर ख़र्च करते थे।

अमल से ज़्यादा फ़िक्र अमल की क़बूलियत की करो।

सुन्नत के बग़ैर अमल का न कोई एतबार है न कोई वज़न। रूह के बग़ैर सड़ता है। इख़्लास के बग़ैर आमाल सड़ते हैं।

क़बूलियत के लिए पहली शर्त है इख़्लास।

अगर इल्म से इल्म की और उलेमा की अज़मत पैदा नहीं हो रही है तो यह जिहालत है।

✦इख़्लास ✦ शिर्क✦ शिर्क की 2 शक्लें हैं ✦ एक बुतों का शिर्क ✦ एक अमल का शिर्क ✦ दोनों जहन्नम में ले जाएंगे✦

❁मौलाना मुहम्मद साअद❁

शिर्क की दो शक्लें हैंः (1) एक बुतों का शिर्क, (2) एक अमल का शिर्क

दोनों जहन्नम में ले जाएंगे। सहाबा अपने अमल को गुनाहों से ज़्यादा छिपाते थे। अपने अमल को मख़्लूक़ से छिपना ख़ुलूस है। बग़ैर ईमान के इख़्लास नहीं। ईमान में रिया दाख़िल होती है ईमान की कमज़ोरी से। जो अमल ज़ाहिर हो जाए, उसकी तारीफ़ से ख़ुश न हो। जो लोग इस काम को करके अपने ज़िम्मादों से हौसला अफ़ज़ाई चाहते हैं उकने आमाल का कोई एतबार नहीं। तारीफ़ की तलब उसमें होगी जो इख़्लास में कमज़ोर होगा। इसलिए अपनी नियतों को ख़ालिस रखो। अपने अमल को अल्लाह को देखते हुए करना।

जितना बड़ा काम है उतना बड़ा इख़्लास चाहिए। इख़्लास वालों का दर्जा बहुत ऊँचा है। मुख़्लिस होना सिद्दीक़ियत का दर्जा रखता है।

दीन की मेहनत से और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से दुनिया का इरादा न करे अगर दुनिया का इरादा किया तो अमल ज़ायाअ हो जाएगा। दीन की मेहनत मसाईल को हल करने के लिए की, तो अल्लाह निकाल कर फेंक देंगे।

दावत की बुनियाद अल्लाह का हुक्म पूरा करना हो।

जिस तरह इताअत के लिए ईमान शर्त है। जो शख़्स मुख़्लिस नहीं वो थक जाएगा। बग़ैर इताअत के मुजाहिद नहीं होता। नाक़िस मुजाहिदे से हिदायत नहीं मिलती। मुजाहिदा क़बूल इताअत के बग़ैर न होगा। एक होता है मुजाहिद, एक होता है मुलाज़िम, हम सब मुजाहिद हैं। जिसे अल्लाह के रास्ते से वांपसी पर निदामत और अफ़सोस न हो। तो अल्लाह उनसे मुक़ाम पर काम न लेंगे। चालीस दिन पूरे करना यह अल्लाह की मीक़ात है। मुजाहिदा नाक़िस होगा तो असरात भी नाक़िस होंगे।

✦हयातुस्सहाबा की किताब ✦ हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० के दिल में जो कुछ था वो मुन्तख़ब अहादीस और हयातुस्सहाबा में है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

हमारे हर एक साथी के पास हयातुस्सहाबा की किताब होनी चाहिए। चाहे वो तीन दिन भी न लगाए हो। हयातुस्सहाब की तालीम से अल्लाह के रास्ता की नक़ल व हरकत समझ में आएगी। तब्लीग़ का काम तो हो रहा है। सबाबा की मेहनत सामने नहीं। जो रास्ता को बंद करेगा उसको जिहाद का अजूर न मिलेगा। इस रास्ता का कोई अमल छोटा न समझा जाए। यह न सोचो कि काम मेरी हैसियत के मुताबिक़ है या नहीं। काम तक़सीम हो जाने पर यह देखो कि यह काम किस सहाबा ने किया है। हज़रत अबू बक्र रज़ि ने एक बूढ़ी औरत को तलाश किया और ख़िदमत करते रहे। ख़िदमत ज़रूरत के लिए [illegible] तरबियत के लिए है।

अल्लाह के रास्ते में चौकीदारी करना इबादत है। एक रात की चौकीदारी अपने घर में हज़ार दिन की इबादत से अफ़ज़ल है। जो आंख अल्लाह के रास्ते में पहरा देने में जागी हो उस पर जहन्नम की आग हराम है। इबादत हर उस अमल को कहते हैं जिस पर अल्लाह अजूर रखा है। दाअई का इस्तक़बाल नहीं हुआ करता। अगर चाहे तो क़ायम नहीं रह सकता।

हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना ज़करिया रह॰ कर इशार्द ए गिरामीः हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह॰ फ़रमाते थे कि दावात का काम करने वाले अहबाब से इसरार के साथ मेरी दरख़्वास्त है कि हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह॰ और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह॰ के मल्फ़ूज़ात व इर्शादात और दोनों हज़रात की सवानेह उम्रियां और मकातिब बहुत एहतिमाम से मुतालिआ में रखा करें। कि यह काम करने वालों के लिए बहुत क़ीमती मोती हैं। इन मल्फ़ूज़ात व इर्शादात और मकातीब में जो उसूल हैं। उन उसूलों की पाबंदी काम में इज़ाफ़ा तरक़्क़ी और बरकत का सबब है।

उस्ताद की ख़िदमत से इल्म में बरकत होती है। उस्ताद के अदब से इल्म में तरक़्क़ी होती है।

✦ख़िदमत ✦ ख़िदमत का मुक़ाम इबादत से अफ़ज़ल है✦

2 माह की तरतीब वालों में बयान

(सईद अहमद भोपाली)

ख़िदमत का मुक़ाम इबादत से अफ़ज़ल है बहुत ऊँचा है।

सहाबा के दौर के बाद अब तक कोई काम इस तरह से एक जगह से एक ही नहज पर एक ही मक़सद से एक ही ज़बान में पूरी दुनिया में दूसरा कोई नहीं। मक्का और मदीना वाले यह कह रहे हैं कि तब्लीग़ का काम सीखना है तो बंगला वाली मस्जिद में जाकर सीखो।

और अपने मुल्कों में जाकर करो। बंगला वाली मस्जिद की कोई ख़िदमत मामूली न समझो। हक़ीर न समझो। यह मस्जिद ऐसी है, जितनी नेकियां कमा ले हज को जाकर उतनी नेकियां नहीं कमा सकता। इस मस्जिद में शाबाशी नहीं मिलेगी। इख़्लास पैदा होगा। काम को सीख कर करना पड़ेगा। सबकी झेलनी पड़ेगी। सब की ख़िदमत करनी पड़ेगी। ख़िदमत तरबियत के लिए है, ज़रूरत के लिए नहीं।

जो ख़िदमत को तरबियत के लिए करेगा, नागवारियां बर्दाश्त करेगा। और न समझे तो अहसान समझेगा। तरबियत होती है नगवार चीज़ों से। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हर शख़्स के लिए वो चीज़ें लाएंगे जो उसकी तरबियत के लिए हैं।

हमारे यहां मिंबर से लेकर बैतुलख़ला साफ़ करने तक सारे काम बराबर हैं। किसी काम में ऊँच नीच नहीं। यहां किसी काम को अपनी हैसियत से कम न समझना।

यहां अल्लाह की तरफ़ से ख़िदमत ऐसी तक़सीम की जाती है जैसे डाक्टर गोलियां तक़सीम करते हैं। ख़िदमत मेहमान का हम पर अहसान है। कि मेहमानों की ख़िदमत करने का मौक़ा मिला। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि बूढ़ी औरत का पाख़ाना रोज़ाना साफ़ किया करते थे। चार माह लगाया हुआ,

निज़ामुद्दीन का अमला है।

इंसान के काम आने वाली चीज़ें:

ख़िदमत, इबादत, इताअत है।

✦नबियों की दावत की दलील मोअजज़ात थे✦ हमारी दावत की दलील नमाज़ है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

हुज़ूर ﷺ सफ़र में थे काम तक़सीम हो गए।

आप सल्ल जंगल से लकड़ियां खुद जमा कर के लाए।

इस काम की हर ख़िदमत बड़ी है। 2 माह का मक़सद यह था कि काम समझ कर अपने इलाक़े में करते। ख़िदमत ताबेइ है दावत के। 2 माह अलग शोअबा नहीं है। अगर आमाल दावत के बग़ैर ख़िदमत करोगे, यहां ख़राबियां पैदा होंगी। इसलिए यहां गश्त करो। कोई मक्का जाए। और नमाज़ न पढ़े।

यहां मरकज़ आए और गश्त न करे। यहां मस्जिद की जमाअत के अलावा दूसरी जमाअत की इजाज़त नहीं है। यहां मरकज़ के जूते चप्पल पहनने से एहतियात करें।

मोबाईल सबसे ज़्यादा फ़हाशी का ज़रिया है, सबसे बड़ी लायानि मोबाईल है। हर मुसव्विर जहन्नम में जाएगां जो बात यहां से अर्ज़ की जाए वो अमानत है। करने के लिए कही जाती है। अगर इसमें ख़यानत की गई तो इज्तिमाइयत बाक़ी नहीं रहेगी।

नबियों की दावत की दलील मोअजज़ात थे। हमारी दावत

की दलील नमाज़ है।

नबियों को अल्लाह मोअजज़ा देते थे, अपने ताअर्रुफ़ के लिए और नबी को सच्चा साबित करने के लिए सबसे बड़ी ग़लतफ़हमी यह है कि माल होगा तो दीन फैलेगा। दीन के लिए जान का मुतालिबा है माल का नहीं। माल तो ख़ुद दीन के तक़ाज़ा पर ख़र्च करेगा।

जो काम करने के लिए कह दिया जाए। उसके लिए आदमी तैयार हो जाए। उसके बारे में कोई शक न हो। यहां की बातों पर शक हुआ। तो सब चीज़ें मुतास्सिर होंगी।

मौलाना इल्यास रहि॰ के ज़माना में कोई घर से आता राय देता। तो आप फ़रमाते कि काम आगे बढ़ गया।

अल्लाह के रास्ते में एक सहाबी ने पहरा दिया था।

नबी सल्ल ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। एक नबी के अंदर चालीस जन्नती की ताक़त होती है।

और एक जन्नती के अंदर दुनिया के सौ पहलवानों की ताक़त होती है।

✦ईमानियात ✦ बयानात ✦ हालात ✦

मक्की जोड़ 2013 ईसवीं

(मौलाना मुहम्मद साअद)

☆ यह बात हमार दिल में आई कि मुल्कों के जो हालात ख़राब हो रहे हैं, वो हमारी वजह से है।

☆ हमारे बयानात से ईमानियात का तज़्किरा निकल गया।

हालांकि इस का तज़्किरा सबसे ज़्याा होना चाहिए। हमारा काम ही यही है कि अल्लाह को इतना बोला इतना बोला कि अल्लाह के ग़ैर का तास्सुर निकल जाए। जिस अमल में कमज़ोरी देखो उसकी दावत ज़्यादा दो।

☆ एक फ़िक्र पर मुज्तमा हो जाना यह इज्तिमाईयत है। काम के उसमल पर अपने अच्छे जज़्बे क़ुर्बान कर देना यह बड़ी क़ुर्बानी है।

☆ अब जो नये मुक़र्ररीन पैदा हो रहे हैं, उन्होंने काम को हज़रत मौलाना यूसुफ़ रह॰ से हटा दिया है।

☆ मौलाना यूसुफ़॰ फ़रमाते थे अगर तुमने उम्मत से अपने काम के लिए पैसा लिया तो हमारे का की नफ़रत उम्मत के दिल में पैदा होगी।

यह जो सहाबा के चंदे का तज़्किरा करते हैं वो मुश्रिकीन पर ख़र्च करने के लिए होता था। दीन के दूसरे कामों में गुंजाईश होगी। हमारे यहां सख़्त मना है।

☆ जो तब्लीग़ दूसरों के माल पर होगी, असर न होगी।

☆ आईंदा किसी भी इज्तिमाअ में किसी साथी का एक पैसा भी ख़र्च न हो। टोकन लगाओ।

☆ मेरा दिल चाहता है कि हमारी जमाअतें खाना खुद पकाएं। तो मुल्क के मुल्क फ़तह करके आएंगे।

☆ अब कोई चंदा न होगा। न साथी वाले न इलाक़े वाले।

☆ इतना टोकन लगाओ, न एक पैसा बचे न एक पैसा लगे।

☆ शब गुज़ारी में जरूरत ही नहीं खाना पकाने की। अगर कोई जमाअ मस्जिद के क़रीब भी हो तो न बुलाओ। मस्जिद की जमाअत आ जाए। अपने खाने और बिस्तर के साथ।

☆ अललाह के वास्ते मेरी दरख़्वास्त क़बूल कर लो। वर्ना हमारा मुजाहिदा नाक़िस होगा और मदऊ हो जाओगे।

☆ हम तो अल्लाह और बंदे के दरम्यान वास्ता हैं मामूली बात है यह।

✦इज्तिमाई काम ✦ इससे बड़ा कोई इज्तिमाई काम नहीं✦अंबिया के वाक़िआत का बयान करना हमारा मौज़ुअ है✦गश्तों में मुलाक़ातों में तौहीद का बयान करना हमारा मौज़ुअ है✦

❮मौलाना मुहम्मद साअद❯

हम हर ईमान वाले से अल्लाह का ताअर्रुफ़ चाहते हैं।

☆ दाअई उसे कहते हैं जो दीन के नुक़सान को बर्दाश्त न करे। इसलिए दावत तो एक बेचैनी का नाम है।

☆ हक़ बात हक़ तरीक़ा से, हक़ नियत से जब भी कही जाएगी, नुक़सानदह न होगी।

☆ हमारा मशग़ला ईमान की मेहनत। अगर तुम से सोते

में भी कोई पूछे। कि तुम क्या करते हो। तो जवाब दे कि मैं ईमान की मेहनत करता हूं।

☆ आमाल में कमी चलेगी। ईमान में कमी नहीं चलेगी।

☆ तर्क ए असबाब की दावत नहीं है। बल्कि असबाबों के यक़ीनों से निकलना है।

☆ जब हम बार बार कहेंगे कि अल्लाह से होता है तो ग़लत यक़ीन वालों को अल्लाह नाकाम करेंगे। और

☆ जब हम कहेंगे कि हुज़र सल्ल के तरीक़ों से होता है तो अल्लाह दूसरों के तरीक़ों को नाकाम करेंगे। (हाजी अब्दुल वहाब साहिब)

☆ इससे बड़ा कोई इज्तिमाई काम नहीं। और इस काम से ज़्यादा इख़्तलात लोगों से किसी और काम से नहीं है।

☆ अललाह की ज़ात से फ़ायदा उठाने के लिए। कायनात का यक़ीन निकालना ज़रूरी है।

☆ अंबिया की ग़ैबी मददों के वाक़िआत को बयान करना मक़सूद मतलूब है।

☆ अंबिया के वाक़िआत का बयान करना हमारा मौज़ुअ है।

☆ मौलाना यूसुफ़॰ सहाबा से और नबी से नीचे नहीं उतरते थे।

☆ हमारा मौज़ुअ है कि हम साहाबा और नबियों की मददों के वाक़िआत ख़ूब बयान करें।

☆ सहाबा के ग़ैबी मददों के वाक़िआत को ख़ूब बयान करें।

वो सहाबी थे और हम, यह अल्लाह के साथ बदगुमानी है। कि उनकी मदद हुई कि वो सहाबी थ। ऐसा नहीं गुमान करना चाहिए। जो सहाबा के साथ मदद हुई वही मदद इस उम्मत के साथ होगी।

✦सबसे बड़ा अमल दावत है✦इससे बड़ा कोई इज्तिमाई काम नहीं है✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

यह काम इंसानियत की आख़िरी उम्मीद है। (मौलाना अबूल हसन नदवी)

दावत का काम तस्ख़ीर ए आलम का नुस्ख़ा है। यह काम जगत सुधार रहा है।

मौलाना इल्यास रह० के यहां बहुत एहतिमाम था सुन्नतों का। कि सुन्नत के बग़ैर कोई विलायत नहीं।

दावत अहया ए सुन्नत के लिए है। बंदा को अल्लाह से क़रीब करने वाला सबसे बड़ा अमल "दावत" है।

दावत में हर शख़्स को दावत देना है।

काम, काम करने वालों के दरम्यान महदूद न हो जाए।

किसी तबक़े के ख़िलाफ़ बात न करें।

काम में किसी तबक़ा को मुख़ालिफ़ न समझें।

किसी तबक़ा की तरफ़ से रुकावट न समझी जाए।

एक जमाअत ने कहा यहां सलफ़ियत ग़ालिब है। इसलिए काम नहीं हो सकता।

मैंने कहा तुम्हें वापस आ जाना चाहिए।

मौलाना इल्यास रह॰ की मजलिस में एक शख़्स ने कह दिया, इत्तिफ़ाक़ से ऐसा हो गया।

मौलाना ने कहा यही तो देहरियत है। यही तो देहरियत है। तुमने यह क्यों नहीं कहा अल्लाह ने किया। तक़दीर से हुआ। बहुत समझने की बात है। काम करने वालों में।

उम्मत मख़्लूक़ से यकसूह पैदा हुई तो उम्मत का नुक़सान होगा।

क्यों कि बातिल की 24 घंटा दावत ह।इरतदाद उम्मत में आम है। इरतदाद आम है उम्मत में।

यह यक़ीन दिलाओ कि यह रास्ता इस्लाह के लिए यक़ीनी है।यह काम मुजद्दिद है। यह काम ख़ुद मसलेह है। हालात में काम न करना और काम छोड़ देना। इससे बड़े हालात का दावत देना है।

✦अंबिया और सहाबा के साथ अल्लाह की ग़ैबी मददें✦दावत असल है ✦ हम हर ईमान वाले से अल्लाह का ताअर्रुफ़ चाहते हैं✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

आमाल को मदार ईमान पर है। ईमान इख़्लास से आएगा। ईमान में रिया दाख़िल होता है। यक़ीन के ज़ोअफ़ से। दावत के काम का बुनियादी मक़सद यक़ीन सीखना।

अगर इस काम का कोई नाम रखता तो तहरीक ए ईमान रखता।

दावत असल है कि हम ईमान वाले से अल्लाह का ताअर्रुफ़ चाहते हैं।

कलिमे की दावत पर सब को उठाना है। यह कलिमा दावत में से निकलेगा। तो यक़ीन में से भी निकलेगा। क्योंकि दावत मेहनत के साथ है। मुजाहिदे से यक़ीन पैदा होगा। यक़ीन सीखने का हुक्म दिया है। (क़ुरआन)

यह कलिमा ज़िक्र में है। तज्किरों में नहीं है।

कि ज़िक्र करो अल्लाह के नाम का। और तज़्किरा करो उसकी सिफ़ात का।

इसलिए यह कलिमा इंफ़रादी ज़िक्र में रहा। तज़्किरों में नहीं रहा।

हयातुस्सहाबा में ज़िक्र की मजलिस को ईमान लिखा है।

सारे आलम की मसाजिद को ईमान की मजालिस से आबाद करना बुनियादी मक़सद है।

ईमान की मजलिस क़ायम करो। ईमान सीखो।

सारी नेकियों का मदार तौहीद पर है। सारी नेकियों का मदार तक़्वा पर है।

गश्तों में मुलाक़ातों का मौज़ुअ तौहीन बयान करना है।

अंबिया के साथ ग़ैबी नुसरतों को बयान करो। इससे दिलों में जाव पैदा होगा। इस यक़ीन के साथ बयान करो कि आज

भी अंबिया की तरह मदद हो सकती है। सहाबा के साथ ग़ैबी ताईदात को ख़ूब बयान करो।

जितना हराम ईमान वालों में आएगा, अल्लह के ग़ैर के तास्सुर की वजह से आएगा।

हलाल का हिसाब है, हराम पर पकड़ है।

✦मुन्तख़ब अहादीस ✦ मुन्तख़ब अहादीस का ख़ूब एहतिमाम करो✦ हर नंबर एक समुंद्र है ✦ मुन्तख़ब अहादीस यह हज़रत की अमानत है✦

मौलाना मुहम्मद साअद

असल आामल हैं असबाब का इंकार नहीं। असबाब तरक करने की दावत नहीं।

बल्कि आमाल को असबाब पर मक़दम किया जाए। अल्लाह चाहेंगे।

असबाब के बग़ैर काम बना देंगे। यह हमारा मौज़ुअ है।

अपनी करामतें और अपनी नुसरतें न बयान करो। ईमान को ईमान की अलामतों के साथ बयान करो।

जब नेकी ख़ुश करे और गुनाह ग़मगीन करे तो जान लो कि तुम मोमिन हो। मुन्तख़ब अहादीस का ख़ूब एहतिमाम करो। हर नंबर एक समुंद्र है। इन सिफ़ात की गहराई अहादीस के बग़ैर मालूम नही हो सकती।

जब उम्मत ईमान की अलामतों को हदसों से सुनेगी तो अहसास पैदा होगा।

हर मस्जिद में एक दिन फ़ज़ाईल। एक दिन मुन्तख़ब अहादीस की तालीम हो।

छः नंबर बुनियाद हैं। अगर बुनियाद कमज़ोर तो इमारत का क्या होगा।

ईमान को ईमान की अलामतों से सीखो।

दावत से इबादात में तरक्की होगी। अमल के क़ायम होने के लिए असबाब के यक़ीन का निकलना ज़रूरी है।

दावत असबाब के मुक़ाबले में है। असबाब इम्तिहान के लिए हैं।

आमाल को मक़दम करने पर मदद का वादा है। असबाब पर अल्लाह का कोई वादा नहीं। यह काम वली बनाने वाला है। इंफ़रादी आमाल के पहाड़ इज्तिमाई आमाल के ज़र्रों से भी छोटे हैं।

हमारा यह काम नबियों वाला है। यह रास्ता इस्लाह के लिए यक़ीनी है। यह यक़ीन दिलाओ।

यह दावत वाला काम बहुत आसान और बहुत सादा है।

यह दावत का काम वलीगर है, विलायत से ऊँचा कर देता है।

✦एतेकाफ़ ✦ पूरे साल ख़ूब काम करो ✦ और रमज़ान में एतेकाफ़ करो✦ अपनी मस्जिद में ✦ क़ुराअनी मकतब ✦ मस्जिद मस्जिद क़ुरआनी मकतब क़ायम करो✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

आज हम समझते हैं कि तब्लीग़ अलग है। इबादात अलग

है। पूरे साल ख़ूब काम करो। और रमज़ान में एतेकाफ़ करो। हां अपनी मस्जिद में।

मस्जिद की आबादी के लिए "एतेकाफ़" करो।

यह "आमाले-दावत" करते हुए एतेकाफ़ होगा। गश्त का कोई बदल नहीं।

जिस दिन हमारी क़ुर्बानियां ऊपर सतह तक पहुंच जाएंगी। अल्लाह दूसरों को हिदायत देंगे।

सहाबा कराम की तिलावत "दावत" के साथ थी इसलिए ग़ैर हिदायत पाते थे।

आज मुसलमान की "तिलावत" से खुद उसकी ज़ात को "हिदायत" से महरूमी है।

सबसे बड़ा ज़िक्र "नमाज़" है। क़ियाम ए सज्दा से अफ़ज़ल है, क़ियाम में अल्लाह का कलाम है।

हमारे काम का बुनियादी मक़सद "अहया ए सुन्नत" है। इबादात को इल्म पर लाओ, इल्म के बग़ैर कोई अमल क़बूल नहीं होगा। इल्म उसे कहते हैं जो हमारा रब हमसे चाहता है। फ़न जो मख़्लूक़ चाहती है। दावत इल्म के ज़िक्र के साथ है। यह काम सहाबा वाला है।

सहाबा वाली सिफ़ात से होगा। हयातुस्सहाबा को ख़ूब एहतिमाम से पढ़ा जाए। तरबियत के इल्म से यानि "हयातुस्सहाबा" से तरबियत होगी।

अल्लाह वाले इल्म से कामयाबी के यक़ीन की ख़ूब दावत दो। देखो

उम्मत को बचाओ "फ़नून" वाले यक़ीन से। इसीलिए अर्ज़ किया था कि उम्मत के लिए "क़ुरआनी मकातिब" का एहतिमाम करो। मुहल्ला के लोग जैसे "इमाम" और मोअज़्ज़िन' का इंतिज़ाम करते हैं, इसी तरह एक "क़ारी" क़ुरआन सही कराए। बच्चे फ़नून सीख कर आएं। सुबह या शाम में उनका क़ुरआन और "अक़ाईद" सही कराया जाए। हमें अल्लाह वाले इल्म की तरफ़ दावत देनी है। वर्ना दुनिया के "फ़नून" ग़ालिब आ जाएंगे। यक़ीन यह बनाना है कि पालने वाला अल्लाह है। ग़ैरों के फ़नून से पलने का यक़ीन ग़ालिब है। अल्लाह वाले इल्म से पलने का यक़ीन नहीं है। इसलिए अपने बच्चों को दीनी मदारिस में दाख़िल कराओ।

✦आमाल ए मसाजिद ✦ मसाजिद के आमाल ✦ हयातुस्सहाबा में सहाबा के मसाजिद के आमाल लिखे हैं✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

हयातुस्सहाबा में सहाबा के मसाजिद के आमाल लिखे हैं।

जो बात नहीं थी वही तो कीह जाएगी। 5 काम मस्जिद के काम की इब्तिदा हैं। मन्तही नहीं।

हम चाहते हैं कि 24 घंटा में हर वक़्त आने वाले को मस्जिद में तरबियत और इल्म व ईमान का हलक़ा मिले। यह हमारा "हदफ़" है। हर वक़्त संभालने वाले साथ रहें। हज़रत फ़रमाते थे इसके बग़ैर हमारे मुहल्ले "मदीना" की बस्ती के नमूना पर नहीं आ सकते।

क़यूदात से चीज़ फीकी पड़ जाती है। अढ़ाई घंटा उसी वक़्त दो। यह ज़रूरी नहीं। बल्कि जिस वक़्त वो दे सके। उस वक़्त लो। सारा बातिल बाज़ारों के रास्ता आता है। सारा हक़ मस्जिदों के रास्ता से आता है। उम्मत का जो तबक़ा दीन पर न लगे। घर में बातिल के आने का ज़रिया वही बनेगा। कोई अजनबी आदमी घर में उस वक़्त तक नहीं आ सकता जब तक कि उसका घर के किसी फ़र्द से ताल्लुक़ न हो।

आमाल ए मस्जिदः आमाल ए नबूवत हैंः आमाल ए नबूवत आमाल ए हिदायत हैं और आमाल ए तरबियत हैं।

हज़रात मौलाना ईनामुल हसन रह० (हज़रत जी) फ़रमाया करते थेः

मस्जिदवार जमाअत के अंदर उम्मत की हिदायत छिपी हुई है। और फ़रमाया करते थे कि इस सदी में इस मेहनत का रूए ज़मीन पर उम्मत के दरम्यान में मौजदू होना, अल्लाह का खुला ईनाम है।

सहाबाकराम का मशग़लाः

(1) तिलावत ए क़ुरआन, (2) मस्जिद को आबाद करना, (3) अल्लाह का ज़िक्र, (4) नेकी का हुक्म करना, (5) बुराई से रोकना।

सहाबाकराम की ज़िंदगी के मक़सदः

(1) दीन सीखना, (2) दीन पर अमल करना, (3) सारे आलम में दीन फैलाना।

आमाल पर चलने का नाम ईमान है

✦आमाल ए मसाजिद आमाल ए नबूवत हैं✦ आमाल ए नबूवत आमाल ए हिदायत हैं✦

﴾मौलाना मुहम्मद साअद﴿

शैतान से हिफ़ाज़त के तीन क़िले हैंः (1) मस्जिद, (2) ज़िक्र अल्लाह, (3) तड़प

(1) हर घर में कोई बेनमाज़ी न रहे, (2) हर घर में हर फ़र्द क़ुरआन पढ़ने वाला बन जाए, (3) हर शख़्स उर्दू सीखे, (4) हर मस्जिद में मकतब क़ायम हो।

हमारे दुश्मन पांच हैंः (1) नफ़्स, (2) शैतान, (3) बीवी, (4) बुरा माहौल, (5) बुरी आदतें।

आज उम्मत की परेशानी की दो वजह हैंः (1) अपनी बदअमली की वजह से है, (2) अल्लाह ने ईमान वालों के लिए जो कुछ रखा है आख़िरत में रखा है। इंसान के अंदर के आमाल पर चलने का नाम ईमान है। सबसे पहली चीज़ जो बनाने की है, वो ईमान है। सारे हालात असबाब के यक़ीन की बुनियाद पर बिगड़ रहे हैं। क़बर में इंसान अपने यक़ीन पर जवाब देगा। अपने इल्म पर जवाब नहीं देगा।

क़बर के तीन सवालः (1) ईमान, (2) आमाल, (3) मुआशरा

हम चीज़ों में उन्हें पकड़ेंगे। और अमलों में तुम्हें कामयाब करेंगे। हमने अपने अमलों को बिगाड़कर निज़ाम को मुख़ालिफ़ किया हुआ है। ईमान न बनाया, तो भेड़ियों के दिल लिए फिरेगा।

चीज़ें बनाओ कामयाबी हासिल करो। (ग़ैरों का यक़ीन) आमाल बनाओ आमाल में कामयाबी का यक़ीन। (ईमान वालों का यक़ीन) जब दीन की मेहनत हो रही थी तो जंगल के चरवाहे के दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ था, और अल्लाह ने भेड़िये की ज़बानी इमामुलांबिया की रिसालत की गवाही दिलवाई। और शुतरमुर्ग़ की ज़बानी इमामुलांबिया की रिसालत की गवाही दिलवाई। अल्लाह का ध्यान ही गुनाह से बचा सकता है। इंसान गुनाह करता है तो सोचता है कि कोई देख तो नहीं रहा है कोई सुन तो नहीं रहा है। इसीलिए तस्बीहात हैं।

मख़्लूक़ के ख़ौफ़ से गुनाह से रुक सकता है। गुनाह छोड़ नहीं सकता। मख़्लूक़ से डरना उस गुनाह किबरिया से बड़ा गुनाह है, मख़्लूक़ के डर से भागने वालों के लिए क़भी दरवाज़े नहीं खुलते।

✦इस्लाम की किताब✦

✦इस्लाम की किताब ख़ुद इंसान हैं✦

(मोलाना मुहम्मद साअद)

इस्लाम की किताब ख़ुद इंसान है। इस्लाम किताबों का नाम नहीं है। इस्लाम पहले मुसलमान में आया। इस्लाम पहले किताब में नहीं आया। सहाबा के दौर में ग़ैर इस्लाम का मुतालआ किताबों से नहीं किया करते थे। इस्लाम को मुसलमानों मे तलाश करते थे। वो तो अब शुरू किया कि इस्लाम मुसलमान में नज़र नहीं आता।

जव तक हम में अख़्लाक़ नहीं आएंगे, दूसरों में दीन नहीं

फैलेगा। इग़राज़ के लिए किसी से कोई सलूक करना अख़्लाक़ नहीं है। (मौलानन यूसुफ़ रह॰)

आमाल में कमी चलेगी। ईमान में कमी नहीं चलेगी।

जिस तरह अल्लाह की शान की कोई हद नहीं, उसी तरह अल्लाह के रिज़्क़ के दरवाज़ों की कोई हद नहीं।

जो सहाबा थे वो क़ुरआन थे। जो क़ुरआन था वो सहाबा थे।

दीन के बुनियादी उसूल तीन हैं: (1) तौहीद, (2) रिसालत, (3) आख़िरत

सारा इल्म क़बर के तीन सवाल: (1) ईमान, (2) आमाल, (3) मुआशरा

मुत्तक़ी बनना: (1) आंखों को नामहरम से बचाना, (2) ज़बान को ग़ीबत से बचाना।

क़ियाम के फ़ज़ाईल: (1) अल्लाह तआला काम को समझाएंगे, (2) अल्लाह तआला काम पर जमाएंगे।

हज़रत मौलाना इल्यास रह॰ ने फ़रमाया: यह क़ायदा कुल्लिया है कि हर आदमी को चैन उस चीज़ से मिलता है जिसकी उसे रग़बत और चाहत हो। जिसको चटाई पर बैठना, बोरिये पर सोना, सादा लिबास और सादा खाना ज़्यादा मरग़ूब हो, उसको उसी में ज़्यादा चैन और सुख मिलेगा।

पस जिन लोगों को रसूल अल्लाह ﷺ के इत्तिबाअ में सादा मुआशरत में चैन और सकून मिलने लगे उन पर अल्लाह

का बड़ा ईनाम है। जो बेहद सस्ती और आसान है, इस दौर में अल्लाह ने हज़रत मौलाना इल्यास रह॰ के दिल में दीन के मिटने का ग़म हद-दर्जा पैदा फ़रमा दिया था। हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह॰ बहुत मज़्तरिब और बेचैन रहते थे कि किस तरह जो तरीक़े नबी करीम सल्ल अल्लाह की तरफ़ से लेकर आए हैं वो सारे आलम में ज़िंदा हो जाएं।

✦दावत के आमाल ✦ दावत के सारे आमाल अपनी हिदायत के लिए हैं ✦ आमाल ए दावत, आमाल ए हिदायत व आमाल ए तरबियत हैं✦

(मौलाना मुहम्मद साअद)

ईमान बनाने की तरतीबः (2) दावत से ईमान बनेगा। (2) ईमान से आमाल बनेंगे, (3) आमाल से अख़्लाक़ बनेंगे, (4) अख़्लाक़ से मुआशरा बनेगा।

ईमान बनाने की मेहनतः (1) अल्लाह के रास्ते में निकल कर ईमान बनता है, (2) ढाई घंटा में ईमान बढ़ता है, (3) चार आमाल के ज़रिये ईमान बचता है।

ईमान आएगा ईमान की मेहनत सेः (1) दावत से ईमान बनेगा, (2) तालीम से ईमान पकेगा।

ईमान बनेगा दावत से और दावत के लिए क़ुर्बानी देनी पड़ेगी। पूरी ज़िंदगी सुन्नत और शरियत पर लाना है। इस पर लाने का यह रास्ता है। आमाले-मसाजद से अपने आपको जोड़ना है।

(1) तालीम करेंगे तो तौफ़ीक़ मिलेगी, (2) गश्त करेंगे तो हिदायत मिलेगी, (3) हिजरत करेंगे तो इस्लाम मिलेगा।

(1) दावत से ईमान बनेगा, (2) मुजाहिदे से ईमान पकेगा, (3) हुक़ुक़ उल इबाद से ईमान बचेगा।

दाअई को चार यक़ीन बनाना है: (1) अल्लाह को दीन सबसे ज़्यादा महबूब है, (2) दीन की मेहनत महबूब है, (3) दीन की मेहनत करने वाला महबूब है, (4) दाअई की मदद यक़ीनी है।हिजरत पिछले सारे गुनाहों को माफ़ कर देती है।

शैतान की सबसे ज़्यादा ताक़त दावत से रोकने पर लगती है। तीन मौक़ों पर शैतान अपनी पूरी कोशिश और ताक़त इस्तेमाल करता है।

(1) जब नामहरम मर्द और औरत एक जगह जमा हों।

(2) जब कोई अल्लाह का बंदा अल्लाह के रास्ते में निकलता है।

(3) मौत के वक़्त।

✦ शैतान एक तो अल्लाह के रास्ते में निकलने नहीं देता। ✦ बनने नहीं देता। ✦ अल्लाह के रास्ते में बन गया तो मुक़ाम पर जमने नहीं देता ✦ जो मुसल्ला जितना ख़ूबसूरत होगा नमाज़ उतनी कमज़ोर होगी ✦

✦ हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० फ़ज़ाईल व

कमालात का मजमुआ थे (मौलाना अबुल हसन नदवी)

✦ताअर्रुफ़ ✦ शख़्सियत व कमालात (मौलाना मुहम्मद मन्ज़ूर नौमानी)

हज़रत मौलाना अली मियां रह॰ ने ख़ूब लिखा है हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ के बारे में (हयातुस्सहबा) में हज़रत मौलाना यूसुफ़ रह॰ सहाबा का नमूना थे।

सहाबी गो नहीं लेकिन नमूना था सहाबी का। सहाबा की मेहनत उनके रग व पे में सराइयत कर गई थी। और उनकी सोच व फ़िक्र पर छा गई थी। चुनांचे आप ने अपनी ज़िंदगी का एक बड़ा हिस्सा सहाबा के हालात और उनकी हदीसों की तहक़ीक़ व जुस्तजू में गुज़ार दिया। आप फ़ज़ाईल व कमालात का मजमुआ थे।

हाफ़िज़, क़ारी, मुदर्रिस, मुहद्दिस, मुफ़स्सिर, फ़क़ीह, सूफ़ी, मुसन्निफ़, मुबल्लिग़ सब ही कुछ थे। लेकिन सबसे ज़्यादा जिस अमल पर आप ने जान खपाई और जो अमल आपकी ज़िंदगी का मक़सद बना। वो अल्लाह की तरफ़ दावत थी। गोया अल्लाह तआला ने यह तमाम इल्मी व अमली सलाहियतें उन्हें इसी लिए वदीअत की थीं।

☆ हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह॰ तहरीर फ़रमाते हैं: तक़रीर व बयानात में ईमान बिल ग़ैब की दावत और तासीर की वुसअत व क़ुव्वत में इस नाकारा ने इस दौर में मौलाना यूसुफ़ साहिब रह॰ का कोई मुक़ाबिल नहीं देखा।

☆ हज़रत मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नौमानी मौलाना मुहम्मद

यूसुफ़ रह॰ के बारे में तहरीर फ़रमाते हं कि मौलाना यूसुफ रह॰ की तक़रीरों में भी साफ़ महसूस होता था कि जो इल्म मौलाना इल्यास रह॰ को अता हुआ था वही इल्म मौलाना यूसुफ़ रह॰ को भी अता हुआ है। आपकी तक़गेरों को सय्यदना अब्दुल क़ादिर जिलानी क़द्दससरा के मवाईज़ से बड़ी क़रीबी मुशाबिहत थी।

हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह॰ बहुत मुज़तरिब और बेचैन रहते थे कि किस तरह जो तरीक़े नबी करीम सल्ल रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से लेकर आए हैं, वो सारे आलम में ज़िंदा हो जाएं। हज़रत मौलाना इल्यास रह॰ तालीम के साथ तरबियत पर बहुत ज़ोर देते थे। और फ़रमाते थे कि पढ़ने पढ़ाने का जो असल मक़सद है यानि (ख़िदमत ए दीन और दावत इललल्लाह) पढ़ने के बाद उसमें लगें।

हज़रत मौलाना इलयास रह॰ की मंशा और चाहत यह थी कि जो तुलेबा पढ़कर फ़ारिग़ हों ओर दीन की ख़िदमत ही में लगें और इल्म ए दीन के हुक़ूक़ अदा करें।

✦पाकीज़गी ✦ सादगी ✦ हया ✦ बेहयाई ✦ इसराफ़ ✦ ताईयिश✦

(मौलाना मुहम्मद यूसुफ़)

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह॰ ने एक मरतबा फ़रमायाः हुज़ुर सल्ल की मआशरत की बुनियाद पाकीज़ी, सादगी और हया पर है। और यहूद व नसारा की लाई हुई मआशरत की बुनियाद बेहयाई, इसराफ़ और ताइयिश पर है। दोस्तों हुज़ूर सल्ल की मआशरत भी क़यामत तक के लिए है। जैसे उनकी

नबूवत क़यामत तक के लिए है। जब तुम में नूर ए ईमान आएगा तो तुम्हें हुज़ूर ﷺ की मआशरत की एक एक चीज़ प्यारी लगेगी।

एक दफ़ा मौलाना यूसुफ़ रह॰ ने फ़रमायाः जब क़ुरआन पढ़ने या सुनने बैठो तो यों समझो कि ख़ुदा मुझसे मुख़ातिब है और जब हदीस पढ़ने या सुनने बैठो तो यों समझों क रसूल अल्लाह सलल मुझसे मुख़ातिब हैं।

फ़रमायाः अमल इख़्लास के बग़ैर मुर्दा ही तो है। और देखो घरों, बाज़ारो, दफ़तरों, यहां तक कि मदारिस व मसाजिद में भी ऐसे मुरदारों के ढेर लग रहे हैं। आप यहां तक फ़रमाते थे कि मुहक़्क़िक़ीन सूफ़िया ने कहा है कि सुन्नत के मुताबिक़ बैतुलख़ला यानि फ़राग़त व इस्तंजा में जो अनवारात हैं वो बाद में दीन की ख़िदमत के लिए पैदा होने वाले बड़े बड़े शोअबों में नहीं।

हुज़ूर ﷺ की सुन्नतों के मिटने का ग़म आपके सीने का मुस्तक़िल नासूर था।

फ़रमाते थेः जहां पर असबाब का सिलसिला ख़त्म होता है, वहां से अल्लाह की मदद शुरू होती है।

असबाब के होते हुए असबाब पर निगाह न जाए यह तो मुश्किल है मगर असबाब पर निगाह जाने से अल्लाह की मदद हट जाती है।

हम अल्लाह की मदद के क़ाबिल उस वक़्त होंगे। जब दुनिया में हमारा कोई सहारा न हो। हमारी नज़र बस अल्लाह के

ख़ज़ाने और उसकी मदद पर हो। और हम मुज़तर हों।

असबाब इम्तिहान के लिए और अहकामात इत्मिनान के लिए। (मौलाना मुहम्मद साअद)

असबाब का का मिल जाना भी इम्तिहान और असबाब से काम बन जाा भी इम्तिहान। असबाब पर निगाह रखकर अल्लाह से उम्मीद करना कुफ़्र का रास्ता हैं (मौलाना यूसुफ़ रह.) उस्ताद की ख़िदमत से इल्म में बरकत होती है।

उस्ताद की खुशनूदी कामयाबी का ज़ीना है। वालिदैन की ख़िदमत से माल व दौलत में बरकत होती है।

✦दावत का अमल✦ दावत का अमल अंबिया का ख़ास उल ख़ास अमल है✦

(मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह.)

☆ हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह. दावत के अमल को आमाल ए नबवी में ज़्यादा ताक़तवर और अंबिया का मक़सद ए हयात यक़ीन करते थे। और फ़रमाते थे कि यह अंबिया का ख़ास उल ख़ास अमल हैं अंबिया वाली मददें इसी अमल के साथ है। बशर्ते कि यह अमल हुज़ूर सल्ल के तरीक़ा पर हो। गश्त सारे अंबिया की मुश्तरका सुन्नत है।

गश्त का कोई बदल नहीं। एक दफ़ा पुरानों से फ़रमायाः इस काम को असल काम बनाओ और बक़िया कामों को इसकी सिलवटों में करा सीखो। और चाहते थे कि हर घर, हर मुहल्ला, हर शहर, हर मुल्क इस दावत का मैदान बने। अल्लाह का

अहसान है कि उनकी दावत पर लोगों ने लब्बैक कहा।

रब करीम मरहूम व मग़फ़ूर की वो सारी आरज़ूएं पूरी फ़रमाए जो उनके पाकीज़ा दिमाग़ में आईं।

☆हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह॰ को अल्लाह की ज़ात पर पूरा भरोसा था।

बार बार फ़रमाते थे कि अल्लाह से सब कुछ होता है। चीज़ों से कुछ नहीं होता। चीज़ें नफ़ा नुक़सान पहुंचाने में अल्लाह की मोहताज हैं। अल्लाह तआला नफ़ा नुक़सान पहुंचाने में किसी चीज़ के मोहताज नहीं।

फ़रमाते थे जब कुछ न था ख़ुदा ने सब कुछ बना दिया। और आख़िर में कुछ नहीं रहेगा। और फिर सब कुछ बनाएगा। वो पैदा करने में मां बाप का मोहताज नहीं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नौमानी रह॰ तहरीर फ़रमाते हैं इस आजिज़ ने पढ़ने के ज़माने में अल्लाह के फ़ज़्ल से मेहनत से पढ़ा। ज़ेहन व हाफ़िज़ा की नेअमत से भी अल्लाह ने महरूम नहीं रखा था। लिखना पढ़ना और मुतालिआ ही असल मश्ग़ला रहा। इसका नतीजा यह है कि अपने उस्ताद मौलाना सय्यद अनवर शाह कश्मीरी के बाद कभी किसी के इल्म से मरऊब व मुतास्सिर नहीं हो सका। लेकिन हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह॰ की ख़िदमत में जब हाज़िरी नसीब हुई तो महसूस हुआ कि उनको अल्लाह तआला की तरफ़ से एक इल्म अता हुआ है वो मदरसा और कुतुबख़ाना का इल्म नहीं है। अल्लाह तआला का ख़ास ताल्लुक़ बयकवक़्त बहुत से बंदों से होता है। लेकिन ख़ास उल ख़ास ताल्लुक़ बस किसी किसी के साथ ही होता है। हज़रत

मौलाना मुहम्मद इल्यास रह. के साथ अल्लाह तआला का ख़ास उल ख़ास ताल्लुक़ थ।

दावत की नक्ल व हरकत से कालेज के तुलैबा भी मदरसा के तुलैबा की तरह रहते हैं। (मौलाना मुहम्मद साअद)

✦मुक़ामी काम ✦ जिहाद ए असग़र से जिहाद अकबर की तरफ़✦अल्लाह के रास्ते से वापस आने वालों को हिदायत✦

मुक़ाम पर इन आमाल को करना है। इससे इस्तक़ामत पैदा होगी। (1) जिस माहौल को छोड़ा था। उसको हमेशा के लिए छोड़ना। (2) मुक़ामी मेहनत में लगे रहना। (3) अल्लाह से इस काम में मौत तक लगे रहने की तौफ़ीक़ मांगते रहना।

मुक़ाम पर पांच कामः 5 आमाल, 5 मेहनतें। मस्जिद की जमाअत की मेहनत। कोई नया काम नहीं करना है। जो काम जो आमाल निकल कर करते थे वही काम करने हैं। मश्वराः अपनी ज़ात से लेकर आलम के बसने वाले सारे इंसानों की फ़िक्र पिछली कारगुज़ारी और अगले 24 घंटे का काम। रोज़ाना की मुलाक़ातः रोज़ाना ढाई घंटा की तरतीब पर मुलाक़ातें। तालीमः दो तालीम। मस्जिद की तालीम, दूसरी घर की। घर की सारी ज़रूरतों को पूरा करते हैं। घर वालों को दीन सिखाना सबसे बड़ा हक़ है। गश्तः हफ़्ता के दो गश्त। गश्त में दो नमाज़ों का वक़्त फ़ारिग़ करना। हमारी शिरकत गश्त में बहत ज़रूरी है। सः रोज़ा जमाअतः हफ़्ता तय करके 72 घंटे। 15 वक़्तों की नमाज़ें। 3 अमूमी गश्त। रवानगी की बातः वापसी में

कारगुज़ारी जो अमूमी गश्त नहीं करेगा। किब्र नहीं टूटेगा। गश्त अपनी हिदायत के लिए है, इस में हमारी हिदायत छिपी हुई है। अमूमी बयान में मोहताज बन कर अपनी हिदायत की नियत से बैठना और सुनना।

✦मुक़ामी काम✦ अल्लाह के रास्ते से वापस आने वालों को हिदायत✦ मस्जिद को आबाद करने वालों से अल्लाह तआला के पांच वादे✦

मस्जिद को आबाद करने पर अल्लाह के पांच बड़े बड़े ईनाम का वादा हैः (1) उन पर रहमत करूंगा। (2) उनको राहत दूंगा। (3) अपनी रज़ा नसीब करूंगा। (4) पुलसिरात का रास्ता आसान कर दूंगा। (5) जन्नत में दाख़िल कर दूंगा। रोज़ी में बरकतः रोज़ी में तीन चीज़ें हैं। रोटी, कपड़ा, मकान। महबूबियत मिलेगीः अल्लाह तआला जब किसी बंदे से खुश होते हैं। मुहब्बत करते हैं तो जिब्राईल को हुक्म देते हैं। कि मैं फ़लां बंदे से मुहब्बत करता हूं। तुम सब भी उससे मुहब्बत करो। फिर जिब्राईल अलिहिस्सलाम आसमान के फ़रिश्तों को हुक्म देते हैं कि फ़लां बंदा अल्लाह का महबूब है तुम सब भी उससे मुहब्बत करो। इंसान से लेकर जानवर तक दिल से मुहब्बत करने लगते हैं। फिर शेर रहबरी करता है। चूहा अशर्फ़ियां लाकर देता है। समुंद्र रास्ता दे-देता है। हज़रत उमर रज़ि॰ की बात फ़िज़ा में चली। नील नदी पर चली। आग पर चली। ज़मीन पर चली। अल्लाह तआला अपने महबूब बंदों की दुआओं को क़बूल फ़रमाते हैं।

✦दीन के दाअई ✦ हिदायत के दरवाज़े ✦ रिज़्क़ के दरवाज़े ✦ मुर्दा को चार कांधे की ज़रूरत ✦

﴿हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह०﴾

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ रह० साहिब ने वादा फ़रमाया था अफ़्रीक़ा जाने के लिए, अफ़्रीक़ा ज़ंबिया के अहबाब आए थे हज़रत शेख़ के पास लोग आए थे, हज़रत मौलाना ईनामुल हसन साहिब भी थे, इस वादा को पूरा करने के लिए इस वादा पर हमको वहां भेज दिया। हमारे पास एक पादरी आया कहने लगा कि जो ईसाई बनता है तो हम उसका कुछ माहाना मुक़र्रर कर देते हैं, अगर हुस्नपरस्त होता है तो ख़ूबसूरत लड़कियों का इंतज़ाम कर देते हैं। अगर ओहदादार है तो उस एतेबार से उसके लिए ओहदा और वज़ाईफ़ का इंतज़ाम करते हैं। लेकिन तुम जब से आए हो लोग मुसलमान ज़्यादा हो रहे हैं और जो एक बार मुसलमान हो जाता है फिर ईसाइयत की तरफ़ नहीं लौटा। हम तो इतना ख़र्च करते हैं और तुम तो उल्टा जहां कोई मुसलमान हुआ कहते हो जाओ जमाअत में, उलटा ख़र्च कराते हो। हमने उस पादरी को बताया कि हुज़ूर पाक सल्ल जो तरीक़ा लेकर आए हैं उनके साथ ग़ैबी ताक़त है और जो पिछली आसमानी किताबें हैं उनकी रूह निकल चुकी मन्सूख़ हो चुकी। मुर्दा को चलाने के लिए चार कांधे लगाना पड़ते हैं। ज़िंदा को चलने में इसकी ज़रूरत नहीं। पैसों का कंधा, ओहदों का कंधा, औरतों को कंधा, बमबारी का कंधा। यही वजह है कि तुमको ईसाइयत के लिए बहुत ख़र्च करना पड़ता है और हमको ज़िंदा

चलाने के लिए किसी माद्दी चीज़ की हाजत नहीं होती।

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह० अल्लाह के रास्ते में निकलने वालों के लिए ये तीन दुआएं करते थेः

☆ ऐ अल्लाह इनकी नस्लों में क़यामत तक के लिए दीन के दाअई और शैदाई पैदा फ़रमा।

☆ ऐ अल्लाह इनकी नस्लों में क़यामत तक के लिए दीन के लिए हिदायत के दरवाज़े खोल दे।

☆ ऐ अल्लाह इन की नस्लों में क़यामत तक के लिए रिज़क़ के दरवाज़े खोल दे।

मुनाजात

अक़्बा में दिल लगा दे दुनिया से दिल हटा दे

मेरे करीम मालिक दावत हमें सिखा दे

तेरा ही बस सहारा तुझ को ही बस पुकारा

मेरे करीम मालिक हमने वतन भी छोड़ा

ईमां बना दे कामिल हमको बना दे आमिल

दर दर हमें फिरा दे अक़्बा में दिल लगा दे

मरकज़ हमारा गुलशन मरकज़ हमारा मस्कन

मरकज़ हमारा मदरसा मरकज़ हमें बुलाकर

नुसरत मेंतू जगह दे अक़्बा में दिल लगा दे

दुनिया से दिल हटा दे दावत हमें सिखा दे

मेरे नबी की इज़्ज़त मेरी नबी की सीरत

मेरे नबी की सूरत है प्यारी प्यारी मुझको

सारा को ज़रा दिखा दे अक़्बा में दिल लगा दे

दुनिया से दिल हटा दे दावत हमें सिखा दे